পবিত্র প্রণয়

कारा।

शिलाभीन्यः (माम) अर्थ

219 5

কলিকাতা

বিশাপুর প্রাকৃত ময়ে

শ্রীমপুরানাথ তর্করত্ন দার:

3150

-

मन ३३४२ माल

উপহার।

পারন পূজনীয় শ্রীষুক্ত বার্ জয়ক্তঞ মুখোপাধ্যায় মহাশায় শ্রীচরণেযু

ন্প্রশৃতি বিনতি নিবেদন মিদং
নামার বচিত প্রিয়দর্শন, ফিতবোধ ও নীতিগর্জ
নামক তিন খণ্ড পুস্তক দেখিয়া মহানায় সন্তোষ
া চাল করিয়াছিলেন বলিয়া, লামি প্রবল উৎসাহে
ক্রিন্দাবির প্রান্থ নামক কান্য লিখিতে প্রবৃত্ত
কর্তা এক্ষণে পানির প্রান্থ মুদ্রিত হইয়াছে। এই
নিয়ান লাডের জন্য উপস্থিত হইয়াছে। এই
নিয়ান লাডের জন্য উপস্থিত হইয়াছে। এই
নিয়ান লাডির সন্তোধসম্পাদনে শক্য ইউক ইহাই
নিয়ান জিলিয়াত কিন্তু ক্রতকার্য্য হইতে পারিবে,
ক্রিন্দাগা ব্যক্তির প্রস্থকারের উৎসাহ বিষদৃশ, এই
ব্যা স্থান করাইয়া মহাশ্যুকে অস্থবী করিবে,
লামি ইহার কিছুই জানিনা।

এই এন্থ সম্বন্ধে আমার বক্তব্য এই যে,কোন পুশুক পুল্যে লিখিয়া দেখি কেমন হয়, এই ইচ্ছার বলীভূত ভট্যা পবিত্র প্রথম পদ্যে লিখিয়াছি, নতুবা ক্র এইব এমত দুরভিলাধ করিনাই। যদি মহাশ্র ও মন্য পাঠকগণ ইহার প্রতি প্রাদ্ধ করেন তবে

পুনরায় কোন পুস্তক লিখিতে ইচ্ছা হইলে পদেয निधिट्ड (ठाँगे। कतिन, जाङ्ग मा उत्तेत जामात পদ্য লিখিবার উৎসাশ্হর আদি, মধ্য ও শেষ এই মাত্র।

মহাশত্ন ও পাতিক্পন খনে ফলিচত প্ৰাচেন এই এছের মর্নাক্ত কাম্পন্তিক, কিন্ত ভালা নতে; ওকটা ময়ুলক গণ্প অবলয়ন করিয়। কেবল প্রিক্র-थ्रने(यत मानमे दिश्वतिगाद छता रम रहते। कदा হটয়াছে তাহাই কাম্পনিক,

क्वांन अस्मृत हेशा या ग्लाहात मांद उरार नमार रुखाः यमम मञ्ज्ञ, ७३ कोटा-मिरिके लेना सकल मिह तम महज क्रियात छ। जिल्ला हेश एक आहित क অগ্ৰেংশ শুৰ্ফ বাহুল্য রূপে নিবেশিত করা হটরাছে, এবং এক রূপ ছন্দের পদ্য পুনঃ ২ পাত করিতে বিরক্তি জন্মিতে পারে এই নিমিতে প্রায় কোন ছন্দই দ্বিভীয় বার লিখিত হয় নাই। ইতি

मन ३२-२ माल लातिथ ५५८म आया छ।

নিবাস বর্দ্দানান্তঃপাতী অনুগতস্য শ্রীষ্ট্

পবিত্রপ্রগয়।

. ---------

মজ্লাদ্রণ।

ং শিব শহর । লছ মম প্রণতি।
হর রূপা-লোচনে শুনত বিনতি।
স্বজ্ঞ মুরাশয়, চিত্ত-শুদ্ধি-হান,
শক্তি কি হেন তুবি, প্রকাশি ভক্তি।
কিলোক-শরণ্য, আশুডোব-মহিম,
ভাই ভাকি সহসা এমতি ।

গুরো - গুক প্রার্থনা কিছু নাহি করিব।
আশা গাঁথি ভাষাফুলে গাথা বিরচিব।
উচ্চ বিষম্ভম, ভাষা-কুত্মমভক,
মূলে বসি ভালে ফুল, কেমনে ভুলিব।
নাও হে মহেশ, শক্তি বিশেষ হেন,
বাস্থামভ সেফুল লভিব।

ভাব-সেরিভ রস-মকরন্ধ স্ফুরিবে।
ক্রে ফুল চাহি ভারি গাঁধনি হাইবে।
ক্রীয় মধুকর, বিজ্ঞ হানামানে।
ভাল বিনা যাজে ভাতে, ভুষিতে নারিবে।
নতুবা অফিঞ্চন, বর নাচে পদতলে,
গ্রেচা। ইহা স্বেপে রাবিবে।।

এতার্ড।

श्रथम गर्भ।

জন্মির তীরে করে, উড়িব্যা উজ্জ্ব।
জনমাথ ক্ষেত্র, বার খ্যাতি নীলাচল।
জনমাথ ক্ষমন্ত্র, পাপ ক্ষর আশে।
অবিরঙ কড বাজি সেপা বায় আলে।
মাধ্রের দোলে, আরু বরিষার রপে।
লোকারণা হ'য়ে বায়, ঘরে ঘাটে পথে।।
বিশেষোৎস্য, হ'লে নর কলেবর।
বায়ু প্রবেশিন্ডে নারে, ভিঁড়ের ভিতর।।
জনিই সম্ব হয়, ভখন কেমন।
সৈ জানে ভা, সে জনতা, দেখেছে যে জন।।
সর্দ্ধির্যার, রিক্চিকা, হইয়া ছ্র্মার।
স্বাধায় নাশে যাজি হাজার হাজার।

পুণ্যধামে কেব হয় এমন ছুৰ্গতি ? জানে তত্ত্ব জগন্নাথ অপর নিয়তি।। বড় শোকাবহ কাও, ঘটে এক বার। প্রতিদিন মরে লোক, বিংশতি হাজার !! যেখানে সেখানে শব পচিতে লাগিল। मानाब, उम्हि, श्या, म्यांब इरेल ॥ (र पूर्भन्न कंत्ना, यन 'रक ज़ यादरना । ছদিনের পথেতেও, নাগিকা ভোলেমা।। একে সে তুর্গস্কা, ভার রোগ সংক্রোমক। र्गाहिक कि. ना भनात्म, खर्यभिष्ठे लांक ।! বাঁচিবার বিলক্ষণ, আশা যার আছে। চিকিৎসা, সুপ্রায়ভাবে, সেও নাহি বাঁচে।। निमार्य ठाउक यम, भाष ठार छल। मुन् घरत (कर करत, रन फल (म स्नन ॥ अअल्प्रेन (माद्धा (कह, मञ्जीत्रात क्या । " हाजिहा (यउना छन, मीरनत विनत् "।; चागड किल्या निया, ध'तत होतन कारतः প্রাণ আছে বল নাই, আহা, কে নিবারে ११ থঁটে বাঁখা অর্থ কারে।, চোরে লয়ে যার। वन, वाका, नाहि स्थू, (कल किन होता। বাড়া ভাভ কেলি কেহ, বহিদেশে যায় ৷ मिनमा अनाहे छ्छी. कितिए छाहां ॥

बिश्रमाल शिशा (म्बि, ७३ केंद्रि (कर) शालकि (मधि कि नादी कैं। हम, माहि (मह । (कामराजी है।एए, मृतका छ (वर्गत कति । बाल, "भाष ! काथ । शाल भारत परिवर्ध । বভাষণ বিৰণ ছণ্ডিনীয়ে কে আছে সংযাতে । ्**ख्रान लान** एका (दन, साखिरस जामारित) कल काल रामिएक, इ.सिएम (१९११ । १९११) ভাজে কেন ফেলিলে, এ নিদ কণ শেণক '. सङ भुगा किरिएस पुर्वाण उन्माहाय । जरे शुन्द (लंड भी क हा बातामा माथ ।" (श्रास्त्रीह स्थारिक, । क्रमें श्रीस (लंड स्राप्त पुष्त स्वर धरित साहब, छार्डिएक माण्या ।। भटन "शिएस । यथा शहर स्वाधि गांव मान्य । णिक घ'रश नकी मिया खना कार कार काटक :।" अरला अदला (यात, श्रमणात धन। দে যাবে রহিব আমি, হয় কি এমন গং थारे याव लिएइ रेनरम किवाद (अश्वा ; कारनमा कि विधि, धकशान पूरे कांग्र ग নিভান্ত না শোনে বিধি, গাঁর প্রিয়াগলে। নিভাং বিচ্ছেদানল, ডুবি অ**দ্ধি-জলে**।।" जनक जननी कैं। तन, शिष्या धूनात्र। निकटि कोरलत (इरल. कीय-मून) कात !

প্রথম সর্গ।

এবাপার দেখি জেমে, যা**ত্তি পলাই**ল। রথ টানে কেবা, শেষ এমন হ**ই**ল।।

থান দাবানল প্রায় সহামারী বেডা দাল, যোর দাল আর কি এমন ? বিষেশে বিপাৰ হ'লে কি বিজ্ঞে করে ভোলে: সেই জানে ভুগেছে যে জন !! ं ४९१ कृष्टि खादन, सिक्स्सिय केंग्स यन, समह (मिश्राम कि शकात । भगानुह मिला, भग जेन जेनकार कथा शरप्रे पृथि का वा मा कृष्टि- एवं भा अवादेश व व खहीरम व खिला. আরোগ্য বিলায়ে করা জনে ! रिशाइत प्राप्त करित, व्यानार्थ मनाथ करित भनासक मनदाह यदम ॥ ्यू व्यानत्त्र ऋष्ठेयन. यदक्त वटकत् धन, क छेटक विषय कार्या क्रिकि। भूते-भारक रम मगग्न, **डीवांत हो**नह वश् পার উপাকারে পেতে গ্রীন্ডি।।

*ইইার নাম ৬ ঠাকুরদাস রায়, বর্দ্ধমান জ্বেলার অন্তর্গত বাজোয়া প্রাম ইহার জন্মভূমি, ইনি গ্রন্থেটের নিম্ক বালের দেওয়ানী কার্যোপলকে এটকে অধস্থিতি করিতেন।

यथा मोधा यज्ञातिक, तम विश्वन मगरहरू শাহাম্য করেন কভজনে। উচিত ঔষধ পথ্য, বিভৱেন লয়ে ভথ্য. रु (यमन जानी (य कात्र(न।) এঁরি গুণে কভ লোক, না দিয়া কাহারে শোক. कीवन পाइहा (नर्थ (मन)। এঁরি দানশীলভার, ছংখ্: যাত্তি কত পায়. वाब, नक्ष. शार्थश विराधम ॥ সে সাধুর পরিচয়, এই যাতে জার নয়, **खादा नग्न, शक्ति (मांत्न ग्राथ)** যত দিন ছিল প্রাণ, এ প্রকারে মতিমান করেছেন পূরণ এ ত্রতে !! अक निन उक्कनीटङ,
क्रश्रीटङ,
क्रश्रीवाथ नविभिष्टः, कामिएंड वामिएंड देववाधीन। ताबुक खेरग-बारत, श्रीदिनिन वास वास्त्र. বালকের স্বর অভি ক্ষীণ। সারি সারি প'ড়ে শব, ভার মাঝে অসম্ভব, जीविएउत यत पकि पकि"! চমকি চঞ্চল মনে, কহিলেন ভৃত্যগণে. "अोत्ना प्रथा अद्विष्ठित्रा प्रथि"।। म्डांकि हूँ रेट बाह्द, (भंतान कुक्रत शाहर.

मर्भ खर क्षेत्र मात्र करत ।

ं ভृতের আড়ক এই, এর মাঝে যেতে নেই," নিষেধ করিল ভূত্য সবে ॥ নাভনিয়া দে বারণ, নিজে করি অবেষণ, দেখিলেন জীবিত বালক. প্রম-স্বার কায়, কানিভেছে উভরায়, পড়িতেছে চক্ষের পলক।। ्रां गार्मा कारन (नर्मा, अरमा गर्मार्थाहेत्रभा" ব'লে সকাভর আধন্তরে ৷ হাতাড়িছে ছুই ধার, আছে কে নিকটে ভার, কোখা আছে নাজানে অন্তরে॥ · आक्षापति कात्र (ছलে, **खोतरत्र फिराइट** फिल्स. पृङ्गिरिव पृङ्गात भवाति । কে করিল এ কুকাব. মুক্তক সে পড়ি বাজ্ঞ. हिल किल शोंन नाम याम ॥ इटल व'ल्ल इहल शंत्र, म'त्नल मा किलागांत्र, क्लियाद यस नाहि लग्न। मरति इ अननो जाउ, जाजिरे श'रत्र अनाथ. প'ড়ে আছে এই জ্ঞান হয়।। আহা, কিদশা ভোমার, কিছুই জাননা ভার, कान (शाल कशान गहिक।

नित्राज्ञेत्र कंक्वकारत, भव मह भवाकारत, নাজানিয়া আছহ জীবিতাঃ

शरित श्रेश ।

रिमान्य प्रश्चित नयु, विश्व छि। (छोत्र समय). নতুবা এরপে কেবা বাছে। वृश्विनाभ जगन्नाथ, जिन्दि । (कार्ट कार्र्ट, श्री हिलन (छ।व कार्ड !! ष्ठृत्व माध्याणी कड. किरिएड इंडलभः ভারাও কি করি মনুগ্রহ। করিয়াছে প্রক্ষিত, সিঁচে খেলে ৯ হয়ত ভোৱে বছ অনুকুল এছে "।; माधु वहे कथा बील. (धीड़ कति सद जात. ক্রোড ভুলি অভিল: বারায়। কেমে শিশু স্বস্ত হ'লো। নগারেকে হাট গোঞ এই বিবরণ সমূদায় 🕦 কৌথাকার কার ছেলে, কেইলা সন্থান পেলে, কেবল কহিল এক ভন ৷ 'বাসা ক'রে. যোর**ঘরে**, ছিল এক ভা**র**নরে, এবালক ভাছার নক্ষ ।। नंदर इंश्वाम, शिज्-नाम প্রভুরাম. गक्षिल क्रममी हेश्रा अत्र विश्विको इ'ला, द्यारान मला मला, वैंा विवाद ना (निथ धाकाद ॥ नजीशाल हिन्याल, छाई, छाजिया देशाय.

এর মাতা পিতা গেছে দেশে।

112

ध्यय मर्ग ।

আমিও দেখিনি পরে, মরিয়াছে মনে ক'রে, মেতরে ফেলিয়া দেয় শেষে'। " লাবং ইহার নাম, শিতা হয় প্রভুরাম. এই মাত্র পেয়ে পরিচয়। আনি ভাষ কটকেতে. দ্যা পূর্ণ ষভনেতে, পালে সাধু যেমন ভনয়।।

> उत्क म्हान्डित, शहर-श्रुक्ट, लार्र अञ्जू मिलगलि। বিশেষ ভাহার, কেহ নাহি আর. সৰে ভাল বাসে অভি॥ ক্ষেত্ৰা চাইয়া, দিন গুডাইয়া, বাভিতে লাগিলা দেমে। লিখিতে পডিতে, শিখিলা ক্রমেতে, অকাতর পরিশ্রমে॥ সাধুর যে মতি, শরতের প্রতি. দহা যায়া অভিশ্য। শরং তেমতি. প্রকাশি ভক্তি করে ভার বিনিময়।। कति छेणार्ड्सन, सूथी गत यन, করি এই অভিলাষ।

विषय कार्याङ, निर्माङ भद्राङ, नांध् भाग भगूक्षान ॥ গুণ থাকে যার, মান কি ভাগার. অৰৱে থাকিতে পাৱে / कूच्य कृषित्न, अब छ कृषित्न, অলি সমাদরে ভারে॥ कार्यत्र (किन्स्ल, ज्रेंश्ड नकरन, সাধর বাডিল কেই! ্র্যোগ এমন, করিন্ডে অর্জ্জন. অক্ম হয় কি কেছ গ र्थावन डेमिल, अख्वान हृष्टिल, व्यक्तित शथ (शाला। **चतु सुध बाहे. मंत्र** मनाहे, ভাবিয়া হয় বিভোলা ।। "মাতা পিডা কোথা, ভাষার বারকা, (कमिट्य कित्रूर्थ शान । কেন থাকি ছেখা, মাতা পিড়া যেখা थुष्कि लाह्न (मथा गांव ॥" করি এই স্থির, সর্থ অধীর, (इम कांत्ल (कान छन। इन इन द्वाध, श्रकानिया (नाक. ' व्याभिन माधु-मनम् ॥

প্রথ**ম সর্গ**ি

नविनद्य क्य. "यय छाट्गांक्य, দেখিতু সে ভাগ্যধন ৷ দয়া অবতার, স্থান সাধুড়ার, যে গুণগণ-আকর।। যেবিনা যাহার, নাহি উপনার. স্থান আন কোন জনে। (घाट्य यात यम) अहे मिक् मम, ভাঁরে হেরি এনয়নে।। विशव-वाधांत्र. मीटन महायह, বাচকের তুথ-রাতা। (महे स्वयानुव, ५ (इन श्रृक्य, 🕝 শরতে জীবনদাতা " ॥ কহিতে কহিতে, নয়ন-বারিতে, অভিথি আকুল হয় ! শস্তামিয়া ভায়, সাধু **ন্যু ভা**য়, জিজাসিলা পরিচয়।। ''পরিচয় দিতে, লাজ পাই চিভে, আমি অভি অভাজন। অনুভাণী তাই, বলিবানে চাই, यपूर्व পाश-वहमा। **এরে পার্পাচার,** জীবন আমার, প্রস্তুত হও এখনি।

शितिष्ठत्र मित्रा, विनाश लहेशा. যেতে চাও বে ভগনি ॥ রে পাপ জাবন! ভোমারি কারণ হয়েছি গহিত কারী। কেন খেয়ে লাজ, করেছি দে কাছ अक्रश करिएक नाजि। क्न वाहिलाइ, आधि अनुहास, ভন্যের শক্ত হ'য়ে । আর কেই নয় শরং ভনয় ভাষে ভাষি অনাজ্ঞান এতেক কৰিয়া, যেন আছাডিয়া, প'ডে যায় অভ্যাগভ। माध अंटि धंटि. योमन डेलेटि. নসান আদরি কত।। शुनः कामि बल. "आत वाष्ट्रा, काल, नेत्र होतान धन। (तथुक नशन, युष्डाक कोरन. त्रथी (शांक प्रशीयन। করেছি যে পাপ, ভাতে ভোর বাপ. वहेगात (याशा नहे। রথ: জন্ম-দাঁতা, এবে পিতা মাতা, नाहि ভोत्र माधु वहे ।।

গভারশোচনা, দিভেছে বেদনা, ভাই ভাবি ভাবি মনে। ভাতে বেঁচে থাকা, পাব ভোর দেখা, वृत्वि अहे (म कांत्रर्ग ।। আমাহ'তে ভোৱে, বিপদ বিখোৱে, পড়ি হ'লো ছুখ পেতে। একথা তোমার, নহে ভূলিবার, জাগিবেক অন্তরেভে। অধুকি ভোমার ? এসব আমার, জানিবে ভালের ফের। বর্কচি সম. আমার এ ভ্রম্ তোর দশা মিহিরের॥ ভাগোডে या हिन क्षेत्र किनन, ভূলে সব পরিভাপ। হ'য়েছ কেমন, দেখাও এখন. ৰাবা ব'লে ডাক বাপ "। এসব কথায়, সাধুর সভায়, পরিচয় প্রকাশিল। যিলাইল থাতা, শরতের পিতা, चरत शरत श्रातिम ॥ শরতেরে ডাকি. সাধু মাঝে থাকি, · হই **জ**নে যিলাইলা i

পিতা পুত্ৰ দোঁতে, বিচেডন মোহে, माधु भाधु बुबारेला॥ च्लभारतत धन. (भारत माधुकन. যথে পেয় করে ভার। যুখিত বেম্দ, হয় ভার মন, माधु-यन (म श्रंकांत्र । খাঁধার ছাড়িয়া, খালোকে বালিয়া (रयन मरखांच गिला। (म क्रम मरकारम, भररक्राद (कारम, क्षुश दुवि द्वा निल । मात्र मिण्डाहाल, मूर्वा मिणा लिल. পহস। পেলে রভনে। কত বুধ ভার, সে জ্বানে যে পাহ, প্রভুরাম গায় মনে ॥

পরে প্রকাশিল প্রভুশ্নম, "ঢাকার নিকটে মোর ধাম।
লোক মুখে তত্ত্ব শুনি, দিন রাজি নাহি গুনি,
এলাম ধাইরা অবিপ্রাম।
দেখির সাধুর সাধুতায়, শরতে পোলাম পুনরায়।
সাধুর কল্যাণ হোক, এবশং মুরুক লোক.
দীর্ঘ আয়ুং বিধি দিন তাঁয়"।
সাধু হবিনয়ী অভিশয়, কহিলা "কি বল মহাশয়?

কেবা **কিবা করে কা**র, বিধি বা করেন বার. অবশাই তার তাই হয়।

শরতের ভাগ্যে যাহা ছিল, বিধির বিধানে ভা ঘটিল। আমি উপলক্ষ ভায়, ধন্য-বাদ বিধাভায়,

হারা-ধন তাঁ হোতে মিলিল।" সাধু প্রভু উভয়ে বিশুর, শিফাচার হ'লে ভার পর। অনেকে আলাপ করে, প্রভু হবিত অন্তরে,

প্রভুর বাজিল সমাদর।
শিক্ষজনে করে যেপ্রকার, পিভাব সহিত ব্যবহার।
শরং ডেমনি ধারা, তুই করে ভক্তি হারা.

সাজাকারী সদাই শিকার॥ এই রূপে কিছুকালাতীত, প্রভুরাম হ'য়ে হরবিড়। সাধু প্রতি প্রিয়তাবে, কহিল বড় উল্লাযে,

" আজি এক ইচ্ছা উপস্থিত।
উপাৰ্চ্ছনে হ'ষেছে সক্ষম, আঠার বংসর বয়ঃক্রম।
এসময় শরভেম, উপস্থুক্ত বিবাহের,

আজ্ঞা হ'লে করি উপক্রম , ।

ইক্টবাকো হান্ট সাধুবর, হাঁসি-মুখে করিলা উত্তর।

"শরতের বিভা দেই, আমারো বাসনা এই,

কন্যা কোষা ও যে দেশান্তর"।

প্রভুরাম করে পুনরার, "দেশ হ'তে আনাব কন্যার।
করেছি সর্ব স্থচনা, আছে কন্যা স্থলক্ষণা,

হেন কন্যা খুজে মেলা দায়।
পিতা নাই মাতা বর্তমান, অন্নবস্তা নাহি সংস্থান।
ুভাতে কি ক্ষতি আমার, কন্যাই আনিব ভার,

ভারেত দিবনা কন্যা দান ?
বিন-কন্যা গরিবের ছেলে, এবিবাহে সুখ নাহি মেলেঃ
বিবাহ সমান ঘরে, সুখী হয় পরস্থারে,

চাহিনা রাজার কন্যা পেলে "॥

সাধু শুনি হইলা সম্ভ, কহিলা "বিলয় আর কত।

পাথেয় পাঠায়ে দাও, ছরিতে ভারে আনাও,

এই লও মুক্তা ছুইশত "।

পাঁতি লিখি পাথেয় পহিত, প্রভুৱাম পাঠান ভ্রিত : হুই মাস গত হয়, কন্যার হ'লো উদয়,

বাসা দিলা অতি সন্নিহিত। বিবাহে বিলম্ব নাহি আর, প্রভুরামে সব কার্য্য-ভার। বত টাকা হবে ব্যর, জার মত সমুদয়,

সাধু আনি দিলা হাতে ভার ।
শরতের বিবাহ ব্যাপার, নগরেতে হইলে প্রচার।

যে ভাহারে ভাল বালে, দেই আনন্দেতে ভালে,

শরতের আমোদ অপার । প্রথম বিবাহ হচনায়, কড ভাব মনে আদে যায়। শরৎ সেভাবে ভোর, স্থানের বাঁনিল যোর, আমোদে রোমাঞ্চ সদা গায়। ন্ধাৰা মরি, ভালবাসী-গুণের কি গুণ!' আরো কত গুণ আছে, সবাই ভাষার পাছে,

সে যেথা তথার সবে ভূচন।
ভেবে দেখ, ভালবাসা থাকে যার প্রতি।
ভারে অনাদর করি, কোনুগুণে পারে ধরি.

ফিরাইতে অনা-প্রতি মতি? জালবাসা কেমন, উপায়া নাহি ভারে। ন্যা, ভক্তি, আদি যত, নহে কেহ ভারে মড,

ভবে কি পাইৰ উপমার-/

মনের সহিত, ভালবাদে, হে কাহ[†]ে ।

मिडे नृत्य ति कि क्षेत्री. किंखू ग्रंथाल केंद्री

भित्र (**अस्म त्याहेरक ना**त्र ।।

ভালবাসা যারপ্রতি, সেও ভা নাজানে ৷ ভার মশ্ব সে কি পায়, প'ড়ে পাওয়া ভাল খায়.

মনের মন কি জানে প্রাণে।? ভালবাণ্য চাহেনা, কাহারো বিনিময়। ভাহার স্বভাব হেন, যে হোক সে হোক কেন,

ভায় চায় মন বারে লয় ৷
ভালবাদা এমন, না হ'লে একি হয় ৷
শরতের বিভা এলো, নিদাব চলিয়া গোল,

বরষার হইল উদয় ॥ বুঝিলাম শরতের, সে বিপদ কালে ৷ বিধি ভালবেদেছিল, ভাই সাধু মিলাইল,

নতুবা ছাড়িত নাকি কালে ?

বিধাতার ভালবানা, তাই এত ঘটে।

কৈই শিশু যুবা হয়, বিদ্যা-ধন-মান্যালয়,

পরিণয় এসেছে নিকটে । বিবাহের আনোদেতে, লাগে ছলুস্থুল । জীম্মেতে হবেনঃ হুধ, বিভি ভাবি সেই চুধ, ক্রিলা বর্ষার অনুক্ল ॥

ধন্য ভালবাসা, কিবা প্রভাব ভোমার। পিতা মাডা নতে ভুল, বিধি কেন অনুকূল! কার গুণে হয় এ প্রকার ?

বিধির অভ্যায় বর্গা, ভুবনে আদিয়া। লাগাইল ধূম ধাম. নিদাঘ কেবল নাম.

রাথিয়া, লুকার পলাইয়া। এল বরধার সেনা জলদের জাল। প্রথমে খেরিল ধরা, ভালু, ভেজ ঢাকি ছ্রা

গুপু হয় দেখি গোলমাল।
গভীর গরজে মেঘ, চমকে চপলা।
যেব মেঘ দিতে দও, গ্রীমে করি খণ্ড খণ্ড।

কাটি পাড়ে তারি এ উজলা। বর্ষা যেন চক্ষে দেখি, তপ্ত দিগ-দশ। শুক্ত রক্ষ, গুলাু, লতা, মৃত তৃণ বথাতথা। कक्णांच इहेल महम ॥

বারি বর্ষে, হর্ষে পূর্ব, সজাব-মণ্ডল। ধাল ডোবা ভরে এল, উদ্ভিদ বাঁচিয়া গেল,

ज्थ-धरा इहेल भोजन।।

কিছু পূৰ্বে আই ঢাই, ক'ৱেছিল প্ৰাণ

এরি মধ্যে বদলিল, তপ্ত অক শিহরিল,

চমৎকার বিধির বিধান।।

कत्न शूर्व मार्ठ, चाउँ, उक् उक् करतः ।

श्वानि फिरक जन यात्र, स्मर्का शथ रहना मात्र,

যাভায়াভ ৰুদ্ধ পথ ধ'রে।।

কত স্থান জলে ডুবে, হ'লো একাকার।

এবাড়ী ওবাড়ী যেন. ভিন্ন ভিন্ন দ্বীপ হেন,

ভরি বিনা গতি নাহি কার।।

পূर्व-नम-नमी-जल, चित्राम धांत्र।

বিলম্ব সহেনা তায়, পাছে দেশ ছুবে যায়-

ব্যস্ত সদা প্রকৃতি-স্বাজ্ঞায়।।

জল-বেগে কত রঙ্গ, তরঙ্গ সহিত।

মুরিছে নাচিছে যেন, প্রমে উগারিছে ফেন,

ভারুকে তা দেখে বিমোহিত।।

ক্যকেরা বড় ব্যস্ত, নাছি অবসর।

क्ट हक नः त्रांभारन, क्ट् सानि नक्षांनान,

(कर चानि वाँशिष्ठ मधुत्र।

আরানে প্রহৃতি-শোডা, দেখে ভাগ্যবান। কেহ আরামের ঘরে, গোঁজা দিয়া রক্ষা করে,

घंत वात काशाद्या नमान ॥

আড়া পাতি কেহবা, উজানে যাছ গরে। ছাডার বঁচায়ে মাধা, গাইয়া ছংখের গাঁথা।

কেহবা চলেছে স্থানান্ত্রে॥

কাদা পেচ পেচ করে, সব পথে প্রার। নিজ কিছা ভাডাটিয়া, গাড়া পাল্কী আরোহিয়া,

ধনীগণ সুখেতে বেড়াএ ৷

শ্বন্ধবন্ধ কটে করে, নিদ্ধন যেজন। গাড়ী পালকী কোথা গায়, চরণ-বাহনে বায়,

কালাপায়, ভিজায়ে বসন।
দাস, দাসী, আব, নীচ কর্মচারী যভ।
ঘোডা গোক যেব প্রায়, খেটে মহে বরবায়

ৰনাপণ্ড নভে এই মত। গুহা, গাওঁ, লভাকুঞ্জ, রক্ষের ধ্কাটর। যে যেখা ছবিধা পায়, বনাপণ্ড বর্ষার।

সুখে রয় নয়ত নফর ॥
নয় নার বর্ষে বারি, রাজে নিরবধি।
পাকাবাড়ী নাহি ছংখ, দম্পতীর বড় সুখ,

" शोडू है।न" नाहि शास्त्र यति ॥ कौंठा घत छाउ कृता, विद्याना दशासा

একোন ওকোন করে, গ্রেমীর হাতে গ'রে, उद स्थी युवकानि र'ला। এक मिन महर, खाविया छेरमव । यान करू सूच शाहर मिया खरमान शाहर চেয়ে দেখে বরষা-বিভব ॥ अकाम घिरद्राष्ट्र, खरत छरत कानिश्रमी। বলাকা উজিছে কাছে, গিলিশিয়ে শিখী নাচে शामा इक्ता मिनामिनी !! প্রকৃতির দে শোভা, দেখিতে কে নাচার खनिएक धमकारेल, खतु वाग्नु भथ फिल, গুপ্ত ভার উকি মারে ভার। শরৎ বুঝিল ভাহে, প্রকৃতি রাগিল। বাভিল রাগ সে রাগে, ধরণী ভার সোহাগে-ইনি শিরে পীডাম্বর দিল।। এত শোভা আশা পুরি, দেখা না ছইল। वांखडादव कामित्रनी, मदन कति (मीमामिनी, पिथिए पिथिए मुकारेन ॥ माज माज जानू अ, रहेन असर्वित । महावदा अञ्चकात, याउक मिननी जात. (महे कार्य हरेन मुखिक ॥ ভাবে বুঝাগেল, প্রকৃতির পানে চেয়ে। नारी र'ला दिवयान, मलिमो कतिल मान,

পবিত্র প্রথম ।

প্ৰকৃতি লুকাল লাজ পেয়ে।।
হাতে নোতে ধৰা পতি, লম্পট যেমন।
লাজে মুখ লুকাইয়া, দূৰে যায় পলাইয়া।
ভাক আজি কৰিল তেমন।।

ভারু আজি করিল জেমন।।
ক্রমেন্ডে উদিল শশী, কেমিদী ছুটিল।।
শাদাবাড়ী বরবায় ধোয়া মাজা শাধ এনিঃ

ভায় যেন স্পটিক ফটিল !! চক্চকে লভা, পান্তা, ভাতিল জ্যোৎস্বায় । যেখানে দেখানে জল, চাঁদ করে ঝল মল,

ধেন রড়ে খচিল ধরায়।।

সানাইয়ের পুঁ, যেন, ঝিঁ ঝিঁ করে রই।

মঙ্কের বাজ খাই, মশার ভন্তনাই,

শুনি মুমাইল লোক সব।।

भनी निला অবসর প্রকাশিলা দিবাকর,
সাধুর বাসার লোকে, ভাজিল প্রয়ার ।
সকলে দেখিল পরে, শরৎ বারুর ঘরে,
লুটেছে সর্বান্থ কে বা ভালি মঞ্চুবার !।
" হেন কর্ম কে করিল, প্রভুরাম ঘরে ছিল,
কোথা গোল, সেই কি, করিল এই কার?
নাউর বিষম কাপ, কপটে হইরা বাপ,
শোহে এই ক'রে গোল, না ভাবিল লাজ !!

माधिए जार्गन हेके, मार्ठ कर कर विके. ভাহা না বুঝিয়া হুটে করিয়া বিশাস। সবিশেষ পরিচয়, না জানি দিলে আতায়, ভাষার যে পরিণাম, হইল প্রকাশ।। পরম-সেভাগ্য মানি, কাছারো প্রাণের হানি. হয় নাই অসম্ভব, কি ছিল তাহার :" সবে তপ্ত অবুভাগে, শহতের জাল বাপে. চোর জানি অম্বেহণ, করে অমিবার ॥ নহে সেত কাঁচা চোর, না হইতে নিশিভোর, পলায়েছে দে, বিনা, কে, জানে দে সন্ধানে। ना পाइल व्यवस्था भारत काह वाशमन. শরতের ভাবি-খঞা, আছে যেই স্থানে।! সবে বিচারিল মনে, "এই জানে সেই জানে. **পोড़ाभोड़ी कतिल, कहिर्य भित्रहत्तु ॥**" যা ভাবিল ভাহা নয়, সে ওনে এ পরিচর, খাকাশ ২ইতে যেন, নিপতিত হয়।। कॅलिया करत श्रकाम, " आभारता स मर्समान. যা কিছু আমার ছিল, সব ভারি হাও। গহনা গড়াবে ব'লে, কালি ভুলাইরা ছলে, একরাশ রূপা, সোনা, ইকল আত্মসাহ !!" শে নারীর সে কথায়, বিশ্বাস না করি ভায়, नर्छत निक्ती छादि, नाबुत चक्करन ।

ধমকি শাসন করে, মাগী প্রকাশিল পরে, আপন নিগুঢ় কথা, বাছিল গোপনে।। "আমি নাতি চিনি ভারে: এই জানি সে আমারে. डेल पड़ी क'तिहिल. जुलाश क्लेशल। বেডাইত দাঁত চেলে. নারুষ আমারি খেয়ে. আজ কাল শরতের, বাপ হয় ছলে।। মোর কন্যা ৩ থেমন, তার পূত্র সে ভেমন, विवाह निकाह ह'ला लांड हार (वम । এই লোভে আনি মোরে, আপন পুটলি ভ'রে, আমারেও কাকি বিয়া পলাইল শেষ ॥" धक्था कहिशा नाडी, **Бउट**न नहि नवाडि. काँ जिल अपनक छाहे श्रति वांग श्राप्त । চোর কি চাতুরা জানে, যে শুনে আশ্রেষ্য যানে, বিবরণ হ'লো রাউ. পাড়ায় পাড়ায় ।৷ दूः भ करत विकारला. नर्वा श्रांतवाम हरला. जारमाम कंत्ररत नमा. भंतरक महेशा। বেশ্যা দেখাইয়া কয়. " শরতের ফশ্রা হয়. " "শরতের পিতা" বলে, চোর দেখাইয়া।। লোকে সংকতিকে কয়, শরতের লজ্জা হয়, ক্ৰে বভ ছণা **জ**ন্মে, সচিন্তিত মনে ! इंगा क'रत स्थ शाल, बरनाक रेवताचा अल, কটক ত্যজিতে ইচ্ছা, হইল একণে ।।

"পরিচয় জানা নাই, চোরে পিতা হয় ভাই, জামাতা করিতে চায়, কুলটা যে নারী। চোৱে নিল অর্থ হ'রে, লোকে উপহাস করে, लाटक दुः एवं यर्चवाथा, महिएक नाणाति ॥ **अश्मादि (र क्थ रहे. जामीत स्वांत नहे.** তবে কেন সহি এত, অসুখের ভার? প্রাণতাজি যাক দায়, ত্যজিলে পাবনা তায়, এস্থান ভাজিয়া যাই, উচিত আঘার ! এস্থান ত্যজিয়া গিয়া, নানা স্থান অংশ্বিয়া, পেলেও পেতেও পারি, বাসের সন্ধান ! মাতা পিতা উভয়ের, যদি কভু পাই টের, এজম্মের সাধ পুরি, সুখী হবে প্রাণ॥" এই সব চিন্তা করি, সাধু-সল্পরিহরি, महर हिनना र'रम्, छेखब्रास्त्रिय । চলিলা ঔদাস্য ভরে, মন কিন্তু হত্ করে, क्षांत्र कलिक जादि, जेशनिन प्रथ ॥

বধার নিবাস যার, তথা হ'তে যেতে কার। হৃদয় ভেদিয়া, নেত্র-পথ দিয়া, বহেনা ছ:খের থার।?

শরৎ ব্যাকুল হ'রে, কটকেরে সবিনয়ে। ্র প্রাণতি করিল, কডই কাঁছিল,

পবিত্রপ্রধার।

ু অশু ঝরে বুক ব'রে।।
নিবারিয়া নেতা নীর, মনে মনে কছে ধীর ।
"কেমন করিয়া, ধৈরজ ধরিয়া,
দেশাস্থারে হব স্থির।!

দেশাস্তরে হব স্থির ৷?
নিভাস্ত শৈশবে আসি, হয়েছি কটক-বাসী ৷
তবেকি ছাডিভ, এযদি বুঝিভ,
আমি এরে ভালবাসি ৷?

নগর স্থাবর হয়, শরৎ স্থাবর নয়। সে যে ভালবেসে, ভ্যাজি যায় শেখে,

अपूर्य नार्धिक मरा ।?

যাবং জীবিত রবে, সদাই সারণ হবে। কটকের শোভা, অভি মনোলোভা,

ভূলিব মরিব যবৈ।।
বারানদী যে প্রকার, কটকের ছুই ধার। *
পাণরেভে বাঁধা, দেখে লাগে ধাঁদা,

কোথায় এমন আর।?

কিবা ছুর্গ পুরাতন, গাড রাজার লাঞ্চন। *

মহরমে মেলা, দ্বীপালীর খেলা, †

মনে রবে অনুক্রণ।।

कार्छ-बूड़ी नही-कूल, भार्ड डेशवन-कूल।

এই ছুইনিই কটিকের মধ্যে উত্তম দ্রেফীব্য ।
 কটকের সকল উৎসবের মধ্যে এই ছুই ট্রুৎসব প্রাধান।

द्रथम मर्ग ।

माधूद मनन, माधूद छ्दन, **७। कि कजू রব जूरल ।?** वनीतित कोर-माजा, याँदि कानि शिकामाजा ! ভার জীচরণ, পুজিবেক মন, গাব তাঁর গুণ-গাখা।। সাধু বিনা আপনার হ'তে পারে কে আমার। कौरनानिभ, श्रेष (त्रवि यपि, কিছু শোধ হয় ভার। কর্ত্রব্য অন্যথা করি, ক্লভজ্ঞতা পরিহরি। সাধুরে ছাড়িয়া, যাব পলাইয়া ?" আদে ফিরি ইহা শরে !! ই ভক্ত ভঃ বিচরণে, পুনঃরুক্তি মনে মনে। यत्न द्याहेशा, नशन यूनिशा, "वरल याहे अहेकरन ॥" **চ**রণ চলিরা যার, পাছু পানে মন খার। নাড়ী মুঁচডিয়া, মায়ায় মোহিয়া, পথ আগলিল প্রায় ॥ "এ মারা কিসে বা কাটে, এখনি মরম কাটে। ना पिथि माधुरत, दौष्ठियमा मृद्य," ভাবিতে দে গতি ঘাটে।। इलिए यन मालाय, नवीन महानी थाय ! শরং হজন, ভাবি কিছুকণ,

*

প'ড়ে পায় সত্নপায়।। "পুৰুষে বিদেশে যেডে, লোহ পেলে অন্তরেডে বলে কাপুৰুষ, সেই কাপুৰুষ,

হইব কি এ মোহেতে !?"

था एक विष्ठांत भारत, यन वासि स्थान क'रत । पिटा निकामन, साबीरत स्वयन,

রাজ-দূতে বাঁধে ধ'রে ॥

শ্বেছ-পূর্ণ দয়াবান, সাধু দেব-মৃর্ভিমান । পুনঃ মনে এল, গতি বেধে গোল,

উদিল ভক্তি জ্ঞান।।

" ভক্তি করিয়া তাঁয়, মাগিয়া লব বিদায়। চরণে বন্দিয়া, স্বাত্তা করিয়া,

नां (भेटल क्टर खनांत्र।।"

এই স্থির করি মনে, চলে সাধু সন্তাষণে ।
পদ না চলিল, স্থায় বলিল,

" যেওনা তার সদনে ॥"

"সাধু কি ছাড়িয়া দিবে? ক্ষেষ বাক্যে ভূলাইবে। যাবনা নিকটে, যদি বাধা ঘটে,

আজ গতি না ফিরিবে॥"

বাধা ভেদি এইবার, মহানদী হ'য়ে পার।
ধীরি ধীরি বায়, ফিরি ফিরি চায়,

ख्यू कित्रिल मा चा'त्र ॥

খারৎ আসিয়া জেমে উভরিলা, দর্পণ রাজ্যেতে। ্স সময়ে দিবাকর উঠিছেন, উদয়াচলেডে ॥ 🕟 निकार (मधिना (यन, धन कत्रि, धन चित्रिशारक । কিন্তু সেই ঘনষ্টা, অতি অপ্প, স্থানে স্থিত আছে ॥ কেত্রিক বাড়িল মনে, একি কাও, দেখিবার আশে। ব্যান্ডলে ভাবুর ছটা, অল ভেদি, গিরীশ প্রকাশে।। मत्माल इहेल "यान, मित्नामात तथ कि कांत्राण । ঠারে ল'য়ে যাবে কোপা, ভাই বুঝি, উঠিছে গগণে॥ এ রখে উচিয়া দেখি, নির্মাণ-কৌশল কি প্রকার। পেরেছি সমৃথে, ভাল, দেখে লই, কেম্ন আকার।। এইড নিকটে, স্পাউ দেখা যায়, পথেরিভ ধারে।" এত ভাবি মনের উল্লাসে চলি, যান দেখিবারে 11 যভ যান ফুৱায়না পথ, তবু. বেন সেই ভাব ! ভাবিলা " বুঝিবা সভ্য, অনুমান, ভার দৈব-ভাব ॥" এই যে এই য়ে করি, যোজনেক, পথ হ'য়ে পার 🞼 উপত্যকা দেখি ভরু, বুঝিতে নারিলা, কি আকার 🎎 अहमा तुबारे खांत, छाट्य र'ल खाद्रारी नदीन ! क्यान वृक्तित व या, क्राम छेक्क, आक्राफ विशिन ।। অধিত্যকা হ'তে দেখে উপত্যকা-বাসীর ভবন ৷ তাসের নির্মিত-বর বেন, হেন কুত্র আরতন !৷ ভণ্ন উঠিতে বাকি, শিশ্মির, উর্জু অর্কুভাগ ৷ विना कृत्वे अञ्चल कि जाता, बाटक अञ्चलांग ।।

এভাগ বিজন নয়, মাঝে মাঝে, লোকের আবাস। **নে লোক অসভ্য, কিন্তু নহে কারো, অধীন বা দাস** 🗵 বিচিত্র-গঠিত ধর, তৰু, গুলাু, লভার, মিলিয়া. সেই ঘরে স্থাং থাকে, অসুখ না যায়, কাছ দিয়া।। অযত্র-সম্ভূত ফলমূল, আর মৃগ মৃগয়ার। অতি উপাদেয় ভাবি, ভারা করে, ভাষাই আহার 🗤 वनन, नवन, रेजन, रमथा नाहें; ना हें रन छ नग्न। वानीविध, ७क कार्छ, मह, जाई कात्र विनिमय ।। खौ পूरुरव मृष्कांश, श्रुकेशूके, निर्छश-मानम । নছেক স্ববোধ তাই, বাহ্নভাবে, দেখায় কর্কশ ।ঃ মহিব, গোধন, শিবা, ছাগ, মেব, তরকু, শুকর। ভল্পুক, উরগ, আদি, বাসকরে, ভাহার উপর।। বিবিধ বিহন্ন যত দেখা, ডত লোকায়য়ে নাই। ভাদের ধ্বনিভে, প্রতিধ্বনিময়, পর্বত সদাই।। কুরক কভই রক্ষ করে, ছেরে, যুড়ায় নরন। ময়ুর পেকম ধরি, নৃত্যকরে, প্রিয়-দরশন !। अ तकल र'छ, यहि, इक्टीन रेणल कि, काञ्चारत । শোভিডনা শোভে কোথা,কেশহান শির:অলফারে। ্থকে বত ছায়াতক সখন, কে যেন সাজারেছে, ৰাৰে মাৰে কভ গুলু, লভা,কলে ফুলে শোভিভেছে। ু ডাহে নানা জাডি পাখী, ডালে বনি, করে কলরব। গ্রাদ্ধবহু ক্ষেরে লয়ে, নানা কলফুলের সেরিছে।

হেথা ষভজাতি হক, গুলা, লতা, ফুলের ফলের। ্লাকালয়ে ভত নাই, চেনা দায়, কোন্টা কিসের। न्तरात्र यान्धर्या मृना, हक्तानित्र প্রত্যেকেরি বন। त्राथ यान लग्न कारता, व्यक्तिकाशेश छेशवन ॥ ভ'লেও হইতে পারে, স্বভাবের সাধের আরাম্। ভাই শান্ত, হিংজ্ঞজীব, সবে সম করিছে আরাম। এদব দেখিয়া হর্বে চ্ডাদেশে, উঠিয়া শরৎ। विना भाषिष्ट मिथा, प्रतानम्, सुमुना हरू ॥ দেব-মৃত্তি স্থাপিত তথায়, তায় পরম কৌশল। বিএহের পদ হ'তে, অবিরত, মরিতেছে জল। এব্যাপার গুপ্তস্থানে, অনেকেই, বিশেষ জানেনা। প্রবাদ হ'য়েছে ভাই, বিষ্ণুপদোস্তবা ভবায়না ॥ এত ভাবি প্রণমি দেবেরে, নিম্নে নামিতে লাগিলা। অপর দিগের, উপত্যকা ভাগে, স্বাসি উত্তরিলা। দেখিলা তথায় কৃত, বড় বড় ভূপের মতন। জিজাসি জানিলা ভাগা, পর্বতের প্রথম পওন॥ पित्रा अनिश जारन, उथाकांत्र लारक धरेमछ। বন্মীকের প্রায় ধাকি, বাড়ি**ডেছে এ সব পর্মন্ত**।। इंडन क्रकेश मिथि, कांत्र या नांच्य द्रांशांत्र ? বিশেষতঃ যেই জন, প্রকৃতির ভাবে ভাবী হয়।। क्ति छत्न स्थी हेरत, ख्या हेर्ड क्तिना गमन । শরতের বাহুৰ শীত্র, বন্ধ দেশে করি দর্গন য

এমন মানুষ নেই, জন্ম-ভূমি যার যেই, ভাহার মায়ায় মুক্ষ, হয় না হবেনা। এরপ খেহের স্থান, দ্বিতীয় পাবেন।।। অমুপ কি উপভ্যকা, মক কিম্বা অধিভ্যকা. বন বা উর্বারা ভূমি, যেথা জন্ম যার। ভাহার নিকটে স্বর্গ, হ'তে, স্বর্গাগার !! विम्पा विमित्र सूर्थ, थाकिल्ल जात्र गूर्थ. লেগেথাকে সেই পূর্ব্ব,কুঁড়ের আখ্যান। ভার লাগি থাকি থাকি, কাঁদে ভার প্রাণ !৷ কেন হয় এপ্রকার, হইবে কারণ ভার. জন্মাব্ধি পরিচিত,তাই সে এমন। किसु (यह प्रारंभ नाहे, जाता (य जिमन 1% भंतर्छ (मृद्ध नाइ. छत् किन नर्समाई. জন্ম-ভূমি দেখিতে, হ'য়েছে ব্যস্ত অভি ৷ क यन होनिष्ट, हिन डारि,करत शिकि॥ ভূত-গত অনুবন্ধ, শরীরির সহ বন্ধ, তাই তারা এই ধারা, টানেপ্রাণ মন। विष्तर्भ कि जिन्न जुल, नरहक राज्यन ?। ध यनि ना रह छत्, धरे गृह (रख रत, व्यायात विशा यात्र, छावस्त्र शत्र । व र्हाक र्म रहाक हत्र, त्थ्रायंत्र निमन्न ॥ लिहेरन ब्यापन चान, पिषिन्ना बुद्धाव श्राप,

कत्वता इहेट्य (महे, सूर्यंत्र वर्षेन ! সর্ৎ সদাই এই. চিস্তায় মগ্রন ।। কিন্তু সেই কোন্ দেশ, নাজানে ভার বিশেষ, কেবল লেংকের মুখে, তাবণ ক'রেছে। বঙ্গবাসী কেছ ভায়, ভ্যাজিয়া গিয়েছে।। (क्: दन अहे निमर्गातन, वक्रांसरण गान गान, স্থাপিয়াছে (य সকল, সাজে সাজাইয়া। देखिहाटन लाक-पूर्य, आनर्भ शाहेशा ॥ উত্তরিয়া বাঙ্গালায়, সে ছবি মিলাতে যায়, किइ हे (मलिन) এएम, नकलि नू उन। यानत अशुक्त ভाব, वहेल ख्थन।। ए कि खाव माद खानि, ना (मिशा माने खानि, লেগে যার মনগড়া, ছারা যার ভার। · সে কি কোপা মিশে ? সে যে ছায়া কম্পনার! याना (विश्वात व्यात्म, इत्य उद्मारम ভारम, দেখিলে ভাষারে, যেই ভাবোদয় হয়। সেই জানে যার হয়, বুঝাবার নয়।। সে ভাবে করিল ভোর, সুখের নাছিক ওর, শরতের হাতে যেন, এসে বসে চাঁদ। मिथा मकन राम, राष्ट्रिम बास्ताम ।। দেখিলা কাস্তার কত, ধুধু করে অবিরত, বহুদুর-ব্যাপী ভাষা, পার ৰওয়া দায়।

विन, बिन, किन, मगुरक्ख, भार जार হৃদয় ভেদিয়া কার, বিভাগিয়া তুই ধার, চলিয়াছে ভোতৰতী, মৃত্ন মৃত্ন গতি। কাছারো অন্তরে বন, ভরানক অভি।। যে কাস্তারে যারে ভারে, দহুতে ধরিয়া মারে. জামাই তনয়ে মারে. গুনাছিল কাণে। भार (पिथना जारा, जाहिन राशांता। कान मत्नाइत मार्छ, शतिशां वैशान मार्छ, निश्वाशी ननी थाह, मोधी मोधाकात । वरक वह कान परम, नाहि वं श्रकात।। नांधा-घाटि भिवालय, शुष्टा-त्रक शाउमत, किया महावद याहा, मिथ जाल मन। खना (मर्भ खार्ह् किसु. नाहिक धमन ॥ **একে ভার কাল জল, ভার কটে শ**ভনল. গস্ত্রবহ ফিরিছে. ছডায়ে পরিমল। हेनहे'त्न कत्न (थ्रान, जनहत्र पन ॥ यहाल माँजाह (थाल. विद्धाल कमन (काल, কে কমল ভ্রমে অলি. খুজিয়া বেড়ায় ৷ ্ৰ শরৎ সে রস দেখি, কত সুখ পায়।। আমাদের বন্ধদেশ, এতে এত বেস বেস, मुना वस बारह, (न'रथ जूल यात्र यन) द्रश् क्षत्रज्भि नम्न, शिश्वनद्रभन ।।

দে'ধে কভ পাডাগাঁয় নগর হারিয়া যায়, माति माति काँठा, शाका, मिभामिभि चरत । বিবিধ জাতীয় লোক, নিবসতি করে।। ্চন সধ্যে একঘর, প্রতিবাসী প্রস্পর, गिलगुरल (कमन, ब्र'शिष्ट् निडार्शन। व्यवह मयान नश्. कोहाद्वी मण्याम ।: চাকুরে আর চাষীতে, প্রমজীবী, ভিকারীতে, খেরা বেড়া প্রামে, হুই এক জমিদার। বিশেষ করেছে শোভা ভারা পাডার্গার ॥ नगरहरू (हमा जात, धनवान क्लिपरात्र. পরস্পর ধুমধামে, বড় নাজানায়। পাড়াগাঁয় একেভেই. পাহাড়ের প্রায়।। কোন গাঁয় সঙ্গোবর, স্থানে স্থানে মনোছর, কোন গাঁর কাছে নদী, চলে গুড়ি গুড়ি ঃ বাগান শদ্যের ক্ষেত্ত, আস পাশ যুজি॥ विख्यास नैसमारे, वाहा हाई खाहा भारे, ছোটগ্রামে ভাল র্ক্তব্য, নামিলে সদত। अत्तरण नगत यक, अना स्टाम नाहि छछ; গৌরবের হেতু এত, উন্নতির দার। अञ्चर्धत्र गर्धा तथा, अकिक्लाकात् ॥ मंत्र (सर्विज्ञा मिण प्रथ शान नविस्मय,

কিন্তু কোথা পিতা, মাতা, নাহণলো সন্ধান।
আমে গাঁই জানা নাই, প্রভুরান পিতা ভাই,
স্থান সবারে কহি, নিজ পরিচয়!
কেহই কহিতে নারে, কে, সে, কোথা রয়।।
বহুদিন হ'লো গত, শরৎ ঝড়ু আগত,
দেশান্তরে যাতারাত, চলেনাত আর।
শরতের গতি রোধে, শরতের ধার।।

-++

শরতের প্রথমেতে, ঘনরপে হন।
গগণ বিরিয়া রাখি, বারি বর্দে থাকি থাকি,
জল-জ্যোতে হল ভাগ, করে আপ্লাবন।।
হেন বুঝি ডুবাইল, পৃথিবীরে ভাসাইল,
সাগর উচিল যেন, করি আক্ষালন।
নিমু হলে হ'লোদায়, ঘরকন্না ভেসে যায়,
হার হার করি কেহ, করিল ক্লেন।।

রক্ষা থেই বহু দিন, নাহিরহে বান !
নতুবা ঘীপের মত, জাগে উচ্চ ভাগ যত,
তুবে হয় নিমু ভাগ, সাগর সমান !!
নিমুবাসী যত,নর, হারে পড়ে উভচর,
কট পেরে মারেযায়, এতে বাঁচে প্রাণ?

দি প্রাণ বাঁচে ভায়, নৃশংস যাদসে কায়, দেখা পেলে ছেড়ে দেয় না বধি পরাণ গ

নাণ যেখা পশিছিল, পলি প'ড়ে ভার।
বাড়িল শস্যের ডেজ, সাজাৰু ফুলারে লেজ,
উঠিল গা ঝেড়ে যেন, ছেন শোভা পায়।
ক্ষেদ, কহলার, পছা, প্রভৃতির জলে সহা,
পূর্ব সরোবরে নাচে, হেলি ছলি বায়।
মধ্য অংশ শরতের, প্রভাব বাড়ার চেরহদশ্য সকল নিগে, আমোদ ছড়ায়।

ক্রমেতে আকাশে, মেঘ হইল বিরল ।

গ্রাপ ছাড়ি প্রভাকর, প্রকাশিয়া খরকর,
প্র ঘাট শুক্ষ করি, ফেলিল চঞ্চল ॥
ব্রেদের ঘরষণে, মেন বিগু এইক্ষণে,
পূর্বে হ'লে অধিক, হইয়া সমুজ্জল ।

নিশির বাড়ান মান, নিশি হাসি গ'লে যান,
ভাই সে কোমুদী, শরডের নিরম্ল ।

এ সময়ে সিত-পক্ষে, নিশি কি সুক্ষর !

গগণ-বরণ-শ্যাম, শৃদ্য-পূর্ণ ধরা-ধাম,

জলে চাঁদ-প্রতিবিষ, তুল্য-মনোহর ।

े পবিক্রপ্রীয় ।

হার শুন্যেতে থেকে, উচ্চ নীচ ছই দেখে।
ভাবি হয়, উর্দ্ধৃ অধঃ, চেনাই ছুকর।
ঘন ঘন জলাশয়, প্রতিবিধে মনে হয়।
কন্ত চাঁদ হেখা, শুন্যে এক নিশাকর।

যখন মুমার লোক, জাগিরা তথন।

দূরহ'ডে শুনা যায়, কতশদ্ধে জল থার,

বর্ণন না হয়, সেই শব্দ যে কেমন।
পটিং, মুরজ, বীগা, পারেনা সে ধ্বনি বিনা,
সে ধ্বনির মধুরতা, করিতে ঘোষণ।

মন্তর মেঘের জল, বে শব্দে চুম্বয় স্থল,
সেমিক সাধার্ক, কিবা, ভাহারি মতন।

প

ও সময়ে প্রতিধ্বনি, মনের মোহন।
কাছে কাছে জলাশয়, পরস্পর লুফে লয়,
কোথাঝার ধ্বনি করে, কোথায় গমন।
নানা বস্থু নানা ধ্বনি, মিলি ভার প্রতিধ্বনি,
প্রতিধ্বনি-প্রতিধ্বনি, করিলে প্রবণ।
স্থাবে কি বাকি থাকে, সে সুখ কে কবে কাকে ।
স্থানির্কচনীয় সে, যে, না হুর বর্ণন।

क नगरत किया त्रगा, कत्रभ निलत्र।

ারে শোভে বরণায়, পাশে ভরা-নদী ধায়, আভাবিক ধানি করে, প্রতিধানি ময়॥

। লভা, শস্যরাজি, জ্যোৎসায় জ্যোভিক সাজি, বড় শোভে দেখি যেন, খনতুংখী হয়।

। ই চক্র সে দোঁখারে, পর্যায়েতে তুথিবারে, কোশল দেখায় দেখি, অসুখ কি রয়।?

শরতে শারদানক, নহে অসম্ভব।

সংশ ইচ্ছা তথা থেকে, যালা ইচ্ছা তনে দেখে,

যত কিছু আনন্দ, লভিতে পারে সব।
কিন্তু যে অস্থে তাঁর, তাঁর স্থে ঘটা ভার,

ছ:খির কি ভাললাগে, প্রকৃতি-উৎসব?
কোথা মাতা, পিতা, বাস, না জানি সদা হতাশ,
তাঁর পক্ষে ছড়ান, আনন্দ স্মৃত্প ভ।

যাবৎ শরৎ, থাকা চাই, এক স্থানে !
গঙ্গাতীরে পথপ্রাম, গোঘাট ভাহার নাম,
ভদ্রপল্লী ভদ্র সঙ্গে, থাকিলেন মানে ॥

হর এক অবীরার, বিরজা আখ্যান ভার,
সেই দিল বাসা, দয়া হলো ভার প্রাণে !
বড়ই সরলা সেহ,
যত্ন করে হেন, যেন, আপ্ন সন্থানে ॥

পবিত্র প্রধায়।

দ্বিতীয় সর্গ।

গোঘাট-নিবাসী রম্পতি। ধনে কুলে গুণে মানী অভি। সে বিরজা ভাষারি দেশিক।। ভারি দত্ত-বেভনে জীবিকা ॥ ভাহারি আশ্রেফরে বাস। বাড়ী ভারি বাড়ীর সকাস । ভালবেদে বিরজার বাদে। त्रमाथि-एका मना आंदर्भ ॥ (म नाबीब नवीन वद्यम । পরিপূর্ণ লাক্থ্য-কল্স ॥ পাঞ্চলা বর্ষ বর্স 1 কথা কয় সকলি সরস॥ শরতের উপস্থিতি কালে। এক দিন আসিল বিকালে ॥ দেখিল শরৎ স্তক্ষার ৷ বোধ হলো গঠিত কুমার॥ * বিরজা কি পুজে বড়ানন ?" জিজাসিতে করিল মনন ॥ रठार लिथिया स्वगाय । সে কুমার সরিয়া দাঁড়ায় 👢

ভাহা দেখি বুঝিল ত্ৰমা। "এ কুমার কুমার-উপমা॥" লক্ষা পেয়ে পনাইতে চায়। এস ব'লে বিরজা ফিরায় । "অজ্ঞাত-পুৰুষ ভৌর ঘরে । না জেনে এ্সেছি যাই ग'রে॥ এ কথা জানাতে হয় আগে ! না যেতাম ওর আগেতাগে ॥ ভোর বাড়ী আসিব না **আর**। এত বলি যায় পুনর্কার ।। বিরজা কছিল " ও হ্রমে ! ওরে ভোর কায কি সম্ভ্রমে ॥ ভালবাসি ভাই তুই মেয়ে। एक मि ७ (इंटल (इंटल (इंट्स) ।) ইছা কৃছি শুনেছে যেমন 1 পরিচর কহিল ভেমন ॥ পরিচয়ে আশ্চর্য্য মানিল। क्रशास्य अनूर्भ ভाविन । হোক না যুবতী, অনুঢ়ার। তত লজ্জা জন্মে দাই ভার ।। সেই হেতু না ভাবি দূৰণ। **চথো-চথী করেছে যেমন**া

পবিজ্ঞাণয়।

অমনি আঁখিতে এলো লাজ / ভাবিল "করিনু একি কায় ৷৷ ভাড় ভাব হয়না এজনে। अना छाव छेलेलिल गान ॥ ভাগারি নয়ন আর মন। জানিনা যে নছেত আপন। वांगांत व्यक्तीए अहे कृति : वनार्वेल स्त्रु कांग्राम । ভোল নহ এমন ঘটনা! ফিরে আর এ ঢোখে চারনা এ মনে আর এখানে লননা ৷ কু জানি কি করে কেপাণেনা ১ এত ভাবি ফিরায়ে নয়ন। কুষমা চলিল নিকেতন 🖟

সময় বখন যার হয় । সেকি কারো বাধা মানে, স্বভাব ভাষারে টানে স্থভাবের অবাধ্য সে নয়॥ স্বভাবের কায় ক'রে, পরি তৃপ্ত রয়, সে তৃপ্তি অন্যথা হওয়া, ভার নাকি সয়

ৰোবন-স্থলভ স্থ লাগি।

না বস্তু দেখাইল, তার কাষ সে করিল, মন ভোলে, আঁখি দোষ-ভাগী ?। নানেরি বা দোষ কিসে, কে হেন বিরাগী। অভিযন্ত বস্তু প্রতি নহে অনুরাগী॥

সার সেকি ভুলিবার ধন।

ে. ভূলি চেন্টাকরে, মন ফিরি ফিরি ধরে,
থাকি খাকি পাল্টে নর্মা।

নর্ম দেখাবে পথ, চলিবে চরণ।
কাবেই গভির, প্রতি রোধ, ঘন ধন।

এগোন পেছোন হলো দায়।
তেওঁত যৌবনা ছিল, জীখি আজ বুঝাইল.
বোবনের কাষ সে বালায়।
সরম করমে লাগে, এহেন বেলায়।
সেই ছিল ভাই বালা, গৃহে যেতে পায়।

গতে আসা না আসা সমান।
নয়ন লেগেছে ভায়, মন কি আর দাঁড়ায়,
থাকে থাকে বায় সেই স্থান।।
বিরজা-ভবন আর, সেই রূপবান।
ভূলে আনি বসাইল, হাদে, যেন প্রাণ।।

পাবিতপ্রণার।

ছুধে জলে হইলে দিলন।
আরকি পৃথক হয় ? সব হয় ছুধ ময়
স্থমার ঘটিল তেমন।
জাগিয়া বা স্থানেতে, যথন ভখন।
দেখে শহতের রূপে হন্ত রঞ্জন।।

 ৰাল্যকালে এমন থ বেংগছি কত যুবাই। কেহ্ইত মনে নাই, এযে স্থাজি মজাইল মন ?। ফৌবন এখন, মন নহে তে তেমন।
 স্বমা ইনিল হ'লে, একথা লাবণ।

বেদে'তে সাপের হাঁই চেনে।

চারি চক্ষু দোহাঁকার, মিলেছিল বারবার,

হ্বমা ভাতিই নয় জে'নে।।

তারো আঁথি মন কান্ত নহে লাজ মেনে।
আগভিচ জ্যায় মন এই তত্ত্ব এ'নে।।

সে তত্ত্বে সন্দেহ পুনঃ গণে।
"এমন ত হ'তে পারে, সে ভাবে দেখি আমারে।

মন্দ্রভাব লাগে ভার মনে।।
ভাই বনি হয় ভবে, পাবনা সেজনে।

साति शोहि मा उद्द, कि रेक्न वीथि मान" ?।

আবার ভাবিল সেই কাণে।

গ্রন বে'দেই, নাই, নাচেনে সাপের ইাই,

গেকি বুঝে নাই মোর মনে?।
অয়স অবশে রবে, চুদ্কাকর্যা।

এহেন ঘটনা হবে, কেন কি কারণে?।

যাবং না হ'রে হুমিলন।

- াহি মিলে একাসনে, শক্কা বাড়ে ক্ষণে ক্ষণে,
প্রণারের প্রথম-লক্ষণ।।

মনে হ'লো "যদি মোরে, না চাহে সেজন।
ভাহে না মরিভ মন, থাকিল এমন।।

শাদায় বিচিত্র চিত্র করি।
মূছে অন্যে চিত্রিভিলে, যদিও উত্তম মিলে,
দাগরবে যাবৎ না মরি।।
দাগা দিভে মনে, এই ধনে পরিহরি।
পারিবনা আমি, ছি ছি হরি হরি হরি।

এবিচার হ'তে সমাধানু। ইচ্ছা হ'লো একবার, তার মন কি প্রকার: পরীক্ষিলে পাইব প্রমাণ।। বিলম্ব সহেনা বলি, করিতে পয়ান। বাধা দিল বিরক্ষা, আসিয়া সেই স্থান।।

বিধাতার লিপি চমৎকার।
শ্রহ কোথায় ছিল, স্থানায় দেখা দিল
যটেগেল বিষম ব্যাপার।।
এই ভ প্রথম-স্থার এই ঘটনার.।
সামান্যে মেটেনা, মাঝে মদন ইহার।।

এরি মব্যে স্থ্যার, আমি মন এপ্রকার পরতের প্রতিমার, পক্ষপাড়ী হইল।
শরৎ-সঙ্গিনী ব'লে, বিরজায় দৃষ্ট হ'লে,
কতই আনন্দে গ'লে, চলে যেন পাড়ল।।
যেকুলে যে ভালবাদে, মাখি সে কুলের বাদে
দূর হ'তে বায়ু আদে, সেবায়ুরে সেবিয়া।
সেকি ভত্ত স্থাপায়, দেখিমাত্র বিরজায়,
যতস্থা স্থ্যায়, স্পর্নিল আসিয়া?
হরের মানুষ প্রায়, এবিরজা আসেষায়,
আজি আদিরিয়া তায়, কাছে ডেকে বসায়ে
একথা সেক্থা ক'য়ে, পুলকে পুর্নিত হ'য়ে,
শরতের কথা ল'য়ে, কেডুহল জানায়ে॥

া রাসেতে জিজাসিল "ওনে দুঃখ'উপজিল, শরতে যা ষটেছিল, পুনঃ বন বিরজে ৷ , ্রেরজন-পরিচয়, তানে বড় হ্রখ হয়, कार्क (अरे खाद्यामध्र, बंदना कृति नद्यादक ॥ লমস্তব লহে নহে, ঘটকে সংবাদ কছে, शिलका किरकाल तरह, बद्ग-वार्डा खनिएछ। ार्ग ती दा कूशती नव, स्वमात स्य नमन, ভাতে নব-রাগোদয়, এত যোগা বুঝিতে !! ारका (मकथा वाल, एम जारम मिक-काल িপ্রয়জন-ঘুংখ ব'লে, শিহরিল ভিডারে। িংজা জানেনা তাহা, বাহিরে বুঝিল যাহা, শহল "ফ্রমে! আহা, ভোর মায়া এভ'রে।।... निख-दाहि मध्रिया, रेश्या लाज भागतिया, বিরজায় সংঘাধিয়া, কহিলেক সুষ্মা। याश किছू अञ्चनात, श्रुल नाहे छेशमात, স'য়েছে যে হুংখ-ভার, ভারো নাই উপমা ? दुबि विधि धरे छात, गरिंद्र विभि विकास, কিংসায় হিংজ্ঞকগণে, বিপাদেতে ফেলিল। যেই প্রিয় বিধাতার, বিপদ কি থাকে ভার, সে কির্যোর অবতার, হয়ে বেঁচে উঠিল ॥ চিত্রিত-মদন, পটে, গঠিত-কুমার, নঠে, शहर इसह बढ़ी, मानूदवृह हिष्डा

এত ভেদ তাতে এতে, অক্রিমে ক্রিমেতে, ভায় এযে বিরলেতে, বিধাতার স্বাঞ্চিত !! আহা, কি লাবনা-কূপ, গলিত সোনার ত্রণ. मिलाहेल अनुद्रश, वानिकल इहेरत। অন্তি দীঘল কায়, পরিপাটী ভাব তায়, এমন আর কোথায়, দেখিবারে মিলিতে '! म जल्दि म नहन, भ नामिका म नगन, সে কপোল সুদর্শন, মনে ভেবে দেখনা। শামি হেন অনুমানি, সে মুখে বিনা তেমনি. তত হঞ্জী মুখখানি, কিছুতেই হ'তোনা!! कि लिंग माजह मूर्य, उर्थ नान देवहेरक क्वित विधित्र कृष्क, मत्नोक्ष्ट्राथ द्वीरमना । বিরজে! দেখেছ আর, প্রশন্ত ললাটে তার. সিঁভিকাটা কেশভার, বর্গনায় আসেনা। यथार्थ (ভाমায় বলি, धमन हामावनी, খুজিলেও অলিগলি, কোম জান পাবনা। विभान दुरकर शांछा, याका यम कूरम काछा, किंक हैं। शाकलि कहा, करत करत (माजना।। व्यां है। त्यां है। त्यां के व्यान के व প্রিয়-দর্শন আন, এমন কোথায় গো? काम अञ्चल नज्ञ, प्रारं ज्ञि नाहि इज्ञ. সাহাহা, অমৃত ময়, কি চাহনি ঢায় গো।।

8,

वाह कर्ष कतिशाह, दांमा निया वाधिशाह. বিনা যত্রে পাইয়াছ, প্রার্থনীয় রভনে। শ্রে মুঝি চেনেনাই, হরেতে পেরেছ তাই. न्जूरा कि एषा भारे, कि ছाড়िত এজনে ।?

> " অনুরাগ যবে হৃদয়ে পাশে, क्रमग्र- अर्थन जोशनि शरम, কারো মন ভার রহে স্বশে, कारमा यन यास क्रुंषिया। ছুটে যার মন সরল ভাবে, অন্তরের ভাব কেন লুকাবে ? প্রকাশি দে ভাব সম্ভোষ পারে, ভাই ব'লে ফেলে ফ্টিয়া। সুষ্মা তেমনি দেখিয়া যারে. जुलिशारक, जांत्र क्षेत्रां जांत्र, व्यथवा खातिमा धरे व्याभारत. লাজে কায করে পরেতে ৷ अथवा रामन (निध পूजुरन, वालिकांत्र यम क्ठांर जुटन, তেমনি শরং-রূপ অভূলে, पि कि कियारिक मरनरक ३। বেভাব কিন্তু দেখি এখন,

'বালিক'র ভাব নতে এমন, নারী কি. না সুধে নারীর মন,

হয়নি কি মোর এমনি :
ভাস্তারের ভাব প্রকাশ হ'লে:
ভারসিক জনে পাগল বলে:
কুজনে নিক্তর বিবিধ ছালে;

ভূগিয়াছি নৰ ভূগনি । ভাগা ভাল যেই মুঝিরু আগে। অন্যেতে বুঝিলে কিহ'ডো ভাগে ভাগুন লাগাত এ অনুয়াগে,

প্রকশন্ত এত জানেনা।
না জানুক আমি জানিত সব,
আমি ভুক্ত ভোগী। এ নহে নব,
সাবহান করি সহায় হব,

এতে বাধা, ঘটা সবেনা"। বিরজা এসব মনে বিচারে. জার স্বমার প্রতি নেহারে, মনে হ'লো, যেন নেহারে ভারে.

প্রেম-প্রতিমার উপমা।
ভারুকের মনে লাগে সে রূপ.
কবি কি, পাইবে, সে অনুরূপ ।
বুরাবার নয়, ভার স্বরূপ,

দে যে পূর্ব-রাগন্তবমা!।

ননোমত ধন পেয়েছে মন,

ভারে ছাড়ি দুরে নাযায় কণ,
নিয়োগা বিহনে নিয়োজাগণ,

কোন কাষে ভাল চলেন। । খেলেনা, নয়ন অমর প্রায়, হেলেনা, পুতুল সদৃশ কায়, কেবল ক্লুনা কহে কথায়,

ভাও যেন ভেবে মলেন!।।
মন কণ কাল ছাড়েনা মায়,
কাঁথিও ভাষারি রূপ ধেয়ায়,
বির-জনে চাঁদ ভাল দেখায়,

ভাই ভেবে কায় হেলেনা।
মন লেগে যায়, ভাবিলে ভায়,
কভ স্থোদয় কহা না যায়,
এতই কুটি হলো স্থমায়,

কুতৃহল যেন ধরেনা ।। একে ছাচে ঢালা ননীর মূর্ত্তি, ভাহে নব অনুরাগের ক্ফুর্ত্তি, ভাল ফ্লে বেলি মধুর পূর্ত্তি,

र'दा यम পড়ে উগা'दा। পরম-স্করী যে নারী হয়, বাহা কিছু তার অমৃত ময়, তারে ভালবাসা ঘাহার রয়.

আরে। ভাল লাগে ডাহারে।।
বিরজা রমণী, তবু মোহিল,
রূপ দেখে মনে ফনে ভাষিল,
" চেনা লেকে দেখে এফি হইল,

দেখে দেখে আশা নেটেনা।
আহা মরি কিবা রূপের ঘটা
অভসী গোলাপ মিলিভ ছটা।
মানবীর রূপ এরপ ঘটা,

অতি অসম্ভব, ঘটেনা।।
কতই মাধুরী আছে ইহায়,
দেখি যন ভাপ বাসিতে চায়,
এযন স্কন্ধরী যুরতি হায়,

কি দিয়া বিধাতা গড়িল! কর, পদ. কর-শাথা, সকলি, কেমন সুঠাম কেমনে বলি, ভাল বা সমান, পেলেভ তুলি,

সম না নয়নে পড়িল।।
কৃটিল কুন্তলে সহল-সিঁভি,
বেণীবিনা খোঁপা কুড়ন রীডি,
হধুই দেখিলে জননে প্রীভি,

রজতের ফুল তাহাতে। ছই আঁখি নীল-উৎপল-দল, ভারা কারে তাতে অলি চঞ্চল, টানা ভূক মাথে ফোঁটা উজ্জ্বল,

ভাল ভাসে যার শোভাতে।।
বিধি কি কাও গালেতে করেছে,
ভিতরে লোভিড, আভা ফুটেছে,
ভিত ভাল গাল কেবা পেয়েছে,

আহা কি সুন্দরী সুবমা!
নাক যেন কাঁচা সোণার বাঁসী,
ভাষতে সদাই মাথান হাঁসী,
নেখিলে মুনিও হয় বিলাসী,

নাকে মুখে এক স্বমা !।
মুকুতা পাঁতিতে ভাতি যেমন,
স্বমার দাঁতে ভাসে ভেমন,
যার আবরণে করে মোহন.

সেত সাধারণ হয় না ?
রপ যত গুণ তারি মতন,
পাছে দেখে ছটি হাদ্রতন,
যদি কারো হারা হয় চেতন,

ভাই এল খেল রর না। গুক্ নিতম্ব, কটি ফীণভর,

পবিত্রপ্রণয়।

কুচ, মুখ, আদি ভার উপর, বুহুমগুচ্ছ, যেন মনোহর,

ক্ষক-ক্লসে ভোগেছে! দুই উক ভাই শিহেভে গরে, ভাবিলেও চলে স্তপ্ত উপারে, কুম্ম-ক্ষিন সারের ভরে,

বিধিগ'ড়ে শ্বারে ছ'পেছে।
সমধের ফ্ল সব কুটেছে,
গদনের জাসা যাওয়া ঘটেছে,
মনোমত অলি এসে মুটেছে,

এতে স্থির থাকে নবীনা ? সেও যে শরৎ শরৎ-চাঁদ, রমণীর মন হরার ফাঁদ, দেখে ভেকে ফেলে সরম-বাঁধ,

ধৈরজ-শালিনী প্রবীণা ॥ পিনিত শোনিতে স্বারি অক.
আজো হলোনাক পুক্র-সক,
সুযোগ নাপেরে প্রে অনক,

এত দিন ক্ষমা করেছে। এতবড় মেয়ে বিয়ে দিলে না, পিড়া মাতা দোব বুৰো বোবোনা, অনুকুল বিশি ক'রে বোটনা,

ভিতীয় সর্গ।

বর বর এনে দিয়েছে।
নদপৌ সুষমা এ বরে বরে,
রতি কামে মিলে কি শোভা করে,
গুনেছি দেখিব নয়ন ভ'রে,
এ বিবাহ দিতে হইল।
কিন্তু অবলার বালাই লাজ,
তেগে দিতে পারে সে হেন কান,
কেশিলে সে লাজ মুচাব আজ,"
বিরজা এ সব ভাবিল।

প্রকাশি কহিল হাসি-মুখে।
তথামি কি জানিনা ধনি ! রতনের মান।
তথামার বল্লব গেছে, আরোভ মানুষ আছে,
পেলে রাখে বুকে।

গই ত দেখিয়া সুধী, হলো ভোর প্রাণ । যারে রাথ কাযে লাগে, ছুখে কিয়া সুধে॥

থ রতন অমূল্য রতন।
আন্য কেহ পাইলেও, ছিনায়ে নিডাম।
ুবড় ভাল বাসি ভোরে, পরে দোষ দিতে মোরে,
না পেলৈ এ ধন।

আমিকি জানিনা হবে, তোর অভিরাম ?। বিশেষ এখন এতে, ভোর প্রয়োজন।। ভাল বল জিজ্ঞানি ভোমারে।

শরভের রপ কি, লেগেছে ভোর মনে ?
ভোমার বেমন রপে, সেও ভোরি অনুরপ

অভিন্ন আকারে।।
উত্তম মিলন ভোরা, মিলিলে ছ্জনে।।
একধায় লুকাইওনা, বলহ আমারে।

সর্থে কুঠিত হলো মন :
কুষয়া ভাবিল, " একি, কুকায় করেছি !
বাঞ্জ্ঞান-শূন্য হ'য়ে, মনের কথায় ক'য়ে:

করি কি এখন ৷
 ভাঁড়াই কি ব'লে, সম্পটি ধরা দিয়েছি !!
 না খেয়ে না ছুঁয়ে, চোর হইল রটন !!"

প্রকাশে কহিল স্থলোচনা।

"ছি ছি ছি অমন কথা, ব'লেন নাক আর
রূপ তাণ বাহা হোক, ভাল দেখে বর্ণে লোক
দোষ কি বলনা।?
আমার মন কি মন, বেমন ভোমার।।
ভাই ভেবে এই বুঝি, হলো বিবেচনা।?"

বিরজা ভাবিল পুনরার।

শ্ব স্থামে! তোর মত, আমিও ললনা।

শ্বান্মন নারী জানে, ভাব ভাক অসুমানে,

লুকান কি যার ?।

শ্বিতি নারীতে কড়, চলেনা ছলনা।।

শ্বে দিতে পারি ভোর, মনের কথায় !।

শুপ্রভিত্তে ক্রোধ না কি সাজে ?

ক্রোধ প্রকাশিতে চায়, মূযে হাসি আসে ।

ভ ভাব প্রমায় চাকে পড়ে বিরজার ।

বেজে চায় ব্যাজে ॥

গাছে বরি বিরজা, বসায় আনি পালে ।।
ক্রিল গুরুবেছি, খার কায় নাই লাজে ।।"

হেঁট-মাথা বসে ধনী কাছে।

গ্ঁদি গ'রে বলে "বাছা এবে হ'লো রীজ।
ভাব ভঙ্গি কপ্পা পে'য়ে, বুমেছি যা ভার চেয়ে,
বুঝিভে কি আছে?।

এখন আমার কাছে, লাজেভে কি কায।?
বরণ্ণ ভ্যজিলে লাজ, কায় পাবে পাছে॥

ভোমার বিবাহ হয়নাই। বেও আ'জো কারো পানি, করেনি এছণ। হবেদাত ব্যক্তিচার, তবে কিলে ভয় কার মিলেছে যা চাই।।

অন্যের মা বাপো করে, পারি আয়েষণ ।। আনে হাঁডো অয়হরা, জুমি নহে ভাই ।।

কথাটি হট্ল মনোমত।
মুদি আঁথি ওবু ধনী, মুদুকি হাদিল।
কি সন্দর নেই খাদা, কি হুন্দর সেই হাদ,
ভাব ভাচে কত।।
পারিজাত ফ্ল যেন, মধু উগারিল॥

भारतका जिल्ला त्यन, संधू करायन ॥ मिनि तसनी देसला कार्रा किया क्राका

জামে বন্ধ কাপানার সাঁদে।
তাহে সে বিরজা নহে, আনাড়ী সঙ্গিনী
তথনি বলিল, "ভাল, আঁখি মুদি নেখ আলে
হাদে বাঁথি চাঁদে।।
শক্ষা অন্যে টের পেলে, হয় বা সভিনী।।
আমাতে সে ভয় নাই, না বাই বিবাদে।

কথার চাতুরী বিরজার।
শেনভাবে বাড়িবেক, উত্তর উত্তর।
এই ভাবি ধনী পরে, কহিল, " এমন ক'রে

जुलाहेउ ना यात ॥

গাট ছাড় ছেড়েলাও, যাও স্থানান্তর ।। তালে শোনে, যিখ্যা হবে, সভ্যের আকার ॥"

বিরজা কহিল ছল ধ'রে।

কন ধনি, মিথা হৈবে, সভ্যের আকার ।

ভাতকুলে করি ভয়, প্রণয় কে করে লয় ।

কি সুঝাও মোরে।

াতিই স্থায় হ'তে বাসনা আমার।।

ছাতা দিয়া মাধা রাখি, আগনিব জোরে।।

অন্যে যদি শোনে হবে দায়।
কনো টের পাবে, টের পেয়েছি যখন ?
করা গিরি লোহে কওয়া, বিবাহ নির্বাহ হওয়া,
সহজ উপায়।

বিবাহের পূর্বে, কে জানিবে এ ঘটন ?।
ভারো জান। পরে, আজ তৌমার আমায় ॥*

ইহা শুনি হাসি মনে মনে।
অন্য দিগো চাহি ধনী, মুখভঙ্গি করি।
কহিল, "আজুলি যেন, এভ ঠাট ছুলা কেন,
কর মোর সনে।?

প্রশোভর স্থাধান, স্থাপনি বিবরি ॥ আমা প্রতি খোঁচাখুঁচা, কিসের কারণে । "

বিরজা করিল প্রাত্রের :

"অনেকে এমন, চাক্ষ দেখে ভুলেয়ার :

চক্ষের আভালে গেলে, মন হ'তে ছুরে ফোলে,

যেন নটবর !:

ভাই কি না, নেডে চেড়ে, জানিবাইক্সায়। গোঁচা দিয়া দেখিতেছি, তোমার জন্ম ।

একথা সংহলা প্রেমীজনে।
প্রবমা সে ভাবে আরে, রহিছে নারিল।
কথিল, 'ধিক্ ডাহারে, যেইজন সে প্রকারে,
স্থা ইচ্ছে মনে।
ব্যভিচারে এও দোষ, কি হেতু হইল।
এই সব প্রথম-ভন্তরী, আচররে।

বিরজে ! তুমি কি ভাব মনে :
দাম্পত্যের স্থা ইন্দ্রিয়ের মুখে নয়,
প্রাণয় মুখ ভাহার, নহে জ্ঞাত সুষ্মার.

ভেৰনা তা ক্ষণে।। একমাত্র মন ভারি, মিলন প্রণয়।।

বিতীয় সর্গ।

हुक्त छ दिला, यन तरह कान् काम १।

আশীর্কাদ ক'রনা এমন ।

দলাপহারিণী হব, মনের দোষেতে।

যদি মন দেই কারে. সেই ভিন্ন যারে ভারে,
ভারিবেনা যন ।
ভবে দৃশ্য বস্তু কি, না, দেখিব চোখেতে ?!
গাভে ভাতে ভোলে, নহে এ মন ভেমন ।"

এ কথা কহিল যতকণ। উদেছিল হুদে নাকি, শুদ্ধ-গ্রেমভাব । ভাহারি প্রভাবে ষেন, প্রীতি অবভার ব্দেন,

क्लि मग्रभन्।

নীরব সময়ে হলো, হেন অহুভাব। তব সারি ধ্যানে বসে, প্রেম-ভক্ত জন।

(श्रीकांत्र कथा, स्वमात्र मूर्थ।
छनित्रा वित्रका, स्वन जारन स्र्थं।
छन्त्र जाविन, "व नर्द जाविनी।
निननी द्राव वा द्राव कित्रविनी।
याजविक श्रीम, जारन स्वमन।
स्विक्षिक क्षिम, देशांत्रा रुमन।

প্ৰিক্তপ্ৰয় !

এডদিন যেন, মুদিত আছিল ৷ শরতে বেনন, দেখিল ফ্টিল। धूबाद्य शास्त्रात्न, जागि वर्ग (मन)। महाख्य ভात्म. त्यम खारे लिया ह রাপে না হয় তি, এমন বতন। অণুপ্রনি শরতে, করে অস্থেহণ ।" প্রকাশি কহিল, হ'য়ে কৌভুকিনী। ''কৈ বল সুষ্থে, অমৃত ভাবিনি 🍴 বি ভাষা ভাষিত্র, পীযূব সিঁচিল। **अ**१११ कि धन, क्यांचा का निलि ?! প্রণালের দায়, ভোর ব্যাঞ্জি গবে। ्श्य-भृष्ट (मथा, धना, धांत्र करन । जि. मार्था (स्थि. मृशंबद्धा जूबि ! অফুল **অ**তুল, প্রণরের ভূমি !।" হাসিয়া উত্তর করে স্বদ্নী। ''কিছুই জাননা, রয়েছ অমনি।? यामाहर्षि धीलि मम्बरे चारह। क्रार्थमा (भर्थना, किर् कार्ता कार्र्ह 🖰 भूष्टि **रत्र या, श्रेग्र-**जाकरन । **ভবিত্তব্য আনি, त्रिमात्र সেজনে ॥**" বিরক্ষা কহিল, "বুরিলাম সার। শ্রুডের আসা, প্রয়াণ ভাহার ৷৷

বিভীয় সর্গ।

কিন্তু প্রেমাধিনি। এবড় কৌডুক। শরভেরে ভালবেসে, চাহ সুখা 🗓 किनना रा खान रम जारन रक्तान क्षप्र में शिर्वः वल वहांबद्ध १!" कहिल शमी (कांकिल-कर्श यह । িলাতের জাশা কি, ভালবালা করে 🦠 थम क्टिंग नद. जाना मिने हरिश । क्षांना (एना ल्यांक, त्यहे बुट्य पीट्य। কথা কাটি কাছ বিরক্তা আবাত ১ ^লতৰ ভাগো যে, কি, আছে মুন্না ভাগ ! विरमभी अकाउ, फान निशा भन " শেষে হা ভাঙাদে, হারাবে জীবন।। "ভালে বা পাকিবে, ভাঙাই ঘটিবে। यत्न (य त्मर्गाङ् भूरम ना ऐकिंद्र ।। প্রিরজন, চির্দিন কার রহে গ ভালবাসা, কভু, যাইনার মহে।। ছেড়ে যে যায়, যায় জাখির দুরে ৷ ছাডিতে পারে কি. সে হদর পুরে ?৷ তাহা না হটলে, আপনা ভাবনা। এবৈধব্য জ্বালা ঘুচাতে পারনা ?৷ " স্বমার মুখে, শুনে এ ভারতী। বিরজার মনে, উপজে ক্ষুর্তি।।

ारावल मान्य मान्र।

"ভেকে গেল লাজ, ক্রেম কথার কথার। । ।
মন খুলে সব কথা কহিবে এখন।
যুটেছি সখীর ভাবে, কি কথা গোরে লুকাবে ?
অন্তরের কথা ল'রে, করি আলাপন।।"
বির্জা এসব ভাবি কহে পুনরার।।

''এ কেন ফেবন মন, সঁপিবে বাহারে। সে কেমন লোক ভা, কি, পেরেছ জানিতে। অযোগ্য জনের করে, সম্পদ অর্পণ ক'রে, পরিশমে পরিভাপ হয় যে ভূগিভে।। ভাতিই সভর্ক করে, দিতেছি ভোমারে।।"

হাসিয়া কহিল ধনী, "এ কথা নুতন! প্রিয়জন ভাল বই, মন্দ হয় কার ? দত্ত বস্ত এহীভার, ভার গতি গতি ভার, জানা পরিণাম, ভাহা ভাবিব কি, জার ?! এ কথা না ভেবে, এড চিন্ধা কি কারণ ?!"

সে কথা ভাজিরা, পুনঃ বিরক্ষা স্থার।
ভূমি যে বেসেছ ভাল, সে, কি, তা, রুঝেছে?
সে আমারে ভাল বাসে, ভা ভেবে যে স্থাও ভাসে।
ভাতেই প্রত্যাশা, যাহা হ্বরে জামেছে।।

একথা অবশ্য রুঝ, বাছল্য বলায়।"

এ কথা শুনিয়া ধনী, করিল উন্তর !

'তুমি কি জাননা, ভালবাসা কি প্রকার ?

লেবাসা পাব আলে, কে কাহারে ভাল বাসে ?

গ্রাণে ভালবাসি কি, ভাবিয়া উপকার ?

শিশী ভালবাসে তা, কি, জানে জলধর ?

কথা শুনে বিরজার, সুথে মন কোরে।
বাড়াতে দে সুথে, হাদি আবার সুখার।
ভাল বাসা দৃদ্ হেডু- বৈবাহিক বিধি দেডু,
বিষয় ভাবিয়া, কে, না কবে এ কথান।।
ভাই বলি কি হবে সে, না চাহিলে ভোৱে গ্র

ভেনে যেন ছংখ বলো, সে ভাবের রবে।
উল্লর করিল ভাও, মধুনাথা ক'রে।

" ধনে থান গবে করে, নে ভার না পার করে,
ধন-আশা ছেড়ে গে কি, লোকে যার ম'রে।
মার পাকে এপক্লে, সাদৃশ্য ভাই হবে।"

বদিও মনের অনুমোদিত কথনে।
ু বিধা জন্মেনাই, তরু যেন ক্ষমার।
চ মকি উঠিল প্রাণ, বদন হইল স্লান,

লন্দেৰ দৰিত চিস্তা, উঠে বার বার ॥ ভাবিতে লাগিল, কি, যে, কড মনে মনে ॥

একবার ভাবে, " যদি না পাই ভালানে। এখনি এমন, পরে নাঁচিব কেননে। আবার মনেতে ২৯, না পাবার কথা নয়, ধুবভী থাতিলে ভ্যজে, না দেখি সেজনে। মোর প্রভি বৃতি, ভার হ'তেণক পারে। ।

একবার ভাবে, "বনি না হয় তেমন। বৃধা ইচ্ছা চ'লে যাবে, না ফিনিবে আর। ভালবাসা হবে কাল, মুংখে যাবে চিরক্থে।" পুন: ভাবে, " যাবে কি, জানালে এ বাপার। পুক্ষেও চাহে, করি রমণী রঞ্জন।।"

থকবার ভাবে, "তার মনের এতন,।
বার্থি না হ'ই, ডবে কি হবে যাছিলে?"
পুদঃ ভাবে " তার দনে, চথো-মুখী বেইক্ণণে,
এক মনে মোর প্রতি, যেরপ চাহিলে।
মনে না লাগিলে, কেন চাহিবে জেমন ।"

একবার ভাবে, "ভার রূপ যে প্রকার।

विकीत गर्न ।

তেমন বা হ'চে, গুণে মৃদ্দ যদি হয় ?" আবার তাবে এরপ, " ভুলেছিও দেখে রপ, সোণায় সোহাগা হবে, গুণ ভাল রয়: ফলে গুণ-শুন্য নয়, জেমন আকার ॥"

প্রমা ধে মনে মনে, ভাবিছে বিজয় । ভাকার প্রকারে ভাষা, বিরজা বুঞ্চিয়া। ভাতিল, "এ ভাবনার, কারণ কথা আমার, ভাল ক্যিনাই, তুর্ক বিভর্ক করিয়া। । কিয়া ভাল ক্রিয়াছি, বুঝিনে উত্তর ॥

এখনো আনেক কণা, আছে জিজানার।
ইহার মনের কথা, করিয়া প্রবন।
তার কথা ভার ঠাই, জানিব যা জানা চাই,
বুঝিতে হইবে, যথ কাহার কেমন।"
এতভাবি ধীরি ধীরি, কহে পুদর্ঝার।

" ছ্যনে! ভোমার, নব অনুরাণো, দেখিয়া ভনিয়া, হেন বনে লাগো, প্রেবীন প্রণর, বেব হুনে জাগো, পাষাণেতে রেখা প্রায় গোঃ।

ভবাপি ভোমার, এই প্রেম-সাধ, বোচেনা, মুচালে ঘটিবে প্রমাদ,

ধুৰিতেছি অভিপ্ৰায় গো।।
এখন কেমনে, হইবে নিলন,
ভাহারি উপার, ফরিছ চিম্বন,
সহেনা বিলম, মনোফড ধৰ,

পাছে অদমন হয় গো।"
হাসিয়া কহিল গনী এই ভাষ,
"মুঝে সুকে কেন, কর পরিহাস,
যা হয় করনা, উপায় প্রাফাশ:

ভোর মনে কিবা লয় গো। ॥"
বিরজা কহিল, "রেখেছি ভাবিয়া,
সঙ্য়ে উভয়ে, দিব মিলাইয়া,
কোনু কথা এই, ভোমার লাগিয়া,

দিতে পারি চাঁদ খ'রে গো়। ভোর বিবাহের, কুল কুটিরাছে, দুরে ছিল বর, যরে আসিয়াছে, যোগাড় করিতে, যাহা বাকি আছে,

ছ্দিনেই লব ক'রে গো।
ভাল বল শুনি, ভোমার বেরপ,
হ'রেছে লে মন, দেখারে অরপ,
ভূমি কি করিতে, পেরেছ সেরপ.

ঠকিয়াছ বুঝি ডায় গো? অপরপ দেখে, আপনা ভূলিয়া, কাড়ি নিলে মন, সহিয়া রহিয়া, ছাড়িদিয়া চোর, বিরলে বসিগ্না,

কাচ-পোকা-ধরা প্রায় গো।"
ধনী বলে, " আগে, এ মন হাবায়,
করিণী বিনা কি, করি ধরা যায় ?"
বিরজা কহিল, "ভবে ভূমি ভার,

পেলেও ধবিতে নার গো: !"

"পারি কি না পারি, কিরুপে বলিন
জার মনোভাব, আমি কি বুঝিব,
গণিতে জানি কি, গণিয়া দেখিব,

তুবি হ'লে সব পার গো॥" সুৰমা বেমন, এ কথা কহিল, বিরজা অমনি, হাসিয়া বলিল, "তবে তুই কেন, এ কামে এলি লো।

ভোমা হেন ভোমা নাই গো! চিত্রিভ করেছ, আদর্শে বাহার, চোধে দেখনাই, স্থরূপ ভাহার ? চিত্রভ র'য়েছে, দেশ একবার,

मध्य दूरक प्रथ छाडे गा । नक्छ इडेटन, नज्ञत्न नज्ञन, शिवंच्शेव मन, करत ज्यांनाशेन, किन, कि, र्खामोर्ड रहन नाई यम,

কেমন ভাষার মন গো ? আহা, বটে, ভোর, হেথা নাই মন, না পাকুক মন, আছেও নয়ন, ভারি হ'তে মন, করে বিলোকন,

শে যে যোমে, কি কেমন গোণ নিরাকার মন, কননায় ভাষে, নরনে, বদনে, ইক্ষিড প্রকাশে, পা্থারাও ভাষা, বোরে অনায়াসে,

তুমি বেংশনাক ভাও গো: "
হাসিল সুষমা, নে কথা শুনিয়া,
ভাহা দেখি পুনঃ, হাভ নাড়া দিয়া,
বলিল, "ডুমি কি, আমারে ছলিয়া,

কথা লুকাইতে চাও গো ।?"
ধনী বলে, " আমি ছলিব তোমাকে ?
ধাইর কাছে কি, পেট ছাপা থাকে,
এখনো সরমে বাধিছে, আমাকে.

নিলাজ করিলি, তুই গো।"
বিরক্তা বলে, "কি লাজ লো চতুরে!
পুরুষের কাছে, বেচে এলি ক্তুরে, কালি ঢাক বাজি, জারাইবে দুরে,

इं किन वह इन् हे (भा॥" धनी वरल, " जूरे, भरमत्र माध्यरक, वर्ष्ट दें तम निमित्त नगत्र करमार्ख, द्रधु खन कथा, द्रश्न ना, श्रांतिए, খুখে ছাড়ি, কাষে ধর গো !" दिशका उटल, "कि, इहेलि भागना. मगरा मा इंति, कति, किन् कन ? तिथमा कि कति, रं अमा ठक्षन, इंपिन नयूद्र कत्र ली ।।" श्वया वल, " व इतिन अहिव, यान वीकि जत्व. भागम बहेत. অধীর মনেকি, বুঝাতে পারিব, ना (मर्थ- १म मर्गाइरस (भा १ निकटी इरहरू, सिधिया नयुरन, (कानद्रानं, तुवारेएड शांद्रि मान, कि शिहा क्यारन, दूबांद नग्रतन, **जस्त** रेथत्रक व'रत्न भी ।? একে ভার দেই মধুর মূর্যভি,

স্থু স্থু ভাষা, দেখিয়া বির্ভি, আর কি, হইন্ডে পারে গো ? যথন সপ্রেম ভাবে, সে চাহিবে,

যাবে ভাছে মনে, জনমিল রজি.

হ্বমা কি আর, ফিরিডে পারিবে? গরবে ভথমি, গলিয়া বাইবে,

দেখি সে দেখে আমারে গো। সেই আসি যবে, দেখেছি ভাষাত্র, ফিরি ফিরি চার, ফিরি ফিরি চার, আড়ালে এসেছি, ভধাপি আমায়,

দেখিতে যতু ক'রেছে গো।, এই কথা যেই, বিরজা শুনিল, হেসে খাড় নেড়ে, বলিয়া উঠিল,

* দেবে আর কিবা, জানিতে রহিন

ভোতে গে, থেস মজেছে গো।।
ভাই ভাবি এ, কি, ঘটেছে কোপার,
মদনের ফাঁনে, কে কোপা এড়ায় ?
চুরি ক'রে চোর অমনি পলায়,

কাম যার কাছে কাছে গো! ভবে ভোর আর, ভাবিতে হরেনা. সেই ভোর লাগি, করিছে ভাবনা, মন্তন করিতে, বিলম্ব সবেনা,

(जह श्रथ (हरता, आह्ह त्ना ॥ आत्रा छोट्न किहू, बनाहे स्टब्ना, बिल्टि आह्न, छाड़िन्ना मिटवना, निम्नि अनुभृष्ठि, मिट्ड शाहिरवना, কর্তারে রুঝাতে, গাই গো।
গাঁথ মালা তুমি, মনের মতন,
যে মালা বদলি, কিনিবে রতন,
এ কথা বলিয়া, করিল গমন।
ধনী রখী, দেখি তাই গো।

স্থ্যার হৃদয়ে, উদিল পুনঃ ভাবনা । ভেবে ভার ভঙ্কি ভাবে, সাদিভেছে অনু ভাবে, দেও কি মনেতে ভাবে, অনন্যমনা। জীবি কিন্তু মোর প্রভি, করেছিল ধারণা।।

অনন্তমনার আঁখি, দেখিরাছি নয়নে।
এক ভাবে স্থির রয়, সংজ্ঞা-শূন্য মনে হয়
এ আঁখি তেমন নয়, কেত্রিক সনে।
ভ্রতি চাতৃক যেন, চার বারি-বাহনে।

এ প্রকার ভাব, যার প্রকাশিছে নয়নে।
ভ্যাগ করি দৃষ্ট জন, অন্যে ভাবে ভার মন,
কভু কি হবে এমন? না লয় মনে।
দে চিস্তা অবশ্য, নব অনুরাগ কারণে!

মোর প্রতি তার বদি, অনুরাগ নহিবে !

নতুবা ভেমন ধারা, প্রাণ্থোলা ভাবে ভয়া, চাংনি ছ্থ-পাদরা কেন হইবে १। বিভিন্ন ভাবেডে কোথা এড গুণ পাইবে १।

ভাল পূন: ভাল ক'রে দেখে আসি নয়নে ৷" প্রেম-ভরে ধনী ধার, প্রথম দেখা বথার, পথে দক্রন পায়, বাঞ্চিত ধনেএ চমকি থমকি ভথা, নিবারিল গমনে ৷

নে পথ নিজ্জন নয়, সদা লোকে পুরিত।
বদি কেং দেখে তবে, মন্দ ভাবি মন্দ কবে,
বস্তু লজ্জা পেতেহবে, হবেনা হিত ।
দে ভারে, প্রকৃত্ত-মুখ-পত্তে হরে গোপিত।

কটাকে চাৰিয়া বেখে, মনোরর নেহারে।
চালে বায় ফিরি চায়, ছুডনা করি দাঁড়ার,
পায় পায় লেগে যায়, চলিতে নারে।
সে ভাব দেখিয়া ধনী, ভাসে স্থৰ-পাধারে।

এমন কি হয়, মন, মোর-মড-না হ'লে ? কেবল দেখে আমায়, কারো পানে নাহি চায়, আংগ-পাছে কড নায়, রপনী চ'লে।"

এ নিখাদে স্থবনার, প্রেম আরে। উথলে ॥

भिर्थ भिर्थ (तथा-(तथी, शांग छेरत इस्ता मा । धनी किति घरत गांग, नेतर खारम वामांग, निना गांग (मांखाभांग, हैं। एनत क्या ॥ (इन कारन (तथा दिन, सञ्चा) हैं। स्वाखना ॥

বসাইতে দেবগণে, রক্তাদ্বর পাতিল। পথ-শ্রান্তি শান্তি ভরে, ধীরি গীরি বায়ু সরে, পক্ষী গণ আসে ঘরে, যে যেথা ছিল। সন্ধামুনি ঋ'দি ফুল, পূজা হেতু ফুটলঃ

বিলাসী লোকের। চলে, সমীরণ সেবনে। জলাশর-ভীরে, গরে ডক্তেরং বন্দনা করে, বাজি জ্বালি আলো করে, রমণীগণে।। সন্ধ্যা সমার্গমে সবে, স্থানী ছলো ভূবনে।।

কিন্তু এত আদরেও, সন্ধ্যা নাহি রহিল । কত কার্য্য আছে যেন, গোল হ'য়ে ব্যস্ত হেন, থাকিবেনা ভবে কেন, আদিরাছিল ?। আদরেতে বুঝি, মনে অহস্কার হইল ?। সন্ধ্যা গেল রাজি এল. সৃদ্ধু মৃদ্ধু গমনে ।
নাহি তার অফস্কার, সবে বাধা গুণে তার,
কার্য্য তাজে বে যাহার, স্থাতি মনে ॥
বিশ্রাম বিভারে লোকে, নিজে পাকি যতনে ॥

নিশা আগিমনে, গুইয়া শগুনে, রুমুপ্তি, অপনে, কেবা না চায় ? श्रथम मिलान, विष्कृत-एक्तान, দম্পতীর মনে, স্থান কি পাল ?! निशा जागमत. ७३१। अस्त. স্থ্যুপ্তি হুপনে, কেবা না পায় : विक्रम नरदस, भुक्त बादगानदस, **ठिखांत निलास, क**ञ्जू ना याग ।। শ্রৎ হথন, করিল শহন इक्षनी ज्यन, मध्यक ठाति। क्टर ब्राजि यात्र, निका माँहि शात्र, নিজায় কে চায়, ভাৰনা ভারি !! মন উচাটন. করি দরশন, মনের মতন, সেই যুবতী। किएइ नाना (मर्ग, किर्त्तत्र केंट्रिंग, সার করে শেষে, এই যুক্তি॥ "कहिर राजन, धा नाही-ताजन,

দিতীয় সর্গ ।

क्तरवात थन, र्'रल स्वामात। नकन জीदन, नकल (योदन, শফল ভাষণ, হয় এবার ৷৷ अ मानामाहिनी, ना क'तन शहिनी আর কি জমনি, পারি বাঁচিতে : এর হ'তে জার, রূপ নাহি কার. পাকিলে এবার, নারে মোহিতে এ ाइन शर्त्रमः থেমন ব্রগ্ন চাতে আঁথি মন, ভাই মিনেছে। বিধি ভ্ৰিম্ন, গ'ডেছে বেমন, সময়ে তেখন, মুটে প'ডেছে 🗥 धमालि ध धन, नाज खना छन, মের আফিক্স, বিফল হয় ! বুকু ফেটে যাবে, প্রাণ বাহিরাবে. মৃত্যুর কভাবে, দে ছুখ দয় ?! নাটিছে নয়ন, বুঝিল্ডে মন. ভালের लिখন, হবে আমারি। ভাষা নাহি হ'লে, অ'পনার ব'লে. ভেবে মন ভোলে, রূপে তাহারি ।। সে হবে অংগার, আমি হব তার, দে বৃঝি ইহার, ভাষ পেয়েছে।

ভাই ফিরে যায়, ফিরি ফিরি চায়,

ভাবেতে আযার, জানায়ে গেছে 🛭 পরে কি কথন, নয়নে নয়ন,

দিয়া ঘৰ খন, পারে দেখিতে গ নহে এক বার, দেখি পুনর্কার,

সেই ভাব ভার, সেই স্মাঁথিতে !: এ সব ভাবিয়া, ধৈরজ পরিয়া

মনে বুঝাইয়া, পারে রাখিছে। নাহি হেন জন, ভবু এত ক্ষণ,

আমার ও মন, আছে ভাবিছে। আর কে বইতে এখনি ছুটিভ,

ভাহার ষ্কিন, প্রেম-আলায় ৷ নাত সংগাহণ, ও স্ব হটন,

বড় বিচক্ষ, জ্ঞান হারায়।
আশা হিতকরী, ভা**ই কাল** হরি,

ও হেন সর্বারী, যায় বহিয়া। আশা ক'রে আরু ওরপ গুকার,

থাকা হবে ভার- ছু**খ স**হিয়া। ফলে যে আমার, আশার স্লশার,

হবেই ভাহার, বড় ভরসা। মনে মন টানে, বুঝি অনুমানে,

কিছু পরিমাণে, তার এ দশা। বদি তার মন, আমার মতন,

বিতীয় সর্গ।

হয় কভক্ষণ, হবে মিলিছে 🤊 ভবে এই ভয়, স্বাধীনা সে নয়, স্বহুং পরিণয়, নারে করিছে !। বাড়া পিড়া ভার, করি অভিচার বদি একে আরু, করে উভায়ে / কি হবে ভখন ? হবেনা এমন थियोकि कथन, जाए**ड श**शरहाः। সে বদি আমাকে, ভালবেসে থাকে, ভবে কি ভাহাকে, আমি পাবনা? পাৰই পাৰই, সে, যে আমা বট, कारल निर्ल ७ हे. करव यावना !: বাসনা যেখন, ঘটিলে ভেমন শ্বসের ভূষণ, ক'রে রাখিব। केंद्र लाक जगु, भूथ माहि करा, रत्न शिक्षा नम्न, ऋत्थ थाकिन १। कतित्व मिद्राम, हांडियमा जान. लदाहि मद्यांग, छाई गांवित। निकटि थाकिय, नग्नत्न (मधिय' প্রণয় রাখিব, নাম জপিব।" শরতের যন, 🕟 কভই এমন, বচন রচন, করে জাগিয়া ৷ রাতি বহিষায়, স্থবমা কোথায়,

ष्ट्रां ना प्र्यायः प्रिथ व्यक्तिया ।।

একি বিষয় ব্যাপার :
দেখিতেছি সুখ্যার - খেন পাগলিনী প্রাণ্ত,
একে বায়ে সকলি বিকার !৷
যেন সে সুখ্যা নয় !

হইরাছে এল থেল, বকিতেছে এল মেল নিদ্রো নাই, নিশীথ সময়।। অসুরাগ কি তীয়ণ!

জানিতনা কোন স্থালা, নিতাপ্ত নধীনা ব্যক্তা:

এত জ্বালা পরের কারণ !৷

এ যে পর ব'লে পর ৷

কাপনি কে ভা জানেনা, সেই হ'লে: ৩% ৫১ন:, প্রাণের ক্ষিক প্রিয়ভর।। আজি হইল এমন।

মদন পাগল না কি, কি ক'রেছে,থাকি থাকি, ভাক প্রতি কঠিন শাসন ?। সতে আঁথির মিলন।

কিন্তু ভাবে বসি পাশে, যেন আলিঙ্গিতে আসে, হেন মুগ্ধ ক'রেছে মদন!। কভ করে বিবেচনা।

র্নাড়াইয়া পুরোভাগে, ধরিতেচাহিলে ভাগে-

দেখ দেখি কামের ছলনা !।

সারে ধরিয়াছে জ্ঞান ।

'আমি মরি ভাল তরে, সে বুঝি ঘুমায় ঘরে,

এই ভাবি করে অভিমান ।।"

কভু করিছে শ্রেণ ।

মিলন হয়ত ডবে, যে কাষ করিছে হবে. করে অন্য দম্পতী যেমন।। হ'লে মিলনে ব্যাবাত।

কি উপায় করা চাই, আনো বির করে তাই, যুক্তি মতে জনয়ের সংং।। আজি স্থয়ার মন।

হুইয়াছে কি প্রকার, সেই **জানে এ পেকার,** দশা ভোগ ক'রেছে যেজন।। বিধি কি খেলা খেলায়।

কোথাকার বস্তু আনি, মিলায় কোথায় টানি, নি নদীর সাগর-সঙ্গ প্রায় ।।
দেখ কেমন যোটন।

ধেমন হ'রেছে দেখা, গার ঘেন ছিল লেখা, প'ড়ে চেনে যে বার আপন।। চিনে আপনার জন।

যাবং মিলন নয়, ধ্যান ক'রে সুথী হয়। কাম কেন জ্বলায় 'এখন ?। বড় ঘুট রভিপতি।

ছই জনে ঘুই স্থানে, হানি পঞ্চ পঞ্চ বাণে,
দেখাইছে নিজের শক্তি।।
ভাল মকবকেতন।
ভূমিই জাঞ্জ জাজ, আন্ধে কি না কহিছাছ,
আনক্ষেই প্রভাপ এমন।।
কিন্তু ভোমার প্রভাপ।
দম্পতী সহিতে নারে পূর্ববাগে কি প্রকারে,
মহিবে ? দিওনা আর ভাপ।।
আজ করহ প্রস্থান।
গ্রথন ভোমারি কবে, কভ রম্ব দেখ পরে,
শান দিয়া রাথ পঞ্চ বাণ।।

কভ ককে পোহাল রজনী।

স্ব্যার মনে কত, আশার সঞ্চার।

বিরজা এখনি আসি।

শুভ সমাচার দিবে, হইয়া উল্লাসী।!

পূজা মানে কত দেবভার।।
বিরজার আশা-পথে, চার আর মনোরথে,
নানা অভিলায হ'তে, করিছে বাছনি।।

वित्रका कांत्रिशा (नथा मिन।

আসা দেখি আশু, মনে সুখের উদয় ।
কিন্তু মুখ নিরখিয়া।
মনের অর্দ্ধেক সুখ, পড়িল ধসিয়া।
সঞ্জে সঙ্গে জন্মিল সংশয়।।
"অতীক সাধন হডো, এ মুখে ইাসিত কড,
দ্রন্টে বুঝি আশা, বিফল করিল।।"

"আশা-তরি ডুবেছে তুফানে। কেখনে কহিব, এই কথা স্থ্যায়। কেন লইলাম ভার। বিবাহে করাব মত- গৃহিণী কর্তার॥ হলোনা তা ভনান বে দায়।। এখন কবেনা বলা, পারে ভার হবে সলা,"

না স্থাতে আপনি কহিল।

"পোড়া কায়ে, অবসর নাহি মরিবার।

যিছে কায়ে গেছে কাল।

আজ সব কাব সেরে, সকাল সকাল।।

শেব করে লব-নে ক্ষার।।"

গ্রহ কথা কহে মুখে,

স্বহা মনের ভাব, বুৰিজে লারিল।।

সুবমা কহিল, "এ কি কথা।
কাষে কাষে দিন গোল বুকাও আমারে।

কিছা কথার কোশল।

ভূলেছিলা সভা কথা। প্রকাশিয়া বল।।
ভালবাসা বলে কি ইহারে।

কাষ হলোনা বড় অন্য কাষ হলো দড়,
কাষের মান্ত্র কাজ করে কি অন্যথা '!।

বিরজা উত্তর দিল হাসি।
"জানি আমি এ কথা, শুনিতে হবে লেহে।
ভোর কাহে হেলা মোর?
এই কাষে এই বিহেচনা হলো ভোর গ।
এমন শুনিনি কোন দেশে।।
আজ কাল অন্য জন, হইয়াছে প্রিয়জন,
আমিও হ'লাম পর, মুচিয়া হিভানী ?।"

পরক্ষার এরপ প্রকারে।
কহিছে অনেক কথা, বেলা বেড়ে যায়।
বিরক্ষা বিদায় লয়।
স্থামা বিদায় ভাবে, ভাবি-পরিণয়।।
এই ভাবে সে দিন কাটায়।।
প্রতি দিন ছল ক'রে,
বিরক্ষা সময় হরে,

सूरमा कि कड़, कछ मरू दांदत दांदत ।।

স্বমার যিলেছে দোষর ।
কহিরা মনের কথা, নিবারয় চুখ ।
শরতের সঙ্গী নাই!
এক মনে এক ভাবে, ভারে সর্বদাই !!
আহা ভার সামান্য অসুখ ।।
মাশা যার পিবে মধু, বহু সিন গত স্বধু,
চক্ষে বেখা ভিন্ন, অন্য ঘটনা হুজুর ॥

নার প্রিরজন কাছে- পূর্বরাগ জন্মিয়াছে,
বৃষ্ণা ভারে কড় দিন, হ'রে বেঁবে রাখিবে ?

যন যে ছুটেছে ভার, ভারে কেবা রোধিবে ?
বল উড়ু উড় করে, বাধায় চাপিয়া ধরে,
সময় পাই'লে, সে কি আর ঘরে থাকিবে?
প্রিয়জন ঘেণা দেশা, উড়ে গিয়া বনিবে ঃ

না ভেবেছি হলো তাই, বিরজা কি বোরে ছাই, মিছা মিছি ছল করি, দিন নম্ট করিল। এখন রাশুক ছলে, সুষ্মাত চলিল!! হাত বাড়াইলে পায়. প্রিরজনে প্রেষদায়, এভেও যে বাঁধা ছিল, ছুরদৃষ্টে বাধিল।

প্ৰিত্ৰপ্ৰণয়।

ए डाष्ट्रके सू श्रेत्रक्ष, এक नित्न इहेल !।

শরৎ বসিয়া ঘরে, যেই মূর্তি ধ্যান করে,

একেবারে দেই মূর্তি, পুরোভাগে দেখিল :

সফল-সাহন-যোগীসম স্কংখ ভাসিল !!
আহলাদ ধরেনঃ গায়, জাখি মন মেংক পায়,

সজোব প্রকাশে হেন, কথা নাহি ক্ষুবিল :
কপন, কি নহজা, চিন্তাঃ ভাস্ত করিল !:

শুস্ত ভাব দরশনে, সন্দেহের আফ্রেমণে।

শুস্থ পশিভে চাহ, সুথ তারে রোপিরা।

गাত্তিক ভাবের সঙ্গে, প্রবেশিল আসিরা।

হলো বটে অভিসার, তিবু না কি ললনার,

সরম পরম-বন্ধু, সাবধান করিয়া।

সাত্তিক ভাবেও আসি, রহে গুপ্ত হইয়া।

যৃত্ব হাসি মধু-খরে, "বিরজা কি নাই যরে দ ভবে কেন আসিলাম," ব'লে মেন ভরিয়া। দাঁতে দাঁতে জিহ্বা কাটি, ধনী যায় চলিয়া। ভখন শরৎ ভাবে, "বরদার বর লাভে, বঞ্চিত হ'লাম, হাতে অধিঠাত্ত্রী পাইয়া।" ডেকে বলে কাতর, বিনয়ী ভাব ধরিয়া। শ্বিরজা না থাক দরে, এ ঘর কিষের তরে প প্রতি বাদিনীর প্রতিপদ-ধূলি পড়িছে। বিশেষতঃ বিশেষ সমস্ত্র তব সহিতে। ধাও বৃথি মোর ভরে, বল নতে যাই দরে। আমিত বেখেছি ভারে, ভোষা ভালবাসিতে। ভালবাসা ফিরি যাবে, আমি পারি দেখিতে?

हेक्त ना गाप्त (६ए७) जात तुना त्या १६०७ हात नावि भाषा भाषा, भाषा, भवा १६७॥ १८४न। १ कथा ७ जीरत कियु, भारत कथा करतन। १ ५३ १००० भनी किरत, खाषा क्षेत्रिका थीर्य, "क्षांभिरत क स्थरण स्विध, क्षांचा भाषा गर्यना। १ नाज खेळा जामि शुंनः भिरत जाना भरवना।

শরং জাবার বলে, "আসি কেন যাও চলে? আসা যাওয়ানেই, কভু বসা দেখা ঘটেনা। গসিলেত ক্তি নাই, অপ্রান ছবেনা।। কেছ কারো বাড়ী এনে, এস, বস, সবে বলে, ভাই বারে বারে বলি, মন্দ ভাব লবেনা। না বস বসনা কেন, বল মন বোঝেনা।?"

भूनः बल ऋलावना, "विद्रका दुखि अलाना,

ভবে বাই এলে পরে, ফিরে নহে আসিব ?"
শরৎ বলিল, "বল ভারে ডেকে আনিব ?!"
ধনী ছল জোধে কয়, 'এ ব্যাভার ভাল নয়,
অনেক স্হৈছি, পরে আর নাহি সহিব!
বিশ্বাসের কায় এই ? বিরজায় কহিব !!

এ হেন নিজ্জন-ভূমি, একাকী বিদেশ ভূমি.

একাকিনী মোরে, জুমি কড় কথা কৰিলে।
ভেবে দেখ কি ভাবিবে, লোকে ইছা শুনিলে।
ভাছ হেখা করি বাসা, ভবু করি মাওয়া আসা,
বিশ্বাস করেছি, ভূমি ভাষাও না বুঝিলে।
বলিলে যে কথা, কোনু সার্ল্যাতে বলিলে?।"

শরৎ উত্তর করে, "অবিশ্বাদী বল মোরে, অন্য লোক হ'লে পরে, কি জানি কি ভাবিত! আমি নাকি ভালবাদি, ডাই নহি ছংখিত ! ভালবাদে যে যাহারে, কত কথা বলে,ভারে, সে ভাল বাদিলে দে, কি. ভায় করে দৃষিত? যে ভাবের ভালবাদা, সে ভাবে সে বুকিত !

যদি বল দেখে চোখে, কেন ভালবাসে লোকে,
বুৰাবার নহে, ভাল বাসিতে ভ বুৰিতে!

ত কথা করি জানণ, যেন সুহমার মন গ'লে গাড়াইয়া ফিরি, এল পুনঃ দেখানে।
ছলে চ'লেছিল পনী, ছেথা ছ'তে ওখানে।।
নিকটে বাগান ছিল, ভারি কাহে পালটিল,
ব'লে 'যদি আসিরাছি, তুলি ফ্ল বাগানে।
ফল তোনা রোগ, ছেড়ে দেতে মন না মানে।।"

বিরজা আড়ালে থাকি, দেখা গুনা নাহি বাকি,
কথা গুনি মনে মনে, ফল 'গুলো বুঝেছি ?
কেন্ে ফল ভোলো আজি, দেখিবারে রয়েছি ""
শরং কহিল পরে, "কি কাম আলাস ক'রে,
চাহ মদি দেই কভ তুলে ঘরে রেখেছি ?
আহা, তা ভোমারি ঘোলা, যাহা আমি তুলেছি।।"

এক বার কথা ক'রে, গেছে ভার-ভারা ছ'রে, উত্তর করিল ধনী, "কায কি সে ফুলেডে! আমি কি সাধিব বাদ, অবিবাদ-সাধেতে?

भारति धन्ते ।

কেই আছে ভালবাসা, তাহারে তুবিতে আশা; যতনে তুলেছ খুল, লেগেছে বা মনেতে। মন লাগা ফুল দিয়ে, ক্ষুগ্ন হবে মনেতে!। "

ভেবে এ কথার রাগ, রাগ নহে অনুরাগ,
রুঝিতে পারিয়া, শরতের শকা ঘুচিল।
এ ফুল অগাধ-জলে, এতক্ষণে জানিল।।
ছাসিয়া উত্তর দিল, 'এ কথা জানা নাছিল,
মন ভারে ছাড়ি রয়, যারে ভাল বাসিল।
ভাইলে অন্যেরে ভালবাসিতে কি বহিল ?।"

এ কথার ভাবে ধীরা, ভাবেতে হ'লো অধীরা,
মধু-পান-ঘোরে যেন, মোনবতী হইল।
শরং সম্বতি ভাবি, ফুলগুলি আনিল ।
হাতে ভুলে দিতে বায়, বিরক্ষা আসি তথায়,
"স্ব্যুফুল কেন দাও, অপেকা না সহিল ।
মানা গেথে দিই দাও," বোলে হাত পাতিল।

বিরজা যে সব জানে, শরৎ তা জানেনা।
বড় লজ্জা হ'লো দেখে, হেঁট-মাথা ভোলেনা!।
বিশ্বজা কহিল, "মাথা ভোলো আর ভয়কি?
সঙ্গী ভাঁড়াইয়া, প্রেম করা কারো হয় কি।?

অ্যমার অনুরাগ, ভাল মতে জেনেছি! দ্ৰব অনুৱাগ, ভাৰভক্ষি দেখে বুৰেছি।। क्रकुत्रश मिनिशाह, (मर्थ ऋषी ह'रशहि! ভাতেই আদন্দ কালে. যোগ দিভে এদেছি ''!৷ वित्रजादः वाधा मिश्रा, विस्नामिनी कहिल। "मतिकि इत्थत वृथी, स्तथ स्थी आहेत!। যার রেগে তারেই, ঔষধ হ'লো খুজিতে किरमत आश्रीय तरह कान् कार्य नागिए ?। च ढेक इहेशा निध्न, घडेकालो कतिशा । আছা কি ঘটক, গুণে লগ্ন যায় বহিয়া !। षाट्ड अट्ड कांने हिया, मधकान विश्वा। উলু निष्ड आहेत्नन, हुँ छो रान धाहेशा॥" বিরজা কহিল, যার লগ্ন যায় বহিয়া। क ना जारन रम, थारकना, घंठेरकरत्र हारिया हा एरनाइ रहना निरह, लक्ष कथा नहिला। এ বিবাহে হয়নাই, আজি তুমি কহিলে 🖟 मध्य थाकि, भत्र किश्ल, "(म, कि, विद्वर जुमि थाकि चर्रक, इर्प्यान क्म महरण है। वित्रजा कहिल "आमि, ভাवित्राहि श्रुप्रता । थेकारभा विवाह निव, स्थ हरव श्रेश्त !। কত চেডা করিলাম, কিছুতে বা বচিল। कन्मार्थाक या करा, लात्र संदा शिखन ॥"

মুখীমা কহিল "ভাই, ভেম্পে কেন বলনা।
চেফাড় করিলে, কি করিবে ফল হ'লোনা!।
এখন উপায় কর, সব নিক্ ভাবিয়া।
ঠেকিতে হয়না যেন, কোন দারে পড়িছা।
হিভাশিনী ভোর তুল্য, কেহ নাহি ভুবনে।
কহিনু পেটের কথা, দেখা রেখো শ্বরণে।।"
বিরজা কহিল, "আমি প্রাণ-পণ ক'রেছি।
এ প্রেম'বজায় জন্য, দৃঢ়-ব্রেড হ'রেছি।
পরিণামে কি কর্ত্তব্য, ভাবিয়াছি আগেতে।
এখনো উপায় দেখি। প্রকাশ্য বিবাহেতে।
ফলে ভুমি ভেব'না, ভাবনা যা ভা আ্যারি।
যাতে ভাল-হয়, যুক্তি ব'লেনিব ভাহারি।

যে যাহারে ভালবাদে, দেও ভালবাদে সে যেমন ভারে।

কেবল ইহাই জানি, যত সুথ অনুমানি, পরিমাণ ভাহারি, হইতে নাহি পারে॥ বেসি ভাল বাসে, জানি কি সুথ যে হয়। কেবলিডে পারে ৈ ভাহা বলিবারি নয়॥

নেই রখ প্রথমেই, শরভের মনে, ু দরশন দিল। কি ভাগ্য ভাহার হায়, ভালবেসে স্বমায়, আশার অভীত ফল, হঠাৎ পাইল । কেমন স্বৰ্গীয় সুখ, জানেনা জজাৎ। জানিতে যে চাও, ভাব হইয়া শর্থ।।

স্বমা, বিরজা, দোহাকার কথা শুনি,
শহতের মন ।
আপনা পাদরে প্রায় ভাবে সুব্দা আমায়,
এত ভাল বাদে কেন, আমি কি এমন ?।
আমার লাগিয়া করে, এত আকিঞ্চন ।
কে জানে যে আমি, হব সুষ্মা-রঞ্জন ?:

আনন্দ হিল্লোলে, অবিরাম হন্-পদ্ম,
লাগিল নাচিছে।
নেখি রসনা রসিল, ভার কোতৃক বাড়িল,
হুষমায় সম্বোধিল কোতুক করিছে।।
"বিনোদিনি। সদয়া যখন, মোর এতি।
ভখন উচিত মোর, বলা হুযুক্তি॥

প্রসন্ন কপাল মোর, ডাই মোর প্রভি,
আনুরাগ ডব |
বদি না হয় বিবাহ,
ডবু হবেনা বিরহ,

নিভাস্ত আমারি হবে, চেষ্টা ভারি সব।
এ চেষ্টায় যোগ, নাহি দিলে মোরি ক্ষতি।
ভা ব'লে কি, সুযুক্তি দিবনা যথা-মতি।

আমি কেন। ভোমার মনকি, ভা বলেন। ?

এ সব কাষেতে।

শা হয় তা হবে ব'লে, সহসা প্রান্ত হ'লে. পরিগামে মন্দ হ'লে, হবে ছুঃখ পেতে॥ বিশেষতঃ গুকজানে, নাহি দিলে মত। যে কাব হোকনা কেন, হইবে বিরত॥"

উত্তর করিল ধনী, চাহিনাই বিধি.
পণিতের কাছে।
প্রান্ত নিয়াছে যেই, সে বিধি করিবে সেই.
যার কর্মা, ভাল-মন্দ-বোধ, ভার আছে।।
কে জানেনা এ কথায় গুড়-ভাবে ভরা।
আজ্ব-কটি খাওয়া, আর পর-কচি পরা॥ "

শরৎ কহিল পুন: "কর বিবেচনা,
স্থির করি মন।
কখন না চিন্ যারে, বিবাহ করিবে ভারে,
জীবন, যৌবন, মন, করিয়া অর্পণ।।

বর আমি, তরু ওনে, মোর কাঁপে হিয়া। এ কাব করিবে তুমি, কেমন করিয়া ?। "

উত্তর করিল ধনী "ভয় যদি হয়, রহ সাবধানে: কি জানি কি যটে পাছে, এখনো সময় খাছে, উপায়ুক্ত যুক্তি লও সঞ্জনের স্থানে।। আমি ভ মনের বাধ্য অবাধ্য ও মন।

রাখিতে পারেনা এ যে, অজনের মন ॥"
———
শরৎ কহিল, "আারো কহিতেছি হিত,

ভেবে দেখ মনে।

এমন সরল মন, বিদেশীরে সমর্পুণকরিবে মনের মন্ত, স্থাথের কারণে।।

একেন্ড বিদেশী, তাহে সন্নামী এখন।
ভামিবে রবেনা হেখা, কি হবে তখন ?।"

হুঁষমা কৰিল, "কেন হব সন্ন্যাসিনী, পতি-গতি সতী। ভাহা হ'তে মনো মত, হুখ কিসে আছে কঁড, ভাগ্যে বদি থাকে হয় তেমন দুম্পতী।। প্রণয়ে সেভাবে হুঃখ, নাহি ভাবে নারী। পুৰুষে কি ভাবে ভাৰা, বলিভে না পারি ॥

শরৎ বলিল "যদি অসং সে হয়?

মজাইয়া মন ।

দাৰণ লম্পট প্রায়, ছাড়ে পলাইয়া যায়,

কি দশা হইবে ভবে, করনা চিন্তন ?!
ভাই বলি যা করিবে ভেবে করা ভাল।

হ'লে পরে ফিরিবেনা, হইবে জ্ঞাল।!

সুৰমা কহিল, "যার মন যে প্রকার, তেমন সে করে। দে যদি ভাজিয়া যায়, ধরি কি রাখিব ভাগ: নয়ন হইতে বাবে, রাখিব অশুরে॥ ভাহে এই জানা যাবে, সে ভালবাদেনা। আমার যে ভালবাদা, ভাছাত যাবেনা।।

ইহাত পরম সুখ, আনেতে মিলন,
না হ'লে মিলন।
করিব রূপের ধ্যান, 'করিব নামের গান,
আমার এ ভালবাসা, হবেনা খওন।।
মনসুদ্ধ ভালবাসা, অনুরোধে নয়।
বিধবা হ'লেও রবে, বাঁচি যে সময়।।"

थ तकत कथा छनि, भंतरखंत्र मन, धानरफ नाहित ।

কেন না নাচিবে মন ? এমন নারী-রভননিব বজনেতে ভার, প্রণর বাচিল !।
প্রকাশি কহিল, "বাহা ভাল বুঝ কর।
বে দেখি ভোমার কাব, সব স্বভন্তর !!"

কখার কথার গেল, অনেক সময়, বিরজা চেয়ায়।

"ম্বনে! সত্ত্র হও, আজিকে বিদায় লও, আজিকার দেখা শুনা, এই হোক সায়।। বে কর্ত্তব্য কাল ভার, হবে বিবেচনা। এখন গৃহেন্ডে চল, বিলয় ক'রোনা।।,

বাধা প্রায়, বিরজার কথা, দিল বাধা,
না মানিলে নম।

শস্ক্রাকালে চক্রবাক্ট, সমান চঞ্চল আঁথি,
স্বমা শরতে কয়, "আলি রসময়!।

মনে রেখ, যতক্ষণ থাকিব, অস্তরে।

মনে কিছু ক'রোনা কথিত কথান্তরে"।।

मात्र कहिन, "आष व विरक्ष्य-वात्रे,

বৈচে যদি থাকি।
বেখাদিয়া পুনবার. দেখো আছি কি প্রকার
ভুলনা এলোগে, এই কগা মনে সংখি ।
এই বলি গজ-গাড়, করে দরশন।
ভাণু যেশ বেয়ে দেখে, উন্থে গান্ম।

স্তাল-সম্বত গান, ফুরালেও অনুস্-रश राम (भई डाम, लाशिएडर इ कार्म अस्या ना हिक ख्या, जन्म त्यन कुरिन कथा হতেছে প্রণ-গভা, যেখানে সেখান।। न्तिहे भूषि स्विक्त, अभूष्य । प्राप्त १०० সেই ভাব সচঞ্চল, প্রেক্তাক ফ (%) ৮। धके एनटर धक्का, अंबर चुनना-रन नांदि खान यएक्ष, क्रियमंन शिष्ट ।: বাজি হ'লে। সমাগত, অনিলায় মনোমত, িংযা-লাভে মৃতি কও, রাধিল ভাবিয়া। र्ष्यादात निया हेन्य. त्र अवाग तकार ३३, িবেজা হেন সময়, ক্ৰিল আসিয়া) "ম' বাপের অনুমতি, হয় অসম্ভব অতি का जिसे धरे युक्डि, सूरमा के दिहरू। धर्णात्म थाका नांग, त्राव त्रहित्व यथाग् निक्नो क्रेटि ठांत्र, ठकना क् द्वाह ।!

यमि इत्र अख्यिक. ज्ञामात्र मर्गातथः প্রস্ত হইলে পথ, দেই দেখাইয়া।" শ্রং কহিল হাসি, "চাও কি সম্পদ-রাশি, मतिए जिल्लान जानि, चाजन रहेशा १। विश्व एकां व रात, श्रेकामिया कि क्लिमात. গৃহ হ'তে যাবে চ'লে, গোপন, করিয়া ?" विद्रका कहिल. "इटल, छव मद्र याद इ'ल, ত ক্রারে থাইল জলে, দিব রটাইয়া।।" এ কথা কৰিয়া পরে, শরুভেরে সঙ্গে ক'লে, আসি গমা ভীর ধারে, যাইতে বলিয়া। "बर्दात व्यापका क'रत, सूर्यमा मिलिल पात, চলিয়া যেও সত্তর," কহে বুঝাইয়া।। বিরজারে শিফাচারে, ফুডজডা জানাবারে: শর্থ সাদরে ভারে, অনেক কহিল। বিরজা নিবারি তাঁয়, "কাষ নাই শিষ্টভায়," विलया पिया विषाय, विषाय लहेल ॥ कानसूत क्रियादिः त्रहे श्रेष सहिवादिः कहिशा जल्त शाद्र, वानि कानि कशा "क बाहिन लीए बांत्र, बागालत द्वयगंत्र, क्योद्धाउ लास यात्र, डेलास कि इस् ॥ " व अत्न बाहेशा आहम, कह भिन्ना छन्न बाहम. কৰে ৰুমাপতি পাশে এই সমাচার ৷

300 1 1 1 1 1 1/4

ওদি মুমাণতি ধার, জাল কেলি হাতড়ার-শেষে হ'লে নিকপার, করে হাহাকার ম नकानत यानात्रमा. कार्ण छात् निकलमा. द्रम्यो चूरमा नमा, हिनमा उथन ॥ ৰাদি ভথাকার লোক, অনেক করিল শোক, त्रयां निवादमाकः (एथरा पुरन ।। **धेहैं (मांक किंडू) हिन, उहिल मा इ'(ला लोन,** কার শোক চিরদিন, সমভাবে রয় ? ভবে প্রিয়-পুত্র-শোক, আর প্রিয়-পত্তি-শোক, यात्र ध्यत्रमोत्र भाक, जुनियात्र नत् ॥ या, वार्थ, कन्नात उत्तर, कछनिन लोक करत ? বিবাহ হয়নি পরে, কে'বা শোক করে। इरे गान पूरत थन, नकत्न हे जूल (शन, त्रक्ति विष्कृप-(भन, वित्रक्षा-कक्षत्र ॥

তৃতীয় সর্গ।

বর, দূরে গিয়া, অপেকিয়া, পাছু পানে চায়। ক্রমে, বাড়ে রাজি, বরপাজি, দেখিতে না পায়।। কড়, ফিরি জাদে, আশে পাশে, করে **অবে**ষণ। কভু, দড় বড়ি, গাছে চড়ি, কয়য়ে ঈক্ণ ।। কোন, পশু যায়, শব্দ পায়, ভাবে এই খাসে। শুক্ষ, পত্র নড়ে. উঠে পড়ে, চাহে ছুই পাশে।। যধা, হ'লে ভৃষ্ণা, মুগভৃষ্ণা, দেখি মুগ ভোলে । ভথা, ভাস্তি হেরি, শরতেরি, ভাস্ত-চিত্ত দোলে।। ভাবে "বিরজার, কি ব্যাভার, মিখ্যা কথা বলি ৷ कत्रि, পরিহাস, বনবাস, পাঠাইল ছলি ॥ এই অভিমানে, সেই কণে, ফিরিবারে চায়। কিন্তু, সন্দেহেতে, ফিরে যেতে, ফিরে অভি প্রায় 👢 ''বুঝি, সে আমায়, স্বমায়, পৃথক করিবে ৷ धहे, यजदात, अमटाजत, विवाद छान्ति ।। ইহা, বিচারিয়া, ভাড়াইয়া, দিল মোরে হেখা। शालं, श्रुवतात्र, थाकिराम्नः नाहि निर्द रमधा ॥ যদি, ভাই হয়, যাওয়া নয়, ভাহার ভবনে। जिम, शर्थ शर्थ, मरमात्रार्थ, नावित वर्ज्यम ॥ जानि, अवगाय, त्म जायाय, वज् क्रांमवादम । त्म, (या, त्यादत क्रिटेक्स, जारमीमात्क, मरन मा विश्वरित 11)

कति, अञ्चलाञ्च, त्म व्यामाञ्च, विद्वति विदिव । क्ट. वादा दिया. आंशिलया. न्थिए माहित्व ।। ভবে, নারী-রীভি, অশ্পে ভীভি, পার পরে পরে। যদি, নাহি চায়, সে আমায়, ভরিয়া বিপদে ॥ তব্য ছাডি ভারে, এ আকারে, ফিরিভে নারিব। ভারে, দেখে চোখে, ভারি শোকে, শরীর ভাজিবাঃ মিছা, কেন আর, এ কান্তার, ভ্রমি রাভি যায়।" ইহা, ভাবি মনে, সেই ক্ষণে, ফিরি চলিষায়।। श्रीप, व्याप व्याप, इत्याप, इत्ना खानान्य ! "এতে, বির্জার, কু আচার, থাকিবার নয়।। क्बि, शिर्म वांधा, शाह हाथा, अला ना विशित्न। बत्त, अहे मछा। सर छख्, शांव कालि पितन ॥" निभि. (भारारेल, উতরিল, আমের মধোতে। खान, ''बाह्र बाह्य, ऋषबाह्य, बाद्य कञ्जीद्युटक ॥'' धरे. (भाक-चर्त, थत शरत, काॅशिश केंकित। ভাবে. "धकि खाना, म घवना, काथाय तहिल !! দে যে, তাজি ঘরে, মোর তরে, গেঁছে মিখ্যা নয় ! ব্রঝি, যেতে যেতে, বিপক্তে, বেধেছে নিক্ষয়।। কিয়া, পথ-ভান্তা, কুল-কান্তা, যুরিছে কান্তারে। कड, ভাবিভেছে, काँमिखिह, ना मिथ आमारत ।! स्टात, चार्छ श्रीन, चतुनान, रह मा अमन । ं कान, दिर्व्य शक् रहा यक, क'रउट्ड इमन ।।

۲

षान, तम खरला, कि अटकला, ब्राट्ड व्यट्ड शांहरी क्न. शटख म'रत, मरकू क'रत, ना निलाम खारत !! कान भरभ यात, राभा भात, आरह कान स्राम । যোর. হ'লো তাই, কোখা পাই, হারাইয়া প্রাণে ॥" (थरन, প্রাণ काँरन, ভারে বাঁধে, क्कूब्रिङ नारत। হ'য়ে। কেপা প্রায়, বেগে ধায়, খুব্দিতে প্রিয়ারে । । ষে'তে, নেই পথে, যেই পথে, কালি গিয়াছিল (मरथ, गारब **छा**त, शथ खात, तम शरथ इंनिन १६) ভাবে, "বুঝি কান্তা; এই পদ্ধা, ধরিয়া গিয়াছে ! পথ, भिय कंटल, कान् खुटल, खायभाई खाटक ॥'' পথে, भूष्ण यात्र, यङ পাत्र, फेक्ट नीइ भान। (यन. हांद्रा-मान, श्वारक कनो, हहेबा बळान ।। शृद्ध, (मृद्ध योद्य, कृद्ध छ। द्व, "(म्या कि इ'द्युष्ट्र) (कान, स्क्यांत्री, कून-नात्री, ७३ পথে '(शहह ? ' यिन, प्राप्त वन, जारक चन, स्वरम स्वरम ! পেলে, কোন আম, অবিরাম, পথে পথে জমে ।। গত, কত দিন, রাত্রি দিন, খুজে হারা-ধন। करा, भीष-कान, (भरत कान, निन पत्रभन।।

[&]quot; अने भी छ-कान, धोषरम (क्यम, नहने छाटत । नहन वि महा, करिन छोड़ाह, नहिंद्रमा यादि १। कृष्टिन (राज्यम, बूट ए'टह भी में, क्षेत्रिहा थादि ।

काल इत्य (नरव, जाशनात छन, जाशनि भारव ॥

প্রথম প্রথম, শরীর শিহরে, আরাম হয়। ছুদিন পরেই, হিম, জুল, বায়ু, লাগায় ভয়। প্রথমে দে ভয়, বাহিরে ভিডরে, সমান নয়। জেমে বেড়ে উঠে, ভিডরে বাহিরে, ভেদ না রয়।

भोटि की उपातः भी क क्षेत्र वर्षतः प्रतिश्र भरतः। कार्तरः रुपन, भीरिक शेट्य गर्देश, भरा कि करतः। तूरक काँ के किसा, क्षरंपत्र यक्षमः भगश्च करतः। भरत भरत करत्र, यांचे स्मर्था, स्था भीटिक ना वर्षः।

কুঁজ: হ'য়ে পড়ে, দীঘল শরীর শীতের বায়। ডেলাল গোলাল, শরীর ফাটিয়া, চটিয়া ঘার। কত ডক, লভা, হয় জড় সড়, শোভা না পার। কত পশু, পাথী, এমন হয় যে, দ্বোই দায়।।

শর্থ-সম্ভব, শস্য যত সব, উঠিল পেকে। শীতের খন্দ, শিশির পাইয়া, বাড়িল জেঁকে। ফাক হ'লো যাঠ, কিকরে সে জাঁক, কে ভার দেখে বর্গ্ধ থামারে,শস্যের শোডায়, নরন ঠেকে।। প্রভাষ সময়ে, শিশিরের কোঁটা, পদ্ধর ঘাসে।
খিতে স্থানর, কিছুকাল মন, বরিতে আসে।
একালে কুআসা, কোখা হ'তে আসি, ভুবনগ্রাসে।
গিখারের প্রায়, চেকে ফেলে যাহা, থাকয়ে পাশে।

ানি কেবল, অনল, তপন, স্থার প্রায়।
গারম বসন, কুঠুরে ভবন, আদর পায়।।
বড ছোট দিন, কাথে কুলায়না, বডই দায়।
রজনী কিন্তু, বড় হ'য়ে বড়, স্থ বিলায়।।

এপন ধসন, পরি, সবে আশা, মিটায়ে লয়।
পরিতে যেমন, আরাম, তেমনি, আমোদ হর ।
পরা চেয়ে আরো, আমোদ দেখিতে, নগর ময়।
নানা জাতি লোক, নানা জাতি বাস, পরিয়া রয়।।

নড়ই অমুখী, বসন যাহারা, কিনিতে নারে।
অনল তপন, সেবিয়া তাহারা, সময় লারে।
ক'ডোবারু যারা, বারুগিরি ছেড়েন দিতে কিপারে।
পাছুরা শোভেনা, উড়ানীউড়ায়ে হাসারে মারে।

कान कान परम, नाहीशन मास्य, चारक व बाहा । वक वारत नमा, भीख कार्फ, इह, कीलिहा नाहा। লকালে সন্ধ্যায়, যত গৃহ-কাষ, করয়ে ভারা। আহা, এই কালে, সুষ্মা কোথায়, ছইল হবে ''

কোথা সে অবলা, সত্তে ভাষার, উদ্দেশ কবি। বিপদের সংখা, নাহি হে ভাষার, মরিরে মবি।। প্রাণে নাহি সয়, সে যে ছুংম সয়, শুগার ধরি। সে যে অনা নয়, শুরুতের প্রোম-সুধ্রের ভরি।।

করিয়া, যাত্রন, দেখি সে রাত্রন, কোথায় পাই। আকরের নয় কিনিধার নত, কাশারে চাই । ভুবনের মাঝো ভেমন রভন, আর যে নাই। বিধিত ভালারে, ভারালে ববেনা, ভরসা ভাই।।

চতুর বিধানা, লোকের অগ্রেকে, কৌতুক পায়। ভাই এ বিরহ, ঘটায়ে দিয়েছে, নহে এ দায়।। ব্যাপুতে ত্রিয়ামা, চন্দ্রমায় অমচ ঘূটনা প্রায়। স্থমা-বিরহ, চিরস্থায়ী নয়, ভাবে বুঝায়।।

আহা নববালা, বত আশা করে, করে অভিদার, অনুরাগ ভরে, পাছু নিলি কেন, ওরে বালাই ?
শারৎ যে পথে, খুজিতে চলিল,

स्वरा (म পথে, প্রথমে আইল,

এনে দেখে কই, শরৎ নাই!। কাপড়ে পড়িয়া, ঘুরিতে লাগিল ব্যাকুল হইয়া, কন্তই ধুজিল,

কোথা পাবে সেত, নাহিক তথ্য। না পেয়ে শরতে, পালটি অঃসিয়া, চলিল ঘিতীয়, পদবী বরিয়া,

আইল শরৎ অপেকে যথা :৷
নখন স্বমা, এপথ গারেছে,
ভারি কিছু আগো, শরৎ ফিরেচে,

ভাই পরস্পর, দেখা না হর। এদিয়েও নাই, শরভের দেখা, ভাসিল 'এখন, কোখা বাই একা,'

যনে মনে হলো, বড়ই ভয় ॥ কি করে চলিল সাহসের ভরে, কাঞ্চনে খুজিভে, অন্ধকার ঘরে,

ভাও তথা হ'তে, গিয়াছে দ'রে। বহুদূরে বায়, দেখা নাহি পায়, ভাবে রামা "একি, করিলাম হার,

সঙ্গ ছাড়ি কেন, এলাম পরে।।
বুঝি নাথ কোন, বিপথে প'ড়েছে,
অথবা কোথায়, গোপনে র'য়েছে;

ভাকিলে উত্তর, পাইভে পারি। কি ক'রে ভাকি বা, ছাড়িয়া গলায়; ফুকারিলে কেছ, চিনিবে আমায়,

कि, कति (य मिथि, विशेष छोति ।) यकि मिथा नाहि, इष्ट छात गत्न. कि कतिय किया, इस्ट श्रेक्स्टर्गः

ভালের লিখন, এই কি ছিল ? গৃহ ছাড়িলাম, যাহার আশায়, ভারে না পেলাম কি হবে দশায়,

কেন বিধি যোরে, এ মুখ দিল ?" ভয়ে চারিদির্গে, অকুল দেখিল, হিরা ছুর মুর, করিতে লাগিল,

वूक जिल्ला शिल, नश्चन-जाल । कांत्रिष्ठ् कांत्रिष्ठ, जाद मत्न मत्न, "स्मर्था ना क्रेन, क्वन कि कांत्रर्थ,

আসি কি আবার, গিয়াছে চ'লে? আসি হেখা বুঝি, মোরে না দেখিয়া, আসিয়াছি কি না, জানিডে ফিরিয়া,

গিয়াছে, এইড, মনেডে লয়।
আমারে কুন্তীরে, করিয়াছে গ্রাস,
একথা শুনিলে, হইবে বিশাস,
এখনি আসিবে, রবার নয়।"

তৃতীয় সর্গ।

এই আনে, এই আনে, হয় মনে, চ.ছি দেখে পথা শতবার কথে,

দে আশাও ক্রমে, বিফলা হয়। ভাবিল, "তবেকি, ফিরিয়া চলিব-গ্যহেতে কি স্থাখে স্থাতিত হছব গ

গৃহ হ'তে সেঁ ভ পাবার নয় ৷৷ ভারে না পাইলে, গৃহেকি করিব দেশদেশাস্তব্যে ভারে অমেষিক

এভাবে জীবন, করিব ক্ষয় । অথবা বনেতে, কুঠির বাঁধিয়া, ভাবিব ভাহারে, যোগিনী হইয়া,

পিরীতের বীতি, এইত হয়।। কিন্তু এ বিরহ, কেমনে সহিব, হদিন বঁটিব, ভাবিয়া মরিব,

কেনবা বাঁচিতে, বাসনা করি। একে বিরহিণী, একাকিনী ভার, বিপদে বারিব, কার ভরসার?

ি বিগদে না ম'তে, আপনি মরিঃ এতকণ আশা, সঙ্গিনী আছিল, কত চলিয়াছি, ভয় না নাগিল,

একাকিনা করি, শেও যে বার! মূন ভূমি আর, মোর এবে রও, যারে ভাবিতেছ, ভারে ভাবি র ৩.

প্রাণ যাও আরে, রবে কোথায় ?৷ শুজিয়া ভাছারে, না পাই যদি রে,

ভেবেছ কি ভবে, রাখিব শরীরে 🕐

কেন জেনে শুনে, বাবে আঘাজে 4 কি আশায় মায়া, শরীরে রহিবে ? সংহিলেও আজ, হিংজকে ছাডিরে ?

ভাহ'লে কি আর, পাবে লুকাচে ?!
নাহ'তে মিলন, হইল বিরহ,
কোন পাপে এড, করিছে নিগ্রহ,

এ নিগ্রন্থ কেন, সহিব আর ? কিন্তু মরণেও, সুধ না হইল, আমি মরিভেছি, সেত না জানিল,

আশা রবে, দুখ হবে যে ভার !৷ পুৰুষের মদ, বুঝিবার ভরে, মিলিবে উপায়, আছে বুজুভরে

खामात উপায়, किहूर नारे! अथरना तरहि, हिश्मिना शुक्तिहा, के करे, मतमन केलाना तांकिया,

এনো আশা, যদি, মরিয়া পাই !।" শরতের রূপ, স্থান্থতে ধ'রে. চলিল সুষ্মা, মরিবার ভরে, ত দিলৈ যামিনী, প্রভাত হয়।
গামিনী কামিনী, নারীয় মরণ,
নেথিতে না পারি, করিল গমন,
এই ভাব যেন, মনেতে লয়॥
নলিনী-নারক, পাইল দেখিতে,
ললিনী-পার, কে, আসিছে মরিতে,
গকাশিল কেল, দেখে বাসনং।
ভারু যা ভাবিল, ভাছাই ইইল,
কোন মহাজন, দেখিতে পাইল,
ভাহে স্থব্যার, মরা হ'লোনা!।

শ্বনার মরিবার, বাদনার, সঙ্গে।
বেল বাধা, ছিল বাঁধা, দিল বাধা, রঙ্গে!।
হঠাৎকার, এক ধার, জন্ধকার, ক'রে।
আশ্বচারী, অন্তধারী, আদে সারি, ধ'রে!।
চট চট, খট এট, ঘট ঘট, শক।
শোনে কাণে, যে যেখানে, সে সেখানে, স্তব্ধা!
হেষারবে, দিক সবে, প্রতিরবে, ভরে।
বায়ু কৃড়ি, ধূলিউড়ি, দিগমুড়ি ধরে!।
খর-শাণ, অসিবাণ, দেখে প্রাণ, উরে!
বারগণ, বেগে মন, আকর্ষণ, করে!।
সেই সাজে, মাঝে মাঝে, কেহ ভাঁজে, অসি!

(कह भारत, लक्काकर द, खार्चाशरद विजि ह ওই গোল, এই এল, প'ডেগোল, রব ৷ দুরে থাকি, মুদে আঁখি, পত পাষী, সব !: পাধী কড়, শত শত, পশুবত, চরে। খেয়ে তীর, শিকারীর, মৃত্যুদ্ধির, করে 🖟 व्यक्तार, कि उर्शार, मृष्टिंशार, करह । ভয়াবছ, সমারোহ, ভেবে মোহ, ধরে । ए छोग्न दिमर्कात शिक्कात राष्ट्र (मर्थ खरहा, ब्यान लेरहा, मिल खरहा, क्या !। মুগ্রার, এ কাপার, প্রমার, প্রে অভ্যাচার, ভাবে ভার, মন আর, চক্ষে ঃ এতক্ষণ, খীরগণ, অন্য-মন, থেকে। এইবার, স্বয়ার, সে আকার, দেখে !৷ मलयामी, निष्य नामि, मृक्ष्णामी, करता। কাছে আদে, সমাখাদে, স্থেহ ভাসে, ক'য়ে ৷ জিজাসয়, "পরিচয়, যোগা, হয়, কহ। कारता नाही, कि क्यांत्री, कि आंधाति, तह । কিকারণ, নিজ জন, ওকজন, নাই হ क्ताकिनी, अनाथिनी, (कन कानि, खाँहे ?!" পুষমার, ধার্য্য আর, অন্য কার, সনে। (मधा ब्यू, कथा क्यू, हेक्का नयू यान ॥

কিছু ভার, এডাবার, পথ আর. কই : गरम ভাবে. "ना श्रवाद, मूकভाবে, इहे ।" अ'शबुक, मरकोजूक हाइड पूर्व. कर्षा কথা নাই, কেন নাই ? ভাবে তাই, মনে ! 'বোবা হবে," বুঝি ভবে, সঙ্গীসকে কয়। "যতু ক'রে, অধোপরে, তুলি ধ'রে, লয়। वितिभागी, अक्षिमी, अक्षकिमी, शिला । इस्टि शहर, मकेक्छ, (महा चात शिल म (६८६ पूर, बाद पूरा, किन पूरा, भारत ? ধাই ল'য়ে, মমালয়ে, কন্যা হ'য়ে, রবে 👫 ट कथान्। स्रमात्र, पुत्र श्रीत्र, करत्र। থরণরি, নাঁপে ডরি, হরি ছরি। স্মরে। "क ভাবিলু কি করিলু, কি হইলু, ভায়।" हेश छाति हिर्ल छाती, अनुषाति, मात्र । ভাবি পরে, স্থির করে, "এরি ঘরে, যাই। যথা হোক- ভাজি শোক, পরলোক, চাই ঃ (वांवा ভाष्ति, यान यान, वधांस्वान, नदव ! মান যাহা, আছে ভাহা, পেলে রাহা, হরে 🕯 कथा व'त्न, ভान इ'तन, गछतातन, छडा। जाडी (जुद्ग, विश्व एक विश्व एक, भक्का"्। এ বিচার, স্বমার, যনে আর, প্রাণেট नाहि जात्म, अधीगरंग, त्रांवा ख्वात्म, बारम ॥ জ্বচারী, সঙ্গে নারী, বীর-নারী, সাজে।
- চলে যেন, শক্তি ছেন, সুরগণ, মাঝে।

বিরহ কি নিদার্কীণ : তা হ'তে আগুণে গুল স্থান যেমন।
আগুণে যালারে ধরে, একেবারে ভন্ম ক'রে
নিভায় আপান।।
বিরহ যাগারে পরে, থিকি গিকি দক্ষ করে
নিভায়না ক্রায়ন। ভাহার জ্লন।
চিরকাল সমভাব, কুজনের যে যভংব,
কুজনেরো শক্তভাব, ফ্রায় কর্মন।।

মরি ছঃখে মন দহে, শারৎ ক্রম। দেঁছি,
বিরহ ফুর্জন।
কোষা হ'ডে কোথা আনি, ছুঠাই করিল টানি,
না হ'ডে মিলন।
কি করে তাদের মন, ভারাই জানে হুজন,

ভোষাৰ ভাগে থকা, ভাগাৰ ভাগে হুজৰ, ভোষে মন কেঁপে ভঠে, কোঁৱে ছুনয়ন । গণেশই ভাষিছে মন, এখনি করি মিলন, দে সময়ে থাকিলে, কি ঘটিত এমন ।

ইহাদের এহ ফের, গোচে নাই আছে তের,

ভালের লিখন।

পেয়েছি একের দেখা, আর ছাড়িবনা একা। হারাম রভনা।

্রং কোথা এখন, দেখি ক'রে অন্থেষ্ণ রতন পেরেছি স্থাত্ত পাবই এখন। বুঝি আজ ছঃখ শেষ-সুজিতে হ'লোলা কেশ, এই সেঁ সুক্মা দেখে, সুস্মা-রঞ্জন !!

নিধি হ'য়ে অরুকুল, শরভেরে দিল বল অকুল-পাথারে।

নানাস্থান জমি একা, শেবেতে পাইল দেখা, কালীমবাজারে।।

যে আনিল স্বমায়, বিচারক সে তথায়, ভার অন্তঃপুর মাঝে, বাভায়ন স্বারে। স্বমা বিদয়া ছিল, শরতেরে দেখা দিল, শরৎ দাঁড়ায়ে নিমে, পাথের মাঝারে।।

হঠাৎ আঁধার মরে, আলোক দেখিলে পরে, সজোধ যেমন।

শরতে দেখিরা পথে, স্বমার হালি-রথে, আনন্দ তেমন। বর্মস হারায়ে পাকে, অভাগা বেমন থাকে, A

্তি শীরং তেমনি ভাবে করিতে জমণ। ইলৈ পুনঃ ভাগ্যোদয়, অভাগা কি কুষী হয়? শারং কুষমা দেখে, হইল এমন।।

চারি চ্চ্ছে দেখা দেখা. উভয়ে ভাষিল এ থি,
সভ্য কি স্থপন ?
ক্ষ্থের বেগের প্রায়, নয়ন-জল-খারার,
ভিজ্ঞিল বসন ॥
শরং কহিল "সে, কি, গ্রহেও ভদ্রভা দেখি!
সে, কি, পরধন হরা ভেবেছে দৃষ্ণ ।"
ক্ষ্মা কহে "জীবন! জানিতে হবে মিলন,
ভাই যাও নাই ? গোলে পেতেনা ও ধন ॥"

গুরপ মিলন সংস্ক, যত সুধ গুলো রক্তে,
তুঞ্জে পরস্পরে।
বিবরিয়া পূর্ব-কথা, উভয়ে জানায় ব্যথা,
উভয়-গোচরে॥
সাক্ষাতে পাইলে কর্তা, ছফ্টের দোরাত্ম্য-থার্ডা,
তীকজনে বে প্রকার অভিবোগ করে।
সেই মত উভয়ের, বিরহেডে বিরহের,
উজ্ঞাচার-বার্ডা দোঁকি করে আর্জ-হরে॥

উজ্জ্ব করিয়া পথ বাভায়ন. শ্রৎ সুষ্মা করে আলাপন,

্রাহর গৃহিণী অল্ফো থাকিয়া, দেখিল শুনিল সব।
ডাকিয়া কর্ডায় কহে বিব্রিয়া

"আনিয়াছ যায় স্গয়ায় গিয়া.

্র'বানয় সেন্থে, স্বাজিয়াছে বোবা, একি একি অসন্থব !! প্রম-সুন্দর, যুবা এক জন,

हिल योग्न পথে, कहि पदानन,

ক্ত স্থী হ'লো, বলিডে পাছিলা, দেও স্থী দেখি তায়[া]

कान व्य बहे, गाती-शंविष्य.

माधारम श्रीष्ठ, माधारम नय,

যুংজন কেছ, ছইবে উহার অনুভবে বুখাযায়।"

গৃহিণীর মৃধে, এ সব ভারতী,

শুনিয়া কোতুকী, হয় গৃহপতি,

धृष्टिनी हिनादत जिल. यूनरकदत्र. छाकि आदन मधानदत्र :

विद्युख विलाल, भर् दिनल,

সভাজনোচিত মাননা করিল,

ন্তুণ আছে, ভাব দেখি সবে বোঝে; রূপেত মোহিত করে।

পরে বিচারক, জিজাদিল ভারে,

"কে ভূমি স্বরূপ, কহিবে স্বানারে, 🍇

যে নারীর সহ, আলাপ করিলে, বল ভারো পরিচয় 🐒

धकाकिनी जाशः (श्राह्म विकासः

उन्द जात जानि. वज़ हेक्से गर्न,

মুক ভাবে দেও গোপনে রৈখেছে, তুমি কছ সমূদ্য 😥

বুঝিল শরং, "না ততিলে নয"। সরল ভাবেতে কহে পরিচয়

134 0161601 464 11308,

নিজ পরিচয়, প্রথম হইতে, প্রথমে প্রকাশ করি।

পরে স্থমার, নাম ধাম দছ.

ध्रवश, श्रष्टांग विशेष, विदेश,

আপোড-নিলন পৃর্বংগর কথা, কছিলা সর বিবরি ॥

कानूशृसी मद. वान्धरा घडेना.

श्वामिता करेहा, खर्काण-यंगः,

ৰম্ভি উঠিলা কৰে নিচাৰক, "ভোমৰাই দেঁল্ছ পেনীৰ

প্রতিজ্ঞা আমান, কোমাদের প্রেনে,

यन नांशा चार्छ धूहाहेन ऊरम.

म अत्र'व विवाद, गृशी हत्व सूर्यः क्वन कछे शात्व ज या"

অন্তঃ ডাকি, অ'নি সুৰ্মায়,

श्रिक्डानिना, "वाहा कह ला कथाए,

कम বোবা ছ'त्र बाह कके म'त्र. शृह व्हेजू किवा छात्र"?

বাজিয়াছে ঢাক. ল'জে কেবা করে.

🐃 তবু রামা ল'জে কহে মৃছ্-শ্বরে,

চ্ডুবল-পর, প্রেচ্চার মওলী, নারব স্থির আকার ।।

कहिला चूचहो "धरक म कासात,

ष्यन् रन (कर, नाहिक षांगांत्र,

কিন্তংশ সভীত্ব, রাখিব ভাবিয়া, বিচারিনু মনে মনে।
নহিন্দ কুরূপা, ভাষাতে যুবভী,
দেখি যদি কারো, ধর অন্যমতি,

ক'তে পারে দ্বা বোরা ডেবে, তাই বোরা সাজি নেই ক্ষণে। পিতৃত্ত ভাব, আপনার ছিল, দৃষ্ণীগণে তবু, সন্দেহ হইল,

বলিল মন না কহ কথা, জানি, সৌন্দর্য্য বড়োর খরেং কথার বিপদ ভাবিলাম আর, কহিছে হইত, এত সমণ্টাং,

আজি যা শুনিলে তথান শুনিলে তথানি পাঠাতে ঘরে।
ফিরে ঘরে যাই, নহেত মনন,
বিরহ না ঘোচে জাজিব জীবন,

জাজিব জাবন, গোপন কথায়, কেন শুনাইব পরে ? শুনি লোকে মোরে, কুলচা কহিবে,

প্রণয়ের স্থলে, কলঙ্ক রটিবে

আমা হ'তে ইহা, হইবে কেমনে, কথা ছব্নি এত স্থারে । বিচারক স্থু, বিচারক নর,

धनहो थरोरन थरोन थनह.

স্থার আফাদ, দেবতাই জানে, কথা গুনি পুলক্ষিত।
সম ব্যথা বার, সেই বুবো ব্যথা,
ভাবুকেই বুবো, ভাবুকের কথা,

द्रवमा भंदरक, मिलिल मदि कि, स्कृत् नमस्त्रीहिछ ।।

বিচারক হ'রে. হর্ডনিত অভি, ককে "বাছা ভূমি, বড় বুদ্ধিমতী.

স্বৃদ্ধি যাহার, কাষ কি ভাহার, আর্ রক্ষা হেডু প্র

रशाम नरीना, खाराज खनीना,

ভা না হ'লে প্রেন, বুঝেছ, বাড়ুকি বাল-লভ ফল দরে । এরপে অনেক প্রশংসা করিছা।

गदर युरमा मार्गाद जुनिया

ডাকি অনুচরে, প্রেরিলা সত্ত্তের রমাণতি নিকেডনে। কলিলা তার বিলোমা ভাষাবেন

সেখিলে শুনিলে যে সত্ব্যাপ্তাং ক্ষেত্রে আনিবে, এই কথা বলি,ডাকিয়াতি প্রায়েছনে।"

যে আজা বলিয়া চলি যায় চর-

কত ভাব ভাবে মনের ভিতর,

'বার ক্র্যা **এন্ড, রূপগুণ ধরে, কি জানি** সেই ক্রেম্ন চ

वमन त्रजन जनाम (यथान. • त्रमीय (महे, जाम अनुगान.

अथर। सूथुरे, महाबदात मश्र, श्रेष्ठाल अधारन ।।"

ভাকে বিচারের পতি, ভাকে বিচারের পতি।
পারম-সেভাগ্য মানি, আসে রমাপতি।।
ভারে যতন করিয়া, ভারে যতন করিয়া।

অখিলেন বিচারক, তির বাসা দিয়। ॥ প্রান্তি শান্তির অন্তরে হ কহিলা 'যে প্রয়োজন, কৃহি অভঃপরে ।:

শুনি ভোষার কন্যায় :

কস্তারে করেছে নউ, ডুবারে গদার !! অতি হংখের বিষয়, ২

कि कदित्त विधि लिलि, थ७२ मा छन्न । " कंकि करह द्रमाणिक, २

ं मिल। ख पूर्णार्ग (कोने, मरत स्म मखाले ।। भरतकाः स्म आसात, २

ক্ষা ব'বে কন্যা, কিবা রূপে গুণ ভার !!" করি থেদ বহু তর, ২

শোকে দপ্ত রমাপতি, হইল কাভের য বিচারক পুনর্কার, ২

কহিলা, "না কাঁৰ, মৃত্যু হয় নাই ভার॥" কথা শুনি রমাপাতি, ২

বলে, "সে, কি, মহাশয়, সভ্য এভারতী ।?" বিচারক হাস্য করি, ২

कहिला, "प्रथंद उँदे, सुरमा सुम्मती॥ " हिल श्री-वावधारन, २

পট তুলি স্বমায়, ডাকিলা সেখানে। করি পিডায় প্রণতি, ২ দাড় ছিল স্বমা, স্বমা হ'লো স্বতি।।
বেন মেৰে ঢাকা চাঁদ, ২

রমাপতি হৃদাকাশে, প্রকাশে আহ্লাদ।।

যেন স্বপ্নে গেয়ে শোক, ২

নিমাগতে নিখ্যা ভাবি, সুখী হয় লোক।।

ংমাপতি দে প্রকার, ২

अञ्च स्थी रहेल. इंडला माहि छात ॥

याख र (त खिळामिन, >

পিকস্পৎকে ! বিবরণ, কিব! ম'টেছিল।।

বিচারক করে ভারে, ২

°িন্তর হও সধ কথা, শুনাব ভোষালে।।"

यमसुत स्थ्यात. इ

णाका निना, उथा इंटर रावधान यात्राः

(गटन स्वमा स्करो, २

% त्रांत विवत्न, कर्म विवति ॥

শুনে ছিলা যে প্রকারে, ২ শুনতের সহ ভার, প্রণয় সঞ্চারে ।।

হ'লে প্রণয় পাওন, ২

य शंकादत विवादत, भारत ए यंजन ।।

य श्रकारत रुखी कति, २

বিবাহে ব্যাহাত ভাবি, হয় দেশাশ্বরী ॥

ग शकारत जानि भरषे, २

हाड़ा हाड़ो इस मिंटि, शिष्टता विशय ।।

যে প্রকারে স্থানি ভার, ২

पृष्ट्राच द्रारथन, द्रारथ रयमन कनावि॥

(य श्रकात घर्षनांग्न, २

শরতের দ**কে** দেখা, পরিচয় পায়।

क्रांच किंद्रश वर्गन, २

কহিনেন, রমাপতি, করিলা জাব্য 🖰

एनि कँ। शि छेठी कांत्र, २

কি কৰিবে রমপৈডি, ভাবিরা না পার ।। বিচারকেঃ ক্লপায়, ২

সারা-কন্যা পোয়ে স্তব করিলা **ভাঁহা**য় ।। পারে কারে সুত্রস্বরে,২

- এড যে হ'য়েছে কাণ্ড, জানিব কি ক'রে গ

जानि विद्रजात चरत, २

শরং নামেতে মুবা, আসি বাস করে।। যুবা দেখিতে সুন্দর, ২

क्रथ अनू तथ छन, लाक-मत्नाहत ।।

ভারে কন্যাদান ভরে, ২

वित्रका करत्रक बांत्र, अनूरताथ करत्र ॥

যুৱা না জানে জাপন, ২

বিনা পরিচয়ে, কল্যা কে করে অর্পণ ৷? সেই হেতু কন্যা দানে, ২ অনত কইল, বিরজাও ভাই জানে।। কন্য ভাল ব'সে ভায়, ২

বিরজা একথা কড়, মোণে না জানায় ৷: শেষে এত ঘটিয়াছে, ২

জাজি উনিলাম সব, আপনার কাছে ৷৷৷ বিচারক জিজাসিলা, ১

পদ্ধন কিত্ৰ কি বা, ভাৰিছিল কৈছিল (৪ ভাৰি কমণ্যতি কিম্চ

रिजणम (- श्री (क कम्स, मा मिस्त्वे भरः) किंगु दिसम त्राशात, >

জ(তি কুল-পিছ-নাম, জানিনা যুগার। ধেন জাতি যাওয়া কামে, ২

কেম্ন কৰিব গাকি, ছিন্দুগানী মানে, য প্রভারেরে বিচারক, ২

ক্তিলা, "এ কামে আর, না হও বাধক। যদি কন্যায় না চাহ; ২ •

চংক্রের দেখায় দেখি, ফিরিম্রে যাহ। যদি কন্যা চাহ ভবে, ২

বিধান দাওলো, পারে যাহা হয় হবে॥ হ'দেভ হবে এই পারে, ২

জাতি জাতি মিলিয়া, করিবে এক দ'রে।
তাতে কি শুয় ভোমার ৪২

আর কন্যা পুত্র নাই, অনুরোধ কার ।
অবশেষে ভেক লবে, ২
একঘরে ছুটি লোকে, পূজ্য হ'লে রবে ॥"
মুদ্ধ কন্যার মারায়, ২
প্রাক্তিতে রমাপতি, শেষে দিলা সায় ॥

প্রেমিক বলিয়া, প্রেমের তরে।
বিচারক এই, যুক্তি করে।।
হইলে আপেন, যুক্তি এমন,
হ'ত কি ? সন্দেহ তার।
যায়া দর্মা জাতি, কুলের লাগি,
জেনে গুনে হয়, ছঃখের ভাগি।।
পানক সে সমাজে, ও প্রকার কায়ে,
কাহবা প্রবৃতি বার।?

নানা দেশে নানা, লোকের স্থিতি।
সবাই মনিব, বিভুর কৃতি।।
সমাজ কারণ, আপন আপন,
গোরব কেবা না চার ?
ভারত সমাজে বিশেষ জাঁক।
এক-ধর্মী মাঝে, কডই থাক।।
যত থাক থাক, ভাত থাক থাক,
অহস্কার শোভা পায়।।

থাক <mark>যথা তথা, গোঁড়াদী দার।</mark> দুণা পরস্পর মনে সবার ।। তির জাতি সনে, মেলেনা বভনে,

কেন ? দ্বংগ ছেতু ভার।

কেমম্মী হেন, জালি বিচার।
পৃথক ধরম, যেন সবার।।
পশু-পক্ষীগণ পৃথক যেমন,
জগতি-ভেন সে প্রকার।।

স্বজাতির মাঝে, কুলের রাচি। যার নাই শুনি, পায় সে ভীতি। কুলীনে অপরে, যেনানের নয়ে,

কুলীনে বিচারে মনে। যদি পশুবৎ, কুলীন হয়। অন্য গুণবান সমান নয়।। শশু ধিক্ ভায়, এরীভি-বধায়,

ধিক্ তথাকার জনে।।

ধর্মা, জ্বাতি, কুলে, গোঁড়া যে হয়।
পৃথিবীতে কভু, স্থা সে নয়।।
চৈডনা কেবল, বুখে এই গোল,
ভেক লওরা রীভি, করে।

চলিলে এরীতি, ভারত মাঝে। স্বিধা হইত, অনেক কার্বে।। পার্থক্য ঘুচিয়া, একতা জন্মিয়া,

সুখী হ'ড়ো পরস্পরে ম

বিভিন্ন জাভিতে, হ'লে প্রণয়। সুবিধঃ সুধুই, সে কথা নয়।। ভারত ভুবনে ধকতা বিহনে.

নোষ যত সব যায়।
ধর্ম জাতি কুলে, গোঁড়োমী ভবে।
পারস্পর ধেষ, হিংসাদি করে।
তকতার সুখ, হুয়েছে বিমুখ,

পুনঃ পাওয়া যায় ভায়।।

चटना कारन, छनि कतरत (त्रोय। मानदि मानदिन, हुँ रेटल दिनाय।। जिल्ला कारति, विरम्भ-खमर्गि,

क्यान-लाल, माहि चटि । प्रश्नु क्यान-लाल, नंदर जगता। जेलागी, भारती, कत्रता गता। मा कति जगन, वाहा ता समन, मश्रुक वाहता चटि ॥ বড় খেদ হয়, ভাই দে বলি। এই ধর্মা, জাতি, কুল, নকলি।। ছিলত পূর্বোজে, এরণ ভাবেজে.

ব্যবহার কে ক্রিড ? বেষ ছণা-ভাব, ছিলনা এজ ভাই পরক্ষর, নাহায় পেড। থাকিতনা বনি, উদ্যোগী সাহসী,

रिमिट्न जिम इडेज।।

এই গুণ ছিল, দেই কারণ। সরল হইত, স্বার মন।। মনে বল হ'লে, শারীরিক বলে.

কদাপি বঞ্চিত হয় ? একডা, শরীর, মনের বলে। ভারত সম কে, ছিল ভূতলে ?। সকল ভূবন, করেছে শাসনং

ভারত এক সময় ৷৷

হায়রে সে ব্রুল, কোঁথার গেল। কি কালের পর, কি কাল এল।। সেই সে ভারত, হ'য়ে পদানত, বিদেশির সেবা করে?

আর সে ভারত, রয়ুও নাই।
আর সে কেরিব পাওব নাই।।
বংজিত ছিল, দে দিন মবিল,
আর কে বা দুংগ হরে।

পুরুষ বংশে, কাপুরুষ মবে।

সারকি ইখারা, সাধীন হবে। ?

ভা আর হয় না, বা আছে পর না,

লালায়িত হ'লে নাম!

রানত্বে বাহারা, সজোষ মানে।

গ্রেমিভা-রস, ভারা কি ভানে ।।
বহক সম্ভবে, আরো হীন হবে,

ভাতা হ'তে পারে যাস।।

রমপেতি করি, ভারতে বাস।
জাতি ডাজিবারে করিল আশ!।
বিত্তি এ পাণ, কন্যার করিণ,
তবু সে সাহসী হয়।
যে কারণে জাতি, তাজিতে চায়।
আরো স্বিশেষ, কারণ পায়।।
অবশ্য এ জন, স্কৃঠিন পাণ,
পুরিতে করেনা ভয়।।

ক্রমেতে বিশেষ কারণ তরে। আধীনতা-স্থ ভাবনা ক'রে।। আধীনতা লাগি, হ'য়ে হুঃখ-ভাগী.

প্রাণ-পণ সুক্ষিন। রমাপতি সম, হবে যে জন। ভাগোনা ভরিবে, তাহার মন।! আপন হইতে, প্রাণ-পণ দিতে.

চাবে হবে ছেন দিন ৷৷

২ড়ই ভরসা, হতেছে মনে। ক্রমেতে এদেশী যভেক জনে।। গোডামী ভাজিতে, একতা লভিতে,

পারা অসম্ভব নয়। কি ক্ষণে স্থমা, প্রেম করিল। ৯মাপতি, ভেক লভে, চাহিল।। ভারুকের মনে, সেই ক্লে কারণে.

দুরাশা সুআশা হয়।।

বিবাহে সম্মতি, দিল রমাপতি, ভানি হর্ষ-মতি, স্বম!। হর্ম কেমন, হ'লোনা বর্ণন, ভাবে সারা মন, উপমা।

বিচারক ভায়, পরিভোষ পায়, শরতে তথায়, তাকিল। वसाशिक मान, खालाशे कातात. একতে তুজানে, রাখিল 5 সর্থ মুজন শিকী- আলাপন, করিতে এখন, জ'নিভ। হ'লে পরিচয়, শান্ত ভটি রয়, রমাপতি হয়, মোহিত ৷ কেটেই রমাপতি, স্থাময়া যেমতি, শরতে ভেম্ডি, দেখিল। हिलना मखान, भखान जयान. यानरतत्र यान, शहिना। ক্রমে এই কথা, ঘোষে যথা ভথা, . अवगात गाजा. श्रीनता ांह्या श्लक यथा विहातक. ভাকিখা বাহক, পেরিল ঃ শরভের সহ, ছইবে বিবাহ, नाहिक मास्ट, लाशांख। विशाम कहेत, माखाय डेनिल. ययभा विमल, मिलाए ॥ বিচারের পতি, করে অনুমতি, বাছকেরা গভি. করিল:

302 # "

শরৎ পশ্চাতে, ছাতা ছড়ী হাতে. রমপেডি সাথে, চলিল। জোশান্তরে যায়, দেখিবারে পার. कहरगात और, बाधारम । দস্কার মতন, বেখিতে ভারণ, दौड़ कह छन. (मथान। आकारत मटारे. काल-माथा गाँड ভক হেন পাই দেখিতে भामत बद्रगः कर्मन शहर. পড়েনি ভেমন, জীথিজে 🗽 গাঁচিয়া কামান, বাহু চুইখান, নথারি সমান, ছলিছে। इंडि कि कि किएडम ! मर्म इब्र (इन. টাভ হ'লে মেন, পডিছে !! উক জাতু স্বর, নেখি মনে হয়-স্তম্ভ লোহনয়, যেম্বভিন অভিগাচ লাল, নয়ন করাল, ঠিক যেন কালমুরভি।। গভাপরা বেশ, বাঁকা বাঁধা কেশ, নাতি ভয়লেশ, কাহারে ৷ গৈঠে বাঁধা ঢাল. চঞালের পাল, लाठि कहताल. बांकारत ।

कुछोश मर्ग ।

निदिक् (निश्या, मकत्न मिनिया. েলা হাকারিয়া, ধাইয়া : 'योम (काथा प्रायः, ' व'रत ५। विश्वाः থের মাব্যার, করিছা ! पुर्वत (४०)३, एत्य वह शहर ভুলি কেলে ভারা, ফুকারে । শরত বেশিক, ডাকাটের গেড়িব, रिश्राम व्यक्तिल. मदाहर ह 'অন্তে কিছুবল, ভাবে কি প্রবল, एकाटलब नल, मस्वः কিছু ধরি প্রাণ, থাকিন্দে পরাগ, चीका गर्भान, शक्तिन नाहि गडका, कवित याउन, र: १वक कीवम, इरवमा । डाकाटड मासिटन, प्रममा कांस्टिन, यक्षणी महिंद्द, मृद्दना ।" हेड्ड विठात्रिज्ञा, मा-म कतिज्ञा, কোমর কলিয়া, বাঁধিল। अकलार्यः गिया, अरक्टब भविया. लाठि छिनारेशा, लरेल म यतिता व्याकारत, यारत भाग छात्त, ्रवटम लाहियादत, व्यमनि ।

श्वन वाहमार्य, अलियञ्चा नात्कः, भरूर ७ कार्य, एउम्रसि 🛭 मस्ता कशिया, छातिमिक निया, শহতে বেডিয়া, মরিল। क्षाक (পाइ अदर, काश्रावता मात. ভুলিফেলি ভবে, ছুটিল। বিচারক মধ্য, বেগে যায় ভেমা, विशासित कथा, कहिए । चरुश नगरन हि, कनाति नरवहि, লুকাৰ দশুনি, ডুলিডে। लाखाराख्या (यसा, भारत भारतमा, উভাৰে কৈ ভেলা, দাগৱে ? প্রহারের ঘায়, পাড়িল ধরার, চেভনা হারটে, সমরে 🍴 ন'রেছে ভাবিয়া, শরতে ছাড়িয়া. ভাকাতেরা গিয়া- **ভরিভি**্ फुर्लि फुलि निल, वाशांत्म शिमले, 🚬 বেগেতে লাগিল, ছুটিভে।

ছুইনও গভ প্রায়, শরং চেতনা পায়. চারিদেশে ফিরি চায়, নাছি দেখে কারে রে নাছি দেখে কারে! ভাবে, অসম্ভব একি কোন চিদ্ধ নাহি দেখি, দ্বস্থা কি হ'লো, সেকি ! কি করিল ভারেবে,

্কি করিল ভারে য যারিলে ধাকিত চিহ্ন, তুজনে করিয়া ছিন, থারে লায়ে যাওচা ভিন্ন, ছাকাচি দে নয় রে:

ভাকাতি সে নয়।" দুট নাতি হয় ভাতে, প্ৰায়ে গাচ কলেও কমাপতি শিকিতা, মামে গুলু ইয় বে

भारत वस इस ।

ভারতে সন্দেহ হ'লে.. 'ভাকা'ভ ভাগ কেবল, বমাপতি করে ছল, এরপ প্রকার রে.

এরপ । কার রে। বিচারকে বুঝানারে, স্বমারে ভুলাবারে, ডাকাতে সামারে মারে, করিবে প্রচার রে,

করিবে ওচরে। ইশা যদি সভ্যান্য, মোর প্রাদে মহাভয়, দেখিলে করিবে কর, প্রেরি গুপ্ত-চরে রে,

প্রেরি গুপ্ত-চরে। বুনি প্রাণ-প্রতিমার, পুনঃ প্রাপ্তি হ'লো দায়, নিফপার কি উপায়, করিব বা পরে রে.

कतिय या शास्त्र ॥ किन्नु ज्ञानि जोत्र यम, निर्दिमा व्यस्तिरहर यम, रेब्ध अम्बद्ध थान, ज्यामात्र ज्यालाद (द, ज्यालात ज्यालाद ।

কেন ভাবি নিৰুপায়, গোপনে মিলিণে কার, সে করিয়ে সমুপায়, মহ পায় যাবে বে,

সৰ দান যাবে !! কিন্তা হাই পালটিয়া, বিচাৰকে ক'ছ গিলা, নুষ্ঠ-লোগ্ডা নিদ্ধাবিয়া, দিবে লেই জুম রে.

দিতে দেই জন।' শেষ-যুক্তি অনুসারে, ফিবিয়াছে যাইবালে মন অনুয়েগি ভারে করিল বারণ রে.

করিল বারণ ।

মন বলে, "একরার, ডফ্ লই স্বনার,
বাগানের মানে ডারি ডফু যদি হয় বে.

ভদ্ধ যদি হয়।" যে দিগে ডাকাভ গণ, করিয়াছে পলায়ন। গে দিগে না ল'য়ে মন, অন∾কিয়ো লয় রে। অনা দিগে লয়!।

কিছু দূর চলিবায়, বাগান বিরাম পায়, পরে দেখে মক-প্রায়, কান্ধার ভীবণ রে,

কান্তার ভীষণ। দেই স্থানে পুরোভাগে, হঠাৎ নয়নে লাগে, চিহ্নিড রক্তের রাগে, নারীর বসন রে, নরীর বহন। প'তে পায় পুনর্জার, স্থনার যে প্রকার-প্রগঠন মেখলাক, মেখলা তেমন বে

যেখন। তেমন। এই চিহ্ন দৰশনে, নিশ্চয় কালে মনে, প্ৰতিয়াহেছ দস্তাগণে, প্ৰিয়ার জীবন তে.

প্রিয়ার জীবন।। ভূলিসক মৃদ্ কার, ভাসারে দিয়া গঞ্জা প্রায়েছে কে কোষায়, মুইই দয় গ্রাহ

ুই দস্থাণ : একসাজা ভিন্ন সংল, ফলিবে সন্দেহস্থা, ব্যাপতি ক্ষিভি ভিল, ভাজেচেছ এখন বে.

ভাজেছে এখন। চোরাড় কাহার সবে, পালান সম্ভবে ভবে, ভারা কি বিপাদে রবে, পারের লাগিয়া রে,

ারের লাগিরা ? নোর লাগে একি দায়, হারাইয়া প্রেমদায়, এদালাম এড দায়, কি কাষ বাঁচিয়া রে.

কি কাষ বাঁচিয়া।। ওরে বিধি কি করিলি, ক্ষেন ছেন ছুঃখ দিলি, মোর ভাগো লিখেছিলি, এতই লিখন রে,

५७३ निश्म!

কৈ আমি জানিনা ভাষা, নাহি কেই বলে আহঃ ভাপনার চিল হাহা, ফ্রাল এখন রে

কৃষ্ণাল এখন। আঞ্জীবন সহি ছুখে, ভদু ত্রুখ অভিযুখে, ভুলেও না দেখি স্থে, কোখায় কেমন রে.

নাহি চাঙি জনাক্তাথ, বাঞ্জা ছিল এই প্লাথে লিখি প্রিয়া-চান্দ্র-মুখে, মুড়ার জীবন রে,

সে আশা ফুবাল আজ, মহতে পাচিল ব'ছ, বাজেলো এমন কান, অঠাক নাশিল রে,

ভারিক নাশিল। মারিরে প্রাণ কি করে, শমন এমন জারে, কেন মেরে প্রিয়া হারে, এ বাদ সাবিল রে,

ও বাদ সাধিল !।

শমন লয়েছে যেথা, ওধনো কাওৱি কেথা।

ফিঙে প্রিয়ে ! হুটো কথা, ক'য়ে ফিঙে থাও কে

ক'য়ে ফিরে যাও।
ওপ্রিরে, যাওছে ব'লে, তুমি ছেড়ে গেলে চ'লে,
নাম'লে বাঁচি কি হ'লে, কিহা সঙ্গে নাওরে,

কিন্তা সঙ্গে নাও।। বাহারে ভাল বাসিতে, সে ডাকে নার আসিতে, আর তুমি এ মহীতে, কড় না আদিবে রে. ু কড়ু না আদিবে!

ত্ৰিজ্যায় মৃত্যু হ'লে, সে মুঃখ যায়না ম'লে ঠিগিড়ো থোঝেন। ব'লে, কভই কাঁদিবে রে.

কত্ই কঁ। দিবে !

ালার রুক কেটেযায়, দক্ষার লাটির স্থায়। পারাণ ভাজেছ হায়, কড কউ সহিরে,

কভ কট সহি !

নে ব্যথায় প্রাণ করে, সহিত্রাছ, দে কাথার কভাই ব্যাকুলভায়ে, গেছে অঞ্চ বহিরে

গেছে অক্রে বৃহি॥ দেখিয়াচ অস্ক্রবার, করিয়াছ হাহাকার, শায়ে ধ'রে সে সবার, কতই কেঁদেছ রে,

কতই কেঁদেছ!

আহা মরি সে সময়, কি দশা তুরিতে ভুইর, 🖓
ন্মরিতে জীবন দুফ তুমি তা ভূগেছ রে,

ইমি তা ভুগেছ!!

মরা ঠার বেদি ছখ, ভুগিরাছ যে অসুখ, ছখ কি ভোমারি মুখ, চেয়ে ব'দে ছিল রে,

(চয়ে व'मে ছिल?

কি কপাল লয়ে সঙ্গে, জন্ম ছিলে এই বক্ষে, বিধাতাশ্বি কোন অঙ্কে, মুখ না লিখিল ব্লে,

মুখ না নিখিল !

ভোষার মৃত্যুর মূল, আমি, ভার নাহি ভুল, কি দুর্ভাগা আমি. ভুল, নাহিক ভুবনে রে.

नाहिक जुरान।

কেন এ অভাগা জনে ডালবেসেছিলে মনে কেবল মোর কারণে, হারালে জীবনে রে.

হারালে জীবনে !।

অতে পাপ দত্মগণ ! পাশাণ ভোদের মন. কেমনে নারী ভেমন, নিবন করিলি জে

निधम कहिलि ?

त्तरक ठक्कू मन भ'रत, तम कुछूय-करनवरतः मिन्नरत्र (कमन क'रत, लाकि প्रकातिकि ।

नांति श्रेष्ठातिन ।?

এ ছুখ সহেনা আর, ডাচ রপ, গুণ, যায়,

ভার মৃত্যু এ প্রকার, নৃশংসের করে রে,

नृगंश्रमतं करतं 🕶 ् 🗥

नदनी छ यादि ग'ला छ। नार' द्रा १९६६ म'ला. नामिल कुकूत म'ला! थिएन यारे म'दत र्थे. ﴿

(थए याई मांता।।

অনাভাত পুষ্পা, তার, করে ধরিয়াছি প্রায়, এমন সমরে হায়, ঝড়ে উড়াইল রে,

करण छेज़ाहेल।

ত্তীয় সর্গ।

পার্বার নহেক বাহা, হাতে এলে ওড়ে ভাহা। প্রবীন কি কথা আহা, প্রমাণ মিলিল রে,

প্রমাণ মিলিল !!

কাৰ না পাইৰ ভায়, ভার বস্তু নেখলায়. হাৰ্যে ধ্রিৰ আয়ু মেখলা বসন ৰে,

মেখন। বদন !"

িহাবলি তুলি ল'য়ে, মেখলাবসম ছয়ে: বতনে রাখি ঋদয়ে, করিল কেফন রে,

कतिन कमन।

ক্রিতে ক্রাদিতে যায়, চক্ষু পদ যেগাধায়, নিশ্চর নাঞ্চি ক্রেথোয়, যাইদে এখন রে,

शहरव अथन।

ঐই ভাবে কিছু দিন, শোকেতে উন্মাদ দীন, হ'য়ে অমে রাত্তি দিন, নাহি নিবারণ রে,

নাতি নিবারণ।

চতুথ সগ।

প্রথম প্রথম, লোকের বিক্রম, বঙই বিনয়, क 'रम डिटर्म ।

যন হ'য়ে যায়, পাগলের প্রায়, বেথা দেখা দাস,

इटि इटि ।

অভ দ্বিন হায়, শোক ক'ল পায়, চিম্বা শনভাগ,

(भारत भारत ।

(म खरीं मन, रेश्डल शांत्रण कित्रा चार्यन.

শ্বির করে 🗈

भन्ने स्टब्स्ट कुर्वित म्हार के विषय के विषय

খনি মরি।

सुद्या द्यारात, शामित्ना खांत, भमन खांगात.

পরি হরি॥"

है है। विद्यादिल, (भाक निर्वादिल, श्रृष्ट्रिक्ट्रेल,

अक्षारम ।

٠.

দ্বির করে বাস, শোভার নিবাস, প্রক্লভিরো বি (वरे थारन ।

इप्न (महे म्हांस, क्लांस धनवास, लांद्रित छेन्।स-शह-भारम ।

कुन्दत अगन, यथन उथन, तिथि थी'न यन.

सूर्थ खारम ।

माहि (इन क्ल, मिथा जर्थाजुल, गएम मर्माकुल,

एक मद्द !

वल मधुजल, ७९६त मनल, मधु मनोजल.

सूर्ध लाज ॥

অভি পরিপাদী, যত পুষ্পবাদী, যাতে সাজে যেটী
তাই সেধা ৷

্রতিপুস্থনে, কৃত-প্র<mark>ত্রবণে, জল ক</mark>রি মনে, ভোষে **বে**খা।

গুণালীসকলে, সেই জল চলে, প্রায়োজন জলে, বেথা বেথা।

স শেণতা দেখিতে, আরামে জমিতে, কিবা **প্রণালীতে**, পথ সেখা।

চতুপথ যেথা, সাজাইয়া লভা, করিয়াছে সেখা,

मुक्तवत्व ।

কুঞ্জমানে বেটা অভি পরিপাটা, শরভের সেটা, 🥞

निल्यान ॥

চাদার ভিভরে, থাকি কাল হরে, আরো লোভা হ'রে; উপবদে।

যেন শ্রত্পতিন ধরিরা মুরতি, করিল আগতি_ই্ ফ্লবনে। **ঘটনা ক্রমেতে**, সেই সময়েতে, মলয়া নিলেতে₎ ভর কারে।

বসরু আইল, শীত পাশাইল, প্রাকৃতি বনিধ, শোভা ধারে:

এ ঘটনা হেরে, ভাবি এ ভাচবরে, গেরে শরচেত। সেই খানে।

প্রাকৃতি সোধালে, আধারি উপজিল, বলম সেইন কিনুমানে ক

খতুরাজ বসস্ক, করিলা আগ্রন।
গলে দার হ'লো গায় দিশিন্ত-দাসন ।
ননেমত রাজা হ'লে- কি সুখ প্রজার।
বাসবি আমোদে পাই, প্রমাণ ভার্তার ।
দূরে থাক লোক, দেখ খভাবে চাহিয়া।
নাহি মেলে আনন্দ, কোথার নির্ঘিয়া।
হৈদে দেখ এখন, প্রায়ন্তি হ্রে শোভা।
আর কবে ধরে শোভা, হেন দিন লোভো

যে যথম হয় অধীশার, তাহার বিভৃতি অভন্ধ।

ইন্দা হয় যেই মড. সম্পান বাড়ায় ভঙ,

নূডন নূডন প্রিয়-কর।
বিশেষভঃ বসন্ত রাজন, শতুর সমাজে মহীকক

ভূষিবে ভাহার মন, শিশিরের কি এমন, ভূক্তশেষ স্বাহে বিভূষণ 1? ্ই ছেতু ঋতুরাজ, অধিকারে করিতে স্থলাজ ! আহরিয়া অভাবেরে, নগ্ন করি সভাবেরে,

আরোপিলা অভিমত মাজ। বিরহ হইলে অস্ত্ররিত, যুবতী হইয়া হর্মিত। বিষ্টা অস্বাগ, ভাবি প্রিয়-অনুরাগ,

তেমভি প্রাক্তি বিভূবিভ । অংহা কিবা সাজিল স্থানর, গুলালুভাল ডবলকালেবর।

क्ट्या नदीन नाल, क्ट्र नद्याल काल.

হয় শোভাষয় মনোহর। ্যন ভারা ভেটিতে রাজন, ধরিয়াছে ভেটের ভাজন। नाहित्ह द्विज गत्न, विश्व-वाज-वानामत्न, चारमानिया, नकल जूरन।।

ফুলবনে লাগে ভলস্থা, ফুল ফুল অথবা মুকুল। चाह्याद्व अविख्व, छेज्ञाति माजात्र मत,

ু 🗗 বসস্থোৎসবে লাগে তুল ॥ বিটপী ম ঘন-ছায়া-ভলে সমাকুল ছিন্ন ফুলদলে। যেন চক্রাভপ তলে, লডা-বধূ কুভূহলে, ह्एंदिन नाज स्मक्ता

चार्व राख श्रृष्टे मानवः (क वा वतन।

কে, না করে সম্পদের যান, কে না দের প্রত্যাশাহ স্থান্ अञ्चान कोरम त प्रथ रम हे जारव छल ॥ रथा ति इंडिए छात्री लोक श्रे झूंत नगरन ! 🕴 कामाइटक क'र्रहाटक कुमल, काइमटक (नथात कि)मल সেইমত মধুপানি, ব্যক্ত প্রায়েশজনে। वानन्ति-शाहक एक वगन्त मन्द्र । মকরদ্ধে প্রহত্ত স্থান, বিবিত্তিতে গুণ গুণ ক্ষে. [©] জালিমা বিষয়াঞ্গ, বিরহীর মনে ৷ कारिल कुल्रात, ३१३ मकरतार ग्रा किया, तम मधुत-तमाकत. (यम भूतातित हाली-कत, जूनारेडा कनएइ, यका क भागीतान : গহর-বিবর হ'তে নিঃসরে পরন। लक रहा (कंपन इसह, वांगाकत शस्तुत-दिनह, মৃদক বাজায় যেন, অমৃত-নিদ্দন ॥ न्छाकती, मृडाकत, थक्षनी, थक्षन। রদে তথ্যসা উভারেতে, নৃত্যকক্ষে রজ্যে মনেতে আহা মরি কি স্থ কর, নাজিল ভুখনী আইল বসম্ভরাজ, সামস্তসহিত। দেখি শোভাষয় পৃথীতল, স্থাে দিজ করে কলকল, যেন স্তুতি করে বন্দি হ'য়ে অবহিত।

व्यविद्राक गर्गागंड, दिश्रिया व्यक्तीत यड,

ভাভাভাড়ী করি যথা গৱে ন্যু ভাব ! তমতি পতুর রাজে, দেখি ধরণীর মাঝে, মনিলাদি বদলিল, পূর্কের স্বভাব !৷ গটিল এমৰ ধারা, বেন ভারা নহে ভারা, क्रीन हा शहिराई, धना क सहिल। ेक्ट चाहित याता. निगेष दहेल खाता. জনসের শিখিনতা, কোপা লুকাইল।। যে অনিল পরশনে, বাঁচিব হ'তো না মনে, জ্ভসত হ'তে। এক কাঁপিত হানয়। াে বেন অস্ভ্রায়, সখা হ'তে প্রেমালর, এমন হে হবে, মনে ভ'ভোনা উদর। खान चात जरमारे, देखा दह म**र्सनारे,** স্নির্দান পরেবিরে করি সঞ্জব। ার অংষ হ'তো মনে, গ'লেযাব পারশনে, নে ঘভার কোথায় সে, করিল গোপন ॥ কিন্তু কিবা চমৰ্থকায়, কুটল স্বভাব যার, দে ভাব ভাজিতে সেই, পারেনা কথ**ন।** হউক সজ্জন-সঙ্গ, তথাপি নিয়ম ভঙ্গ, করেনা ছাড়েনা ক্রে, স্বভাব আপন 🛭 यित (यय दर्व नोत, धूलि नाटन शृथिदोत्र, সিগ্ধ হয় দেশ, যায় রোগাদির ভয়। উর্বয়ন্তা ভূমি ধরে, শদ্যেরে প্রস্ব করে,

কিন্তু এবে মেঘাগম কলাচিৎ হয়।।

বসন্ত আইল, মুখিত হইল. विशिक्षण मान्नेजा स्ट्रिस मात्र। स्थी विद्रहित सन, नांकुल धर्मन, তার দুংখ दिগুণিত হ'য়ে করে দুখী। একে উপবন, ভাষাতে এখন, বিসম্ভের সমাগমে, রুমণীয় অভি! ভাষা নিয়বিদ্যা, উঠে উথলিয়া, শরতের চাপা শোক, নুতন যেমডি।। বুৰিয়াছে মন, জনম মতন, হারায়েছে ত্রমা. পাবেনা আর ভার ! মেখলা বসন, সেই সে এখন, ইহা ভাবি ভাহা দেখি, শোকান্তি নিভায়।। भार (यमन, दुसाहिट्ड मन. ध्यतमञ्ज भारेशाहि, संयका अस्त ह वित्रही (य छन, मिह मि अमन, কোন আলম্বনে, বুঝাইয়া রাখে মন !৷ উপবন-পাদে, ধনির আবাসে, शाक (कान वित्रहिनी नवीन-वर्म । यत खात्र यन, इस डिठारिन, चार्तारमत (भाषा दिश्. कदत महनावन ।।

वाहेदन वमछ, मनम पूत्रहा, ভারে একাকিনী পেয়ে, করে অভ্যাহার। এই অভ্যাচারে, বঁচোয় কে ভারে, ीर्टन तकक (यहे, अनुस्मा छ।त्। বিবাহের পারে. গোছে স্থানাস্তরে, গৃহিণী যুবভা, পতি, তথাপি ফেরেনা। কি করে অবলা, তথাপি চণলা, দ্বির, ছ'য়ে কুলে গাকে অকুলে চলে**না** ৮ श्वत जा (रास्त्रमा, यज्ञात श्वाप्रमां, জালাতন করে ভারে, যখন তথ্য! আরাম শোভায়, নিভাত জ্বালায়, হয় নাই বদজের, উদয় যখন ।; বসন্ত এপেছে, সে ভাব ফিলেছে, বসস্তাবে মননের অতি অন্তর্জা। শোভার ভবন, সেই উপাবন, নাহিক তেমন পেয়ে, বসন্তের সঙ্গ ।। ह्यूना धक्रांग, मास्त्रीविष्ठ मान, বাভায়নে বৃদ্যি, উপবনে যেই দেখে 1 মনের আগুণ, বাডয়ে দ্বিগুণ, বু বিতে পারেনা, কে, বাড়ায় কোথা থেকে।। যুড়াবার আশে, মলয়-বাভাসে, चक्र युल्लिनि मन, উডে্যেতে চায়।

र'ए खनायन, कतिल खंदन, অলি-ভূক-রব, মন আয়ো মেতে যায় !। नाती नहे नयु. राज्हे वा मयु. লোহে যন মত, গোল। হিতাহিত জ্ঞান ভরু রামা ভাল, অনেক বুকার, চুপের পিশাসা, ঘোলে, করে কি প্রস্থান ।। शास्त्रत रम, याट छात्राक्षम, এডায়ার বিলম্ব ভাবি, স্মাথি বাস্ত হয় ৷ অপিনি থাকা চাহ, আর্জি দেখা পার, दिनिश्च भेतर-होत, निकुछ-निवाद॥ পরতে লেখিয়া, উঠে শিংবিয়া भारत लाद्य, " जाया महित देशह कि इति । जानक (मध्धि, जानक अपिहि. (त्रिनाइ छनिनाइ, रेहात युक्री। ভাজিয়া বাশরী, গোরা রূপে হরিন निकुष्ठ-विहाती तुवि, बादीत है। तहि। ्रथा हाथा कहे, नाहि **आग**। वहे, क्षांनिन। काहांत अना, अथारन तरहरह । চাহে বা কাহায়, মোরে যদি চায়. আমি যে রয়েছি হেথা, জানান উচিড"। देश ভাবি মনে, বিদ বাভায়নে, করে রঞ্চ, করে ব্লন্ধ, যেমন ভডিত।।

কভু বা আপন, করয় গোপন,
কভু প্রকাশয় অগ্নে, কপাট খুলিরা।
কভু মধুব্বে, ডাকয় অপরে,
কিছুভেই শরং, না দেখিল চাহিরা।
চিগ্রিল চ্যন, 'কেমন ওজন,
ঘরের তাকর্যিণ নড়েনা হাঁরমণ

অস পরিলাহে বাঞ্জা, দেখিতে কি রস্থান श्विक्ष तार्थ, रुग छन्न दश्किं? कार दिश्वविभी (१९७५) मात्र वर्शका । রতিন ভরেছে, মাকে অলফেল্ড ট লালা দিল দি, ভাবিলা মোড দ্বালা 🚉 ल्मा खाइर गर्न, " यमभ अ मह, ভাম-রিণ্ আদিয়াছে, কাম বিনাশিতে। অনেহেন ভিলি, বলে বিরহিণী, ম রেও মধরণি কাম, হর-কোপাগ্রিতে।। থৈয়েক এ জন, মনোমভ ধন, নাতিনীজাঘাই প্রায়, অভাবের নয়। মনের কথায়. কহিগে উছায়, याहिया (योवन हिटन ल्दना कि इब्न, १। मानू वड वरि, थाकिल निकरि, इंड गेरल जनरल, जनल इंट्ड देखि।

দেখিনা কি হয়, যিলিয়া উভয়,
ভামেছি সংসর্গ-গুণ, কারেও না ছাড়ে।।
ভাবে হদি ঘটে, যিলন সকটে,
পরাজিতে নাপারিয়া, হই পরাজিদ—'।
বহুলির ভাবে, হালি পুনঃ ভাবে,
'ভাভেও জিভিক, মম সম হারি জিল'।।
এমত ভাবিয়া, দেখিল চ,হিয়া,
দিনমণি অস্তাচলে, হায় বায় প্রায়।
বিশ ভূমা ধরে, হাতে শোভা করে,
গুকে মুনি-মনোহরা, সক্তা পুনঃ ভায়।।

নিরখিয়া মুকুরে, বিনাইল চিকুরে,
 হুটী বেণী পাঁচল হুধারে।
চাঁদে চূড়া পরতে, কত শোভে দেখাতৈ,
 সিঁভি পরে ললাট মাঝারে।।
 সৌন্ধর্যার সন্ম, চক্রমা খা পদ্ম,
 মুখথানি করে পরিকার। °
ইন্দীবর-বিদলে, নাচে ভাবি কুশলে,
 হুটি ভৃঙ্গ ভারার আকার।।
পদ্ম-বন্ধু-ছুটাতে, শোভে পদ্ম ঘটাতে,
 দেখাইল কুওলে ভেমতি।
শোভা হবে ভাবিল, গলে চিক পরিল,

744

সমবৰ্ণে ক্ষুবিলনা জ্যোতিঃ।। চন্দ্ৰ হুৰ্যা ছুপাশে, উজলিতে আকাশে, হালিগাঁথা ভারাও কি পারে?। े दूष्यून प्रधारतः मूकामाला मांबारतः ৯ভাই ভাবি বস্ত্রে ঢাকে ভারে।। ভুজে ভূষা পরিয়া, মনে ভাবে দেখিয়া, ভুজস্ক ভূষায় বড় সাজে। অবসর বুঝিয়া, যায় ধনী চলিয়া, যোড়ামল ৰমুৰ্ম বা**জে**।। -অক্তে যায় ভাক্ষর, মুদিলেছে পুকর, क्रमुनिनी कुछि अकात्मण्ड । श्वालिशात (पश्चिम्रा, कुम्पिनी आदिम्रा, **क्रुं** यार वश्रुत लिएड ।। ভারুকেরা দেখিত, মনে মনে ভাবিত, रूत-गांन एक्षान वामना । गक्तत्र-अल्लिक, शार्ह ऋत वामिए, शिष्क हत्न भारतत ननना ।! किशा (यन हर्णना, न्युत्र-भारत विकला, निर्वितिष्ठ, अञ्चत्र-(यम् । চলিরাছে সত্তর, ভাবিয়া প্রকেশ্রু স্মরহর, বসিয়া বিজ্ঞাে । পায়নাক দর্শন, করিভেছে স্পর্শন,

গন্ধবহ সুখিত চইয়া ! यन यक दहिशा, श्रीत्रल याथिया, ভোষে-ভারে, ভাতিখা করিয়া मुश तक का किया, कह अम दिस्हा, ফল গলে- করিল মানন।। মধুকর গুড়ারে পিক কল কছারে. ভাৱে কেখি, সাবে সুর্যি-ঘনা দ ুকাৰ হ'তে চলিল, প্ৰাণে লাহি লাখিল, জনীকীয়েল বস মাণি লগত कर्णकीराज बक्त माथि भएत। (म दांशा (म शाहनका, छेशतम होहरूका, दौरारेट्स, बस्टान रहत ': अनुराह्य कोरबमी, एवं एवं गेडि दर्शनमान বলু পুলে, বিভাগ ঘটার ! সে কুঞ্জ কে ভুলাবে : মনে পথ চিনাবে. সে যে আগে, এসেতে ভথার ৷

সে যে আগে, ওসেডে, তথার ।
এ বাধার কি হবে, ভেটিহাঁরে কেপবে
রাধা যবে থেড ছাডি বাসে।
কত হাধা বাধিত। ফিরাইতে নারিড।
টানি নিড, অনুরাগ-পাশে।।
জ্যত-গতি আসিয়া, শরতেরে দেখিয়া।

চপলা সচঞ্চলা হইল। কি কেশিল করিবেন সে ভাহাঁতে মজিবেন

যনে মনে, ভাবিতে লাগিল।। পুরে৷ ভাগে অ'দিল মৃত্ মৃত্ কাদিল, क्षेकार्शिन, ऋष्पत यापुती। ু ১৫খ দেখি ভাষারে শবর ও বিচারে 📞 'বিধির কি. স্চনা-চাতুরী !! " তপ্ৰাৰ সুৰ্যা, পাৰে কোণা সুষ্যা, ্ত্যু হল, হাটল ভাগতে। लगा (कह अविद्यान अने अध-मांस(ल. ভূবে ফেড, কাঁহি নৰ সাতে ।। । मुधाईना "ननाम। एएमा द्यान कारात" াড়াতর করে প্রলোচনা। . 'উলাসীন বেনো, বিজন প্রাদেশে, कि ऐ क्रिक्ट, प्रशास्त्र असमा ॥" "নাফি কোন ইচ্ছা, ত্ৰেছি হদিছো, " ক্রিলেন, শর্ব এ ভাষা। "এ খৌরুন স্থান্তঃ, এ ভারে কি **আশায়ে ?**" श्रेमः धनौ कहिल जिल्हामा ।। . যুবা দিল উত্তর, "ভ্রমি চির-বাসর, বিধি-লিপি। খণ্ডন কে করে। " **/**श्चयनमो शामिल, शाहिशाम **डायि**ल, ् "মনুকি বলেনা, থাক ঘরে।। রুঝি ভাগ্য ভেকেছে, গৃহ-শূন্ হ'য়েছে,

সেই হেডু, হ'য়েছ উদাসী।

নহ ভূমি কামিনী, চিরত্ব: শুভাগিনী,
কোন্ লুখে, হবে অবিলাসী ।

ভূমি গৃহী হইলে, জনরব ছুটিলে,
কভ বালা ব্রিভে বাচিবে। "

নহ রছ কুরুপা, যুবা রূপে অরুপা,

ু স্ভাগিনী, জোমারে পাইবে ॥" এেই কথা কহিতে, চপলার জাঁথিতে;

ভালবাসা চিহ্ন প্রকাশে। শরতের ভাবনা, 'বে দেখি ও ললনা,

স্বনার, স্থান অভিলাদে !৷" শক্তিত হইল, ফিরি ফিরি চাহিল,

ধনী ভাষা, বিলাস ভাবিল। চপলার এ কাবে, খুণা দ্বিজ সমাজে,

ছিছি বলি, কুলায়ে পশিল। সন্ধ্যারে না সহিল, রাগে নাম হুইল,

শশি-কলা, হাসি উদ্ধে চলে ৷ লুজ্জা পেয়ে নলিমী, হ'য়ে পড়ে মলিনী.

কুমুদিনী, হাসে বদি জলে। উপবন-প্রহুরী, দূরে থাকি নেহারি,

কহে আসি, গৃহপত্তি-পাশে। প্রহরী যে দেখিল, ধনী ভাষা বুরিল,

नडी इ'टा, हरन किति बारम ।

সহ্যা প্রস্থান করিল। কি হ'লো কি হ'লো ব'লে, শুগলে ভাকিল। • দেব-অলে:-ভিড়াং : १८८६ र हो। करकात, सुरुष, केलाइ ह मत्त्र प्रात्त का इ दार । প্রতি-ব'লা-**আংমে**চেডের, ধইল সগ্রন। । यण (११,६७६३ श्रम्भाद्वी । কেই খাতা লেখে, ফেই পাডার বা খারা কভ লাই পথে কেৱল : জ্ঞোনে পাডার মুম, উপন্যাদ ব'লে 🖠 मणाराध का त्वा (का ता किन लाम किन भूषि, वास्त्र व्यक्त स्वाहन । कारता आकारतत धूम। शरीहरू अकेश कार्या, व्यानि (छ हरू यूग ॥ तर्भी - शहरी राहाता। এইবেলা গৃহি-কার্যা, সারিছে তাহারা।। ুউপবনে নিকুঞ্জেতে। র্নিরৎ বসিয়া, শম্প-শয্যায় স্থ**ংখতে।**। **इस निर्द्ध यात्नाक ।**

নানাশোভার শোভিরা। প্রকৃতি দেখায় রক্ষ্, চারিদিক্ দিয়া ।৷ বলাহায় কি কথায় ? এসময়ে কত ভাব, মনে আদে যায় গ এত সুখেও এখন। चुन्या-दिहरक थिय. महराज्य यन।! মনে অখনা জাগিছে ৮ ্স্থিরভার কণে কণে, তন্ত্রা আকর্ষিছে।। । চনকালে পাখ ভাগে। मञ्द्रात श्वनंक, खेरलंड लागि ।। ক্ষণপারে এটত হয়। এদিগে এদিগে, এই কথা কেছ কর।। কথা শুনিতে শুনিতে। কভঞ্জি লোক, কুঞ্জে প্রবৈশে ছবিভে।। न्द्रद शखीत-नियम ! भन्ना वाद्यान करत, विश्वासरकाशन ।। "আমাদের প্রভু যিনি। ॰ ভোষায় দেখিতে, বাঞ্চা করেছেন ভিনি।। " কেন কোন প্রয়োজনে ? धरे श्रेम, मंद्र९ कहिला, मर्सक्रान।। ভারা করিল উত্তর । " কি জানিব প্রয়োজন, আমরা নফর।।"

পুনঃ শরং জিজাদে। ভোমাদের প্রভু কে,বা, কছ মোর পাদে। ভারা কছে পুনর্দার । " আমাদের প্রভু তিনি, আরাম যাঁহার ॥" শুনি এই পরিচর । শর ভাবিলা, "যাওয়া অরুচিত নয়।। তাতি যার অধিকারে। মত লাগ্নে থাকা ভাল, সম্ভোষি ভাহারে॥ थेरे यछ मिल यम । डाइ/दिस माम माम, कतिला भाग । আসি প্রবৈশিলা পরে। আরামের পার্শ্ববর্ত্তী, বাটীর ভিতৰে !! বার্ত্তা পেয়ে গৃহপতি । আজ্ঞানিলা, " বছা করি, রাখহ সম্প্রতি। বেই অরে আত্তাদিল ৷ (महे चत्र नीति हिंछ, मह द जाविन । • " শুনি কোণায় এ সর।" চিন্তাকরে, তাহার না হ'লো অবসর 🛭 আশু চিন্তা উপজিল। বন্ধ করিবার আজ্ঞা, কেন বা করিল ৃ।'' **बहे किसात मगरत।** প্রবিষ্ট করার ভারে, ঘোরকারালরে।।

জিজ্ঞাদিলা ব্যস্ত হ'রে।

"কেন কন্ধ কর মোরে, আনিয়া জালরে।
এই শুনিলা উত্তর।

"প্রভাতে শুনিবে বিয়া, কর্ডার গোচর
পরে কন্ধ হ'লো দ্বার।
শরহ ব্যাক্তা হয়, দেখিয়া জাঁধার,দ

ै ^लदिशित गरन गरन, थङ हिल. যত হিল তুখ, আমারে দিল, এই প্রাণে মোর, কত সহিল, नः जिनि चार्सिक, मरव हः रिमन दाँहि गर, मत हुथे. नहि ভাग धरे, जागांत यथ, হয় বড় মোর, এই কোতুক, म'रल पूर्य (कांथा, ब्राट (ब !। विशेष इस, नाहि इस केर्नि १ সম্পদের সহ, পর্যায় ভার, বিপরীত সব, দেখি আমার, কারণ থাকিবে, ইহাতে। काइन धरे मरन, उंदि भाग्न, নিরপিত কোন, বাসার প্রায়, শশদের বাসা, আছে কোথায়,

বিপাদের বাসা, আমাতে।
রোধিল কেন পরি, চোরপ্রায়,
জনহান কারা, জিজ্ঞাসি কার,
বিপাদরে! তোর পান হেখায়,
তোরি পায় পড়ি, বলরে?
ভরিনা আর কোন, বলধরে,
ছংখা কর কেবা, সহজে মরে?
ভরিতেছি, জোমা ছাড়া অপরে.

এল কি দেখাতে, বলরে ?।
শরৎ এইমঙ. খেদ ক'রে,
মনস্থির করি, ভাবিল পরে,
''এরা সেই চোর, বিনা অপরে.

আমারে রোধিবে, কেন রে ? তারাই হবে হয়, অনুমান, আজি দেখে আছে, আমার প্রাণ, যদি প্রক্রি চোর. করি সন্ধান.

ভাই বধে আশা, হেন রে॥
মারার ইচ্ছা যদি, ক'রে থাকে,
ভবে কেন কক্ষ, করিয়া রাখে?
আবার কহিল, কালি আমার্কে,

य किছू कांत्रण, करव रत । जर्त कि धन्ना भिहे, हान नम्ने ? বুঝি উপদ্বিত, দাকণ তর,
সেই নারী দেখা, সহজ নয়,
প্রাণ-দরশণী, লবে রে !।
এদের হবে কেহ, সেই নারী,
কাছে আসি দায়, ঘটালে ভারি,
ভাই দেখি মোরে, নোবী বিচারি,
ধরিয়া বন্দী, করিল রে
কেণ চিন্তা করি, অবিরত,
মন হ'লো ঠিক, চোরের মত,
নিশীখ সময়, হ'লো আগত,
নয়নে নিলা, নহিল রে।

নিশীথ সময়ে রজনী।
কমন প্রকৃতি ধারণ করিয়া,
সাজায় গগণ ধরণী।
তার উপমান নাহিকু,আ্বর,
এই চোখে দেখে অরপ তার,
আথি মুদে ভেবে পাওয়াই ভার,

বভাব তাহার এমনি।
কত শত ভাব লিখিয়া থাকি,
কত প্রতিরূপ রক্ষেতে আঁকি,
আঁকি লিখি কোন রূপেতে নাকি,

37

প্রকাশে নিশীশ বেমনি ?!

অই চেয়ে দেখ গগণে।
অনির্বাচনীয় প্রভাব ক্ষুরিছে,
নৈশিক জগৎ-কাননে।
উল্কা ভারকা, গ্রহ, উপগ্রহ,
ভারেআবে শশী পূর্ণ-বিগ্রহ,
শোভা সমুদায়ে ক'রে নিগ্রহ,
আলোক দিভেছে ভুবনে।
শোভার ভাণ্ডার উছলে যেন,
উল্কা খলিয়া দেখাইছে হেন,
অথবা, স্থার সাগরে কেন,
চেউ না উঠিবে সহনে ?

ধরা ভিন্ন ভাব ধ'রেছে।
জল মাথে যেন দ্বিতীয় চক্ত্র,
• কৈরবীসহিত মিলেছে।
মিন্ মিন্ ক'রে প্রদীপ জ্বলে,
ঝিক্মিক্ করে খল্যোত দলে,
আলেয়া জ্বলিছে শ্রশান-স্থলে,
কোন লভা জ্যোভিঃ দিভেছে
ছ্বিনী ধরণী কি আছে আর,

কুমুদিনী সুডা ভাইতে ভার, অনুকুল শশী নাশে আঁথার, তরু মনোলোভা হ'য়েছে॥

উপস্থিত কি সময়রে।
পাত পাফী, নর, যাহারে সদত করে কোলাহলময়রে।
নৈহি যেন কেছ তথায় খার,
রাতিচর স্বধু করে বিহার,
তন্ত্রা আনে হেন দশা ধরার,

ঝিঁ ঝিঁর ঝক্কার হয় রে।
বুঝি শোভাময় হ'রে গগণ,
হরিয়া ল'রেছে ধরার মন,
ভাবে ভোরা ধরা ভাই এমন,

व्यविषा-ভाव छेनश्रदः !

আপনা পাশরি দেখিয়া! • হশ্য, গিরি, বন, আরাম, সাগর,

দেখাদিতে নারে ক্রিয়া। কোথা রহিয়াছি চেনাই দায়, ঘেন আশিয়াছি আর কোথার, আকার কিয়ায়ে সেই শ্রার, কেহ কি রাখিল ছাপিয়া :

চঁদে আছে ভাই ভরসা কভ,

অস্ত্রকার হ'লে ভাবনা হ'তে!,

লুপ্ত হ'লে! বুঝি আছিল যভ,

ধরাল উপরে শোভিয়া!।

সমীলে প্রতীর দেখিলা।

হিংজ্রপাশু আর কুকুর শ্লাল,

মানে মানে উঠে ডাকিলা।

হুল্ফার ছাড়ে কভেক চোর,
প্রত্তি কাঁকারে আভিকঠোর,
আনেকে ডরার শুনিহা।
হেন কালে একা সেই আগারে,
ভাবে, "বুঝি প্রাণ যাল একারে,"
শরং কিশানে পড়িলা।

শতি সকাতরে, তুর্গা তুর্গা স্মরে, যনে মনে করে,
বাঁচি কি প্রকারে।

াবন তুর্গা ভাঁর, দেখি তুঃখ-ভার, হৈলা অবতার,
দয়া করিবারে।

কিরাগায়ে আর, ছিল গুপ্ত-ছার, সেই বারে কার,

ġ,

পদ-শব্দ হয় 1

শব্দ অনুসারে, আসি পায় ছারে, বসি ভার ধাঁরে শ্রুতি পতি রয় ।। *

ক্ষণকাল পরে, ছ'র মুক্ত ক'রে, প্রবেশিরা ঘটে কাহার রম্থী ৷

ৰক্ষী সম্বোধিয়া, কহিল চাপিয়া, "আছুটি জাগিয়া। এসহ এখনি।।

যোর কারাণার, নহে খুমাবার, ভবে কেন আর কর কাল-ক্ষয় ?

এস বাহিরিয়া, যাই পলাইয়া, স্থির কর হিচা.

ত্যাগ কর ভয় ॥"

মাঢ় অন্ধকার, লোক চিনা ভার, অরেতে ভাষার। দিল পরিচয়।

भारता अथन, हर्रथंत कांत्रन, हर्श्य दिस्माहन.

कहिटल छेमन्न ॥

वको ভাবে মনে, ''শুনেছি खंदान, यनदा हक्ता. त्रकाकत्त्र कनो।

ভথাপি চন্দন, মুড়ায় জীবন, সুখী করে মন, কণি-শিরোমণি ৷৷"

্কতজ্ঞ হইয়া, বিনয় করিয়া, নারী সম্বোধিয়া, বিশ্ব করে। বিশ্ব ক্রেন্ত্র

नियांत्रन कति, कहिल ज्ञासती, ''क्लाकाल होते.

যুক্তি আর নহে।।"

জ্ঞাজি কারগোর, ডোর যে প্রকার, ভেমতি দোঁহার,

खन्याय गणि!

এনেতে আসিয়া, বসতি ছাড়িরা, প্রান্তর পাইয়া,

হয় হাউ-মতি ॥

শত্ত ইবার কি হেতু আমায়, রাথে চোর প্রায়,

े । য়ুনি কারাগারে १

हांस कि काइन, कांत्रल धावन, अभिवादक्षन,

কহ সবিস্তারে নি

'नातो कर्स्ट हता. इंखना हक्ष्मा करिय नक्स,

रहत रुख् इत,"

ফহিলা শরৎ, ''এলে কভ পথ, নহে ঘু**জি স**ৎ, কউ-সহা ভব ।।

মনে ভয় আরে, হ'লে রাত্তি পার, গৃহে যাও**রা ভার,** হইবে ভোমার ।

কৃছি বিবরণ, ক্লব্রুগমন, নাহি প্রয়োজন,

• বিলম্বেডে আর ॥"

। कथा अनिया, छणना शामिया, कट्ड, 'दिन नामिया।

নাহি কোন ভয়।

থাকিতে জীবন, আর দে ভবন, দেখিব এমন, বাঞ্চা মোর নয় 11 "

-

54

শরৎ কহিলা ''গুণবতি!

বাটিয়াছে কিবা হেন, গৃহ ত্যজিবারে কেন,
করিয়াছ বাসনা সম্প্রতি ?।

শুনে মনে ভয় হয়।

হইলা ললনা, কি হেজু বলনা,
ভাহাতে বাসনা ভয় ?। "

চপলা কহিল "শুন তবে।
ভাঙ্গিয়া দিয়াছে ভালে আজিকার সন্ধাকালে,
তব দরশন পাই যবে।
তব সক্ষে আলাপন।
দূব্য মনে করি, আরাম-প্রাহরী,
ভাভারে করে জ্ঞাপন।।

কেবা জানে ছিল রুলি,কাল।
কেবা জানে আলাপনে, মন্দ হবে প্রক্ষণে,
জ্যানিলে কি ঘটিও জঞ্জাল।।
সেই জন্য কোষ করি।
না করি বিচার, অগ্রজ আমার,
কেবল মারেনি শ্রেরি।।

ছুশ্চারিণী মোরে ভাবিয়াছে।

মন্দ-রীতি প্রকাশিলে, আছাড় মারিবে শিলে,
ভয়ানর আদেশ দিয়াছে।

উপযুক্ত দওতরে।

বিচার-আগারে, প্রেরিবে ভোমারে,
রাতি ব'লে বছ করে।

বিনাদোবে তব মন্দ কবে!
নার ভাগ্যে যাহা হোক, তব দুঃথজনা শোক,
ধরি প্রাণ আমারে না সবে॥
মন যুক্তি দিল বলি।
হইয়া গোপন, কারা-বিমোচন,
করিলে যাইবে চলি॥

হলো, যোর যত্ন ফলবান।
আজি এই মাত্র স্থা, কিন্তু পরে এত তুখা,
বাঁচা মরা হইবে সমান।
ভাবি মনে এই কথা।
করেছি মনন, করিব গমননয়ন হাইবে বেখা।"

ইহা শুনি কহিলা শরং।

শিষ্ম ভোমার ধন্য, কণে কণে অসামানঃ,
লীলা করি জমিছ জগং!

নবে গাত পঞ্চাম।
কতই ব্যাপার, কৈলা অবতার,
আশ্চর্য ভোমার কাম।

তিংগারেও ধনা গুণবতি !
মোর ছুংখ বিনাশিলে, নিজ ছুংখ বাড়াইলে,
এই ধার সুধি কি শক্তি !৷
কোখা প্রতি-উপকার !
ভাহা না পারিয়া, দিন্নু বাড়াইয়া,
ভোমার ছুংখের ভার !!

সাধা নাই করি উপুকার।
পাছে হয় অপকার, এই জন্য বার বার
কহি তন ভ্যজনা আগার।
ভাগ্যে যাহা থাকে হয়।
খভিডে কে পারে ? রহগে আগারে,
খভিডো নারীর নয়।"

চপলা করিল এ উত্তর।
কলক্কিনী লোকে কবে, সে লাজে কে বেঁচে রবে?
যদি বাঁচি শান্তির উত্তর।।
বিশেষতঃ এই কায়।
ছাপা না থাকিবে, আমারে নাশিবে,
মাথায় হানিয়া বাজা।

'বৃথিলাম কিন্তু চারুলীলে! রমনীর মৃহত্যানে, প্রতিপদে শক্ষা লাগে, হেন ইচ্ছা কেন বা করিলে? নারী একা থাকা নয়। না পেলে আন্তর্য বাঁচাই সংশয়, ব্রতী মুবতী দ্য়।।

গৃহ-ত্যাগৈ অনেক বিপং !

মৃবতীর বিশেষত, প্রকাশিরা কব কত,
ভেবে দেখ, "কহিলা শরং ॥

নারী কহে পুনর্কার ।

"বিপদ সহিব, গুছে না যাইব,
কিরিতে ব'লোনা আর ॥

ষায় যাবে প্রাণ নাহি ছরি।

থবে গৃহে বত হুখ, তাহ'তে বনেতে হুখ,

হুখে সব বিপদ-লহরি।

সতীত্ব রক্ষার ভয়।

জীবন থাকিবে, সভীব নাশিবে,

ইহা কি সভীর হয়?'

"বিবেগিনী এবে এ মহিলা।
চলিয়াছে নদী প্রায়ন রোধে কভু ফিরা দায়ন"
এত ভাবি পরৎ কহিলা।।
''কর যাহে ভাল হয়।
এখন আযায়, করহ বিদায়,
বিলয় বিহিত নয়।"

চপলা কৰিল, "কি কৰিব। তুমি বিদেশীর জন, যাও যথা চাহে যন, তব গাতি কেমনে রোধিব !! তুমি ছিলে অনুবল। তুমিও চলিলে, কি হবে ভাবিলে, তুগিগে ভাগ্যের ফল '!' দয়া-পূর্ণ শরতের মন।
ভানি সককণ কথা, পাইল এমন ব্যথা,
অঞ্জ-মুখ হইল লোচন॥
ভাবিলেন, "কি উপায়।
যে উপকারিণী, ফেলি একাকিনী,
বাইতে মন না শয়।"

কহিলেন. '' শুনহ লৈলনে ! • ।

ভাতৃ-গৃহে নাহি রহ, রহ গিয়া সামীসহ,

চলিবাহ স্বামীর ভবনে ।। '

বালা বলে খেদ করি ।

'হেলে বাঁচি রহে, হাল নাহি বহে,

নতুবা ছুংখেতে মরি !!

জানি বটে আছে মোর স্বামী।
কিন্তু বিবাহের পরি গিয়াছে ডাজিয়া বর;
কোখা গেছে নাছি জানি আমি॥
ছঃখ-কথা কব কত।
বুজিলে ভুবন, পাবেনা কখন,
ছঃধিনী চপলা মত।।

তিনি শেষে এই বিবরণ।
শরতের হৃদ্রেডে, দরা মেহ উভয়েডে,
হেড়ে যেডে করিল বারুণ।।
মন দিল উপদেশ।
শ্রাও সঙ্গে লয়েন কোন লোকালরে,
রাখিয়া হাইবে শেষ।।"

প্রকাশিয় কছে, "গুণবভি!
 ধনি ইক্ছা হয় চল. মন সঙ্গে সচকল,
 পরে হবে বিহিত-মুক্তি''।।
 হ'য়ে ছফা অভিশয়।
 শ্রদনী বলে, "পাই জাগা-বলে,
 গ্রদন ক্রণাময়।।"

শীত্র শীত্র চলে চুইজন, শীত্র চলে চুইজন।

পথে পথে উষা আসি: দিল দরশন।।

সর্বলোকে উঠিল শিহরি, লোকে উঠিল শিহরি।
আকাশে ভারার মেলা, লুকার সম্বরি।।
অভিলজ্জা পেরে ভারানাথ, লজ্জা পেরে ভারানাথ

মলিন হইল বেন, অগ্নি ভন্মসাৎ!।
হ'লো ভ্লান-মুখী কুমুদিনী, স্লান-মুখী কুমুদিনী।
ভয়ে ভ্লে ছাড়ি মুদ্রা, খুলিল নলিনী!।

मृत्व वाख छेवा-चारामान, वाख छेवा-चारामान । तक्ता निवादत (यन. प्रिथ माना ज्याम । क्छ-इत्य माछ। मिल शिक, इत्य माछा मिल शिक। বিজগণে কলয়বে, জাগাইছে দিক।। দেখি উবা নালে অস্ত্রকার, উয়া নামে অস্ত্রকার। এ কি এলো ভাবি ভিজ, করে হাহাকার। এলে। উষা বন্ধ আশা করি, উষা বন্ধ আশা করি। यागि-ताशिमी श'ल स्मी-तम धिका किंछु निया अभन निजनो, निया अभन निजनो । দেখিতে দিলেনা ভারু, ছইরা সঞ্চিনী। ्निधि मुन्ना छेवात अपन. मुन्ना छेवात अपन। श्यि-भाक इल काँदि, जक्लखांगा।। বয় গুপ্ত যাত দোষিগণে, গুপ্ত যাত দোষিগণে। **Б**थला भंडर (गरे मंड. धंरे कर्ष ॥ क्रके (পরে আম বিদ্যমানে, পেরে আম বিদ্যমানে ! প্রবাসের যোগ্য বাসা, লইল সেধানে ।। সেখা যত ভুটে লোক ছিল, যত ভটা লোক ছিল 🔝 আলাপ করিয়া, সকলেরে সম্ভোষিল ৷৷ रान देखा कवितन नद्धाव. देखा कवितन नद्धाव ! সহার চাহিলে সেথা, না হয় অভাব।। কিছু পরে চাহি যে সহায়, পরে চাহি যে সহায় 🖟 गहात्र পाहरल मिथा, द्वारथ हथलात्र 🗓 🐣

310

কিন্তু এই শরতের আশা,এই শরতের আশা। ফলে কি না ফলে, ফলে দাকণ ছুরাশা।

চপলার কি বাসনা, শরৎ জেনে জানে না, পুর্বাপর স্মারি ভাবে, ছুখিনীরে ছুখিনী। ছুখিনী না কন্ত পায়, করে ভারি সমুপায়, হথা চেষ্টা, সে কি ভায় স্থানী রে স্থানী ? 📑 লাল চেন্টা চপঙ্গান্ধ কিসে আশা পুরে ভার। কিন্তু তার কোন চেষ্টা, ফলেনা রে ফলেনা : পুৰুষ যাহ'তে ভুলে, ছেন ভাব চুলে চুলে, সাজায়ে দেখায় ভায়, ভোলেনা রে ভোলেন শরতের এক মন, সে ভাবিছে এক জ্ন, সে যে আর অন্য জনে, মজেনা রে মজেনা! উপায় হইল দায়, আশা তবু চপলায়, ্ ছাড়েনা অবোধ মন, বোঝেনা রে বোঝেনা 🗅 সংবা খামীর প্রতি, যতন করে য়েমতি সেই মত সুযতন, করিল রে করিল] তবু তার প্রতি মন, হ'লোনা তার মতন, যেমন ভেমনি ভাবে, রহিল রে রহিল ।৷ এই ভাবে বছদিন, যায় তবু অনুদিন, চাতকিনী মেঘে দেখা, ছাড়েনা রে, ছাড়েনা ! **ब्हिल कथा यनि कब्र, मुश्र्मान कात्र इत्र.**

उक-कर्ल विन्दू-वाजि, शर्फुमा ति शर्फुमा ॥ ভাব দেখে চপলার, অসুখ হ'লো অপার. श्त ভाবে, " এ कि ममा, इडेल (त इडेल 1 " कन ह'ला পाপ-ज्का, जूलि (मर्थ गृग-ज्का, मृशीद मगाम मना, यिल (इ परिला। কি কুকর্ম করিলাম, কেন গৃহ ত্যজ্ঞিনাম, জाङि शंन कृषाण्याखि, र'ल्या (त रत्नामा । সতীত্বে কলঙ্ক ছিল, কোন আশা না পুরিল. প্রবল-প্রেম-পিপাসা, গেলনা রে গেলনা ।। यांग लिथा हिन ভालে ভाशाई फनिन काल, হাতের লিখন হাতে। রহিল রে রহিল। ঘ'টেছে যে দশা মম. বোবার স্থপনসম, গুমুরে গুমুরে মন, মরিল রে মরিল।। শুনিনাই কারো কাছে, পুরুষ এমন আছে, क्लारफ् कास्ता यूथु छ्टाः त्र, त्रत्थना दत्र रहरथना धमन घरित शरत वाती यात-छत्र करत, ध्व कि कठिन यन, वाँकिना (व वाँकिना ।। क्यन क्रश (योवन, क्रमान चाकिश्वन, किइए उहे जुलाहेए ज, नातिल (ब नातिल। क जाइन नाक्कि मधु. निमूलत क्रल इधु, হৃদর দেখিয়া মন. ভূলিল রে ভূলিল !! नद्राय यहम-खाला, मत्य निवादिशा वाला,

क उ रे क स के कि स्म, महिल ति महिल।

मम मिर्मिश थ्रीय, कार्म कांत्र कर्त्वाय,

क मिन क सुकृत, नहिल ति निहिल।

ह भलांत क रे छार्य, जितिन ने हि यार्यः

कोन मिन क सुकृतः, र देर्य ति द हेर्य।

स्म मिन क मम से, का हेर्ल मिय कि ह्य १

ना हय शकि दुःथं, महिर्य ति महिर्य।

कुक कि क ति छ हैं हैं । जित्र महिर्य।

कुक कि क ति छ हैं । जित्र मिय छात क्षाला।

ह 'एए स्य प्रथं छाहा, मग्रमा ति मग्रमा।

कर्मा कि क क श ह्य, का मिक क क निर्मितः।

मा। मिथा सि कि, का सु, ह्यमा ति ह्यमा।

এতেও কি মদনের, শাস্তি না হইল রে ?
সন্ত্রাস্ত্র-কূলের কন্যা, রূপবতী অসানান্যা,
কুল মান ভ্যাজ, বিদেশির সঙ্গ নিল রে ।
পূর্বেতে যা ছিল সুখ, ভাষ্ট ও হ'লো বিমুখ,
ঘরে, পরে, পথে, ঘাটে, কলক্ক রটিল রে।
এতেও কি মদনের, শাস্তি না হইল রে।?

রম্য-হর্ম্যে ছিল বাস, পরিবর্ত্তে পরবাস, পর্যাক্ক ভ্যাজিয়া, ভূমি-শয্যায় শুইল রে। ভাল ফব্য খেত কালে, ত্বংখে খায় বথাকালে, অনুখের শাসনেতে, শরীর শোষিল রে !। যেই জন্য হ'লো আশা, না পুরিল সেই আশা, তুই কুল ছাড়া, মধ্য-সাগরে ডুবিল রে । এতেও কি মদনের, শান্তি না হইল রে ?।

কালা মাখা সার হ'লো, জালে মা পাইল তল,
অগার-জলের হাছ, ধরা নাতি দিল রে।
ছুরাশা কলাই নয়, কদাচিৎ পূর্ব হয়,
সবাই সমান নয়, আগো না ভাবিল রে।।
অবোধ মন যা বলে, সেই মতে যেই চলে,
ভার এই দশা হয়, ভূগিয়া বুঝিল রে।
এতেও কি নদনের শাস্তি না হইল রে?।

যে ছিল রূপের গর্ষ, ভাহাও হইল খর্ম,
সবাই ভোলেনা রূপে, ভাহাও দেখিল রে ৷
যুবতার হাবভাবে, লম্পট তুলিয়া যাবে,
রুজন ভোলেনা ভার, বিশেষ বুঝিল রে ৷৷
প্রণয় পরমধনে, চেনেনা গণিকাগণে,
ভাবিল, ভাতিই মন, শরৎ না দিল রে ৷
ধতেও কি মদনের শান্তি না হইল রে !৷

यित शूत्रां चारम, चना कारता मह्वारम,

म्निहित खिम जान, वामना या हिल (त ।

मान्यां का स्व व्यापना भाग वित का कि दस ।

मान्यां की स्था कर्षा कर का कि दस ।

काय कि स्था जांदा, हाज़िल जातक भारतः

किलन स्था करल, कि व्याहेल (त ।

अस्य कि सम्मान साखिना हहेल (त ।

सम्म (छमनं नेत्र. चैंदणः) दूचित्व (त्र । तिलू भक्त, मिज नश्च, मनश्च हरेत्व (त्र ॥

এই জন্য ধীর নরে, ধৈর্ব্যদির্গ বাধে সারে, চপলা চঞ্চলা ভাষা, কেমনে করিবে রে !!

অধীরা দেখিয়া তার. তুরস্ত মদন রে। করিয়া তুলেছে, হয় পাগল বেমন রে॥ শরৎ হ'লোনা ভার, তথাপি শরৎসার, এখনো আশর, দেখি করিয়ী যতন রে॥

পাবার হইলে দূর হ'তে পালে আসে র । পাবার না হ'লে দূরে যায় থাকি পালে রে ? কাছে আছে ভোগ্য নয়, যক্ষের যেমন হয়, সেই দশা চপলার, প্রোম-অভিলাবে রৈ!

শরৎ এ দশা ভার, বুবেও বোঝেনা রে।

যে ভাবে প্রথম দেখা সে ভাব ছাড়েনা রে।। ভষ্ট-নিষ্ঠ যেই জন, সে কি দেখি প্রলোভন, গোস্য ভ্যাজিতে পারে ? কখন পারেনা রে।।

বারিধি, ভড়াগ স্থানি, কত জলাশয় বে । অবিরাম পরিপাদী, জলে পূর্ণ সুর রে ।। কলাচিং বর্ণে ঘন, তর্ চা<u>ছেকেই মন,</u> বারিদের বারি বই, মনেও না লয় রে !।

কেন বিনাঘনবারি, চাতক না লগতে ²
চপলার প্রেমে রত, শরৎ না হয় যে 1²
ভালবাসা যার সনে, তার বিনা অন্য জনে,
মন কেন লবে ? সেত মনোমত নয় রে 1

বস্তুর অপেকণিক ভ. ভাল হ'ডে পারে রে ।
নাছি ফুল্য ভার, মন, ভালবাদে যারে রে !।
নেখ যেই মাটি খায়, কভু দে চিনি না চার, ্রি
মাটী হ'ডে চিনি মিউ, লাগেনা ভাহারে রে !।

রোগ-শোক-জন্য প্রাণ, কন্ট যবে পায় রে । নবদার-দেহ ছাড়ি, গেলে কি বা দায় রে । নাহি বায় অসময়ে, রহে ছুংখে ছুংখা হ'য়ে, দেহসহ ভারবাসা, ছাড়িতে না চায় রে !৷

প্রিয়জনে দরশন, কিন্তা পরশনে রে। কিন্তা আলাপন, কিন্তা বিচ্ছেদে চিন্তনে রে। িন্মা হর্দে গুণ গাও, কিন্তা রাগে গালি দাও, যাতে তাতে ভালবাসা, সুখ দেয় যদে রে!।

হাদে দেখ স্থমা, ম'রেছে স্থির করিরে।
ভথাপি শরৎ স্থা, তার প্রেম শরিরে।
এমন যে প্রিয়জন, ভারে ছাড়ি অন্য-মন,
হাতে পারে শরৎ কি, এক মন ধরি রে গ

ষদিও বিশ্বাস আর, পাবেনা ভাষায় রে। বিবাহও হয় নাই, এবে স্বপ্নপ্রায় রে॥ তবে কেন ভাবি আর, এ চিন্তা হয়না তার ? বুনি, আছে জীবনান্তে পাব, প্রভানশায় রে॥

कीवनारस्त गारत शारत, जामा मरनंमरन है: व्याद्ध राथा यिन मिथा, तरत्र अनाकारन रतः !। करे कना क्षमरन, जूबिरक छारात मर्तने, छात्र शारन तरतः तरत् यावर जूबरन रत्न ॥

27.0

ত ন্যান ভাকে কি সান্য, আছে চপলার রে।
চপলার বাদ্য হাদু, পেয়ে উপকার রে।
কার বাদ্য নাহি রবে, কেমনে পৃথক হবে,
তই চেষ্টা শরতের, মনে অনিবার রে।

যাতে ত্রাসের কটি, চপলা না পার রে।
তাহার ব্যক্তা কান্তে, করি দুকুলীয় রে।
বুরাইলা চপলায়, কতিল থাক হৈথায়,
আমি যাই যথান্তানে, করে বিদায় রে।

জ্পলা কাৰিয়া ধরি, তাঁর হুটী পায় রে। কহিল "কোপায় যাথে, ছাডিয়া আমাল রে॥ এখন কে আছে আরি, ভোগা বই চপলার, ভুব নত্ম ছাডি আমি, রবনা হেথায় রে॥

দাসী হ'রে চরণ সেবিব, সঙ্গে রব রে।
বিদ্ধিতাজি যাও ভবে, আত্ম-হত্যা হব রে।"
শর্জ ভাবিয়া দার, বুঝাইতে চেফা পার,
বোঝেনা চপলা কাঁদে, করি উচ্চ-রব রে।

ज्ञवरभटन भन्न किंद्रिन, विद्वहना द्वः। विनान नहेना बाजा, स्टबना घटेना द्वः॥ ঘোরনিশা হবে যবে, শব্যায় যুমায়ে রবে, সে সময়ে পলাইব, বুঝিতে দিবনা রে ॥

धरे युक्ति अनुगाति, मभद्र त्विशा ति ।

कद शिलास, भनौ मिथिन गरिसा ति ॥

बिदे द्विशाहिल, भनी दुवि युभीरेल,

तारुना अनिया, नस्त युनिशा ति ॥

ভূতে পেলে ভূতে কি, সহজে ছাড়াবার রে বেথা যাবে সঙ্গে যাবে, দেহ-ছারা প্রায় রে শরং তাজিয়া বাদে, যেমন গথেতে আদে. চপলা অমনি উঠি. পাছু পাছু ধার রে!।

বহু দূরে স্থাসিয়া, শরৎ কিরি চায় রে।
অবাক হইল দেখি, পাছে চপলায় রে।।
কহিল, "একি চপলে! বাসাঁ ছাঁড়িঁ এলৈ চ'লে।
চপলা জিজ্ঞানে. "তুমি চলেছ কেঁখিয়ে রে গ

শরং ছলনা করি কছে, "যাও বাসে রে কোপায় চলেছি জাসি, কহিব সকাসে রে ॥ চপলা উত্তর করে, "পলাইছ দেশাস্তরে, জামায় তাজিতে ইচ্ছা, বুরোছি আভাসেরে কিরাতে বিবিধ চেষ্টা, শরৎ করিল রে।
কিছুতে চণ্লা ভার, সন্থ না ছাড়িল রে।।
বিরক্ত হইয়া পরে, ক্রভ চলে জোধ ভরে,
চপলাও সঙ্গে সঙ্গে, ডেমনি চলিল রে।।

ক্ৰেক্ত্ৰ প্ৰভাতিল, ভাতু প্ৰকাশি (माँ इर विति कि नहिल। শ্রম-শান্তি নাহি করে, নারী সকাতার, শরতেরে, ডাকিয়া কহিল ।৷ "হও, ফান্ত গমনেতে, বহু ভ্রমণেডে, (गांत शेष्ट्र, श्टेल (वमना) क्रग, भांखि कति शेद्र, यन (यथा ४८३, যাবে, রতি বিরতি করনা ?৷" পথ-শ্রম অবিরভ, নারী সবে কভ, শান্তি হেতু, করিলে বাসনা। তাহে নাহি দিলে মত, মুখে সহি তত পাৰ হবে, চলিতে ললনা।। এই, মৃক্তি অনুসারে, কহে যুবা ভারে, "আছে ভয়, এ সব স্থলৈতে। কেন, ছেন কথা বল, শীড চলি চল, रिश्वा बंब अधीत मत्नु ।। " नात्री, मास छानवादत, नादंत बेनिबादत,

कि कदिर्दा, बरेल हिल्छ। मिथि, ভাব চপलांत अतर्ভत आत. क्रा गिष, नागिन गिष्ठि ।। হেন, বাঁধা শকটেতে, ধেরু নারে যেতে, চপলাও ডেমভি, হইল। ত-গতি হংলপ্রায়, বড় ছুল্লে যায়, कान-यद्धः शहत वाष्ट्रिन।। जनस्तिनो नई, छातू-एक नद्र, पूथ-इदि, इहेल मलिन। (यन ननी ग'लियांस, यर्थ वर्टेंह भीत.. तोत्क ग'ल, इस दा दिलीन।। वर्गलंडा ज्ञान इश, पिशि (म ममश, अनुकृल, यमि अ প्रनः মাটি, অভিস্নকটিন, গভি শাস্তি-হীন, (काशलाद्य, मट्ट कि कथन ?। "ওক ২য় পারিজাত, একি বজুাঘতি" স্বেহ যেন, শরতে কহিল ধ এই জন্য যেন ধীর, গতি করে স্থির, 🚶 (महे ममा, (मिंग्ड नाहिन।। नाती, वस कि श्रकात, जात्न मन बात, निमारून, रहा ना (म ज्या **ছ्लে, ডाञ्चि देव्हा हिल, काथा मूर्का**रेल,

7.

শরভের, বিরক্তি এখন।।
ডাকি, কহিলা "চপলে! ব'স ভকডলে,
আজি-শান্তি, করহ ক্ষণেক।
নাহি, কঠে প্রয়োজন, স্থপথ এখন;
তাহে আছে, সময় অনেক"।।
কৌ অভিশন্ত, স্পীতলম্ম,
তক্তলে, শরৎসহিত।
রামা প্রান্তি-শান্তি করে, কালী যদ্তি পরে,
ক্রমে ক্রমে, মধ্যাক্ উনিত।।

উঠিল প্রচণ্ডভাবে, গগণ মাঝারে।
সরোজ-বাস্ত্রব।
বাড়ে কিরণের ছটা, দিবার যৌবনে ঘটা,
দেখি সুর্য্যমুখী কুল, ফুটি একেবারে॥
যোগার আসব ॥

হি মধুপানে যেন, তুপর বেলায়।

/ মেতে ওঠে ভ'নু।

কি দায় ঘটালে ফুল, প'ড়ে গেল হুলহুল,

সহজেই রক্ষা নাই মধুপান ভার।।

সহত ক্ষামু।

আগে ছিল শন্য-ক্ষেত্র, ধরায় ঢাকিয়া।
নাহিক তেমন।
পঞ্চ-শিখ নেডাপ্রায়, কত স্থান দেখা যায়,
খেয়েছে মাটির রস, শিশির শুসিয়া।
ভাতে এ তথুনু!

মক আর ছোট বড়ু ক্সান্তার মাঝারে। ভরার পরাণে। ছায়াভক স্থবিরল, জলাশয়ে অশুণ জল, মরীচিকা, ঢেউ খেলাইছে চারিধারে।। কে যার সেখানে।।

শাৰে মাৰে ধুলা উড়ি, করিয়া আবার ।

ঢাকিছে আকাশ।
ধরা পোড়ে রবি-করে, বাস্পু উদ্দীরণ করে,
ভাহে চারি দিক্, দেখাযার ধুমীকার ॥
লাগার ভরাস।

দিবা ভাগে লোক মাৰে, সদা কলধানি।
বিরাম না হয়।
কালের প্রভাবে ভায়, করে ধ'রেরাধাপ্রায়,
হত মবে বায়ুবয়, ভাই মার শুনি ॥

निर्देश श्रम ॥

এবে নাকি বায়ু, বসন্তের সহচর।
সংসর্গ-গুণেতে।
ইইয়া মহৎ কতি, সদয় স্বার প্রতি,
ইতে, রক্ষা করে চরাচর ॥
সংস্কোবেতে।

এ সময়ে, চপলা শরৎ, গুই জনে।
কাস্তারে মধ্যেতে।
-শ্রান্তি শান্তি আংশে, ছায়া-তক-তলবাসে,
বিদিয়া অপিল মাঁথি, প্রাকৃতি-কাননে।।
মনের সম্বেতে।

ভীষণ সন্ত তবু প্রক্রিত তখন।

সেজেছে হন্দর।

ক্রিভার অগ্নিরাশি, পোড়ার বা ভর বাসি,
প্র্মা-ঢাকা হ'রে, লুকায়েছে দিক্গণ॥

হইয়া ক'ভর॥

ছাতা হ'য়ে মাথা দিয়ে, মূলেরে **লুকা**য়।

• বতেক পাদপ।

জলজেরা ফুলে দলে, লুকায়ে রাখিছে জলে, শাখা নেজে ভাকে ভক্ত, পথিকে ছারায় ।। বেখিয়া আত্রপ ॥

্ এসময়ে বাহাদের, ভাছি প্রয়োজন। ভাহারা চ'লেছে।

উদরের পরায়ণ, কুফ্রিকাণী পক্ষীগণ। অমিছে, নতুবা অন্যে বিশ্রাম কারণ। পাদপে ব'কেছে।।

স্থুই কি বাসে আছে, ভারা তাত নয়।
সংগীত গাইছে।
অনুপম সে সংগীত বসস্তের মনোনীত,
আহা কিবা স্বর, মধু হ'তে মধুময়!।
জগৎ মোহিছে।।

ভাষাদের বীণা যেন, অলির গুঞ্জর।
বাদ্য বাত-ধ্বনি।
ভার সঙ্গে স্থাপে ভাসি, গোপালে বাজার বাঁণী,
শাখা নাড়ি ভক্ত আদি, নাচিছে স্ক্রন্তর।।
শক্ত স্বন্তবিন।।

দেখে ভনে তুই জনে, আনন্দে মগন।
সহসা পশ্চাতে!
কাহার প্রেরিড চর, ক্রেমে হ'রে অগ্রসর,
"এই যে পেয়েছি", ব'লে করি আক্রেমণ।।
ধরিঞ্জাঁহা হাতে!!

তখনি সঙ্গেতে প্রায়ে করিল গ্রমন।
বিপদ ছন্তর।

ােলহে ভয়ে হ'য়ে ব্যক্ত, জিজ্ঞানা করিলা এন্ত.
করে ভোরা ল'য়ে যাস, কোথা কি কারণ ?।'
দিলনা উত্তর।

যজাত নিকেতনে আনীত ছুইজনে,
দেখিয়া সেই ক্লে, গৃহের পতি।
কহিলা, "চরগণ! করিলে অকারণ,
কৃতত্ত্ব আঁচরণ, ভজের প্রতি।।
হাহারে প্রয়োজন, তাহারি অন্বেষণ,
এরপে অন্যজন, এননা ধ'রে।"
চরেরা দোষী হয়, মার্জ্জনা মাগি লয়,
গৃহস্থ সাকুনয়, বতন ক'রে।।
উভয়ে সমোধিয়া, কথাতে সম্বোবিয়া,
স্বপথ দেখাইয়া, 'বিদায় দিল।

কাহার অন্বেয়ণে, যতন কি কারণে. সুধাতে ছুইজনে জুলিয়া ভিল।। জিজাসে কোনু জনে, ভাবিছে মনে মনে मिथिल (अहे कार्ग, गुरक जारन) নিকটে সমাগত, আলেকৈ রাজপথ শোভিয়া মনোমত, রূপের প্রেক্ট এরপ রপবান, ভুলার মন গ্রাণ, इत्र यन थांग, तमनी कंटन । চপলা দেখি ভার, শহতে ভূলেযায় অধীরা হ'য়ে প্রায়, আপনা ভেংনে ॥ ুকে দে রূপবতা, হইয়া গ্রীভি-মতী, নেহারে যার প্রতি, অননা-মঞ্চে। कि क्रां तमहे जन, जुलाता ब्रांथ मन ছুটিল আঁখি মন, মিলি ছুজনে।। প্রথম দরশনে, আশক্তি যেই ক্ষণে, উদয় হয় মনে, বিরশ করি। 🖟 ভাহারা লে সময়, কি ভাবে ড্বেরিয়, লিখে কি বলা হয়, স্বরূপ ধরি? যম্যপি সে সময়, থাকিলে লোক-জয়, সে ভাবে রাখা হয়, গোপন ভাবে। 🐰 📜 বিতীয় ভাব ভাঁয়, ভাবুকে খুজে পায়, कारनात शांख्या मात्र, क्रिक्राश शांद ?।

উভয়ে ছুই ভাবে, রাখে গোপদভাবে, এলনা অনুভাবে, তৃতীয় জনে। শরতে ছুইজনে, আপদ ভাবে মনে, বাধারে কে স্কুকণে সুস্কুদ্গণে?।

- (डर्विहिन, व यूवा दिश दिल, বদতি ছারু দেই স্থানে। পথিক যে প্রকার, ভ্রমতি বৈশ জীর, वित्नभी बूद्य अनुगातन ! জিজার হ'লে পরে, যেরপ ভাব ধরে, র্মথেতে সেই ভার আমি। নিবর্ত হয় হয়, সে মুবা সে সময়, प्रिथिश (मह यूथ्यानि ॥ কহিল, "মহাশয়! ভাবেতে বোধ হয়, কি যেন করি অভিলাষ ৷ कहिए र्थवर्डिया, बहिएल निवर्डिया, * কি কথা করহ প্রকাশ না" শরৎ কৰে ভায়, 'অধাব যে কথায়, विमि । (म कथा कि जान ?" विद्मानो वटल, ''छाइ, विलाल द्यांच मारे, উত্তরে পাইবে প্রমাণ ॥" "जानं वन वन, और य वानक्न,

পশ্চাতে শোভিছে কাহার ?" ं भंतर हेश करा, विमिनी करह "इस. এজন কোন জমিদার ॥" 'आमितं कि कांतरन, आनोख शंदा करने, विषुक्ति भारे शूनंद्धात ?" ज शक्त कंटला श्रमः, विर्तिणी वटलकार्जनः জেনেছি কারণ ক্রাহার ॥ এই বে ভূমিপতি, ইহার রূপবতী, ছুহিতা ছিল পিতৃ-বাসে। একদা এক জন, অতিথি আগমন, कतिल देशा आवारम ॥ সজ্জন দেখি ভায়, দ্বপদা প্রীতি পায়, আলাপ করে ভার সনে। দৃষিত ভাবি তায়, ভূমিপ ছুহিভার, निरंध करत जानाशंत ॥ मात्रीत त्रांश हिल, यहां शि घूर्याहेल স্থপনে শ্যা ভাজি যায় ৷ कथन पुलि खांत्र, इहेत्रा गृह शांत्र, আসিয়া মাঠে মাঠে ধার ।। यिन अकामार्य, माउर्क गृह- फार्म, वे তথাপি এছ-ক্ষের ভার। त्म निम ब्रांखि (बाटन), डांबादन लटन द्वारम

निय ध्रा

হইল গৃহ আম পার।। ভাহার আয়ুঃ শেষ, ওনেছি স্বিশেষ, ভাষারে ব্যান্তে ঘ'রে মারে। अजनी (भय र'तन, जिल्लि गांत्र हतन, (कर ना श्रीत अवनादत ।। ক্রিনী" কোথা গেল. বলিয়া এল থেল, क्षेत्रा (काटक शक्तिहरूत । উটিল মহাশোক, ছুটিল কভ লোক, খুজিল ভন্ন ভন্ন ক'রে il पृत्रएक कान जन, कतिम मृत्रभन, বাঘেতে করে যারে হত । খণ্ডিভ-দেহ ভার দেখার যে প্রকার. (मिथल (मह सिर्च माछ ।। क्रायरण जानरकरण, (मिश्रा जारकाजाः) প্রভারে ব্যান্তে নাশে ভারে। ভ্ৰিণ সৈ কথায়, বিশাস নাহি পায়, नत्मशै कात्र जाशनाद्य ॥ সন্দেহ এই ভার, অভিথি গুরাচার, কুহকে বলীভূত করি। বালারে সঙ্গে করি: থাকিভে বিভাবরী, र'द्रारक्ष द्वि दिन्नोखडी ॥

দিবলৈ অভিষয়, সহ লে দানিনী

336

व्यानान (मृथि वनश्रत । এরপ সন্দেহেতে, বিচারি বস্তুরেতে, পাঠার চর অম্বেবণে !! চরেরা দলে দলে, ফিরিছে নানা ছলে. ^{' "}रुद्रिता नदारे कि **फार**न ? प्रमोत्र मिनीए, जुलाह मामिनीए चिवि जूमि अनुगाम ॥ ভূত্যের আনে ধ'রে, ভূমিপ দেখি পত্তে, मद्दर मिल यूक कति।" छनिया छथा छछ, भवर करह, "रार्थ, अञ्ची करत मादि शति।।" পরেতে একত্রেতে, বিবিধ আলাগেতে, वितिभिष्ठ जिन कार । আসিয়া স্থানাস্তরে, বাছিয়া বাসা ক'রে, विकास ब्राह्म शिख्यान ।।

थोक्क खनाथ जरम, वर्षमीरक विश्व हरता,
मीन कि जावात शास्त्र, खबीनका निक्वास्त ?
विस्मित मस्मामीन, क्यिन हरेन ।
हशनात मृष्टि कांत्र, विस्थह वर्षमीत्यात्र,
खोबीनका रात्राहेशा, हशनात त्रांश निश्चा,
स्मित्र शंक्राह जात, किहा माहिन ।।

বিদেশির হ'লো দায়, মন ছাজি কোথা যায়, কাযেই চপলা যেখা, যায় সেও যায় দেথা, যেন চপলার, পোষা পশু পাছে গায়। শরৎ ভাবিলা মনে, "এ কেন মোদের সনে ? গ্যাধের সঙ্গেতে যেন, মাংস-লোভে শিবা কেন,

"শ্রুষ্টিপার লোভ বুঝি, ধ'রেছে উহার ॥"
বুঝিতে লোভির মন, চাহিনা অনেক ক্ষু,
ক্রেয়ে সব ভজু পায়, চিস্তিত হইয়া ভায়,

শরং ভাবিল, "হ'লো বিষয় উৎপাত। লোভির অসাধ্য নাই, লজ্জা ধর্ম্মে দিয়া ছাই, ভুলাইয়া চপলারে, সতীত্ব নাশিতে পারে,

ধে দেখি ব্যাপার, ভাই ঘটে বা পাশ্চাং ।। । ভাব দেখি চপলার, রুঝাগেছে যে আচার, অসতী হোক না কেন, মোর সঙ্গে থাকি যেন, ै,

উপস্থিত সতীত্ব, তাজিতে নাহি পারে। এবে যে সতীত্ব আছে, যত্ন পেয়ে মোর কাছে, ভাহার বিনাশ হয়, দেখিবার যোগালেমা,

এখনো করিব যতু, রাখিতে ভাষারে।।"
ভাবি এই যুক্তি পায়, "পাঠাইব চপলায়,
উহার শ্বশ্রসালয়ে," তখনি সত্র হ'য়ে,

জিজালে, "নে ধাম কোথা," ডাকি চপলায়।
চপলাবু কারে কর, "জামার বভরালয়,

দেবীপুরে বর্তুমান, ভাহার কেন দন্ধান,
কিবা প্রয়োজন, ভেন্নে বলনা আমায় গা
শরং কহে, এখন, এই জন্য প্রয়োজন,
ভোমারে পাঠাব দেখা, মোর সঙ্গে যেখা দেখা,

এরপে ভ্রমণ তবং যুক্তি-সিদ্ধা নয়। পিতৃ-গৃহ নাহি চাও, শ্বশুর-ভরনে যাও. নারীর শ্বশুরালয়, অসুধের বদি হয়,

তথাপি থাকিলে সেথা, নারী-ধর্ম রয়।। কাষকি অন্ত্র্থ সহি, গোর সঙ্গে সঞ্জে রঞি আমারো কাথের ক্তি, বিশেষত গুণবতি!

জনণে বিপদ কত, করিলে দর্শন ? .
ভাই রলি কথা শুন, মোর বাক্যে পুনঃ পুনঃ .
অবহেলা না করিয়া, এই মতে মত দিয়া,

সুখী করি বল, করি, ভার আয়োজন ।।" পূর্ব্বে এই কথা হ'লে, নাকে ক্রাঁদি কভ ব'লে, অমত প্রকাশ করি, থাকিত আঁচল ধরি,

আজ কাল নাকি ধনী, সে ভাবেতে নাই। কৰিল, "কৰ্ত্তব্য নৱ বাহে তব মন্দ হয়, আজীয়ের মৃক্তি যাহা, মন্দ নাহি হয় ভাহা,

তব মতে মত দিয়া তবে তাই বাই ॥" তথানি প্রস্তুত হ'য়ে চপলারে সঙ্গে দয়ে, শারৎ বাইতে চার, চপলা নিবারি তায়, কহিল, "অযুক্ত হয়, যাওয়া তব সাতে। যদি র'টে থাকে সেথা, আমার এসব কথা, বহু শাসন করিবে, তাহা আমার সভিবে,

ভোমার সবেনা হবে, বিপদ পশ্চাভে ॥" ^ক শরৎ কহিলা ''বাহা, কহিলে সম্ভব ভাহা-শক্ষী একাকিনী নারী, কেমনে প'ঠাডে পারি»"

ধনী বলে, 'কাছারেরা অবিশ্বাসী নয়।" শরৎ এ কথা মানি, শিবিকা কাছার আদি, গাত্রা করীইয়া দিল, চপলা বিদায় নিল,

থেন কোন প্রেচিন চলে, শ্বশুর-আলয়।।

শ্পলা যাইলে পরে, শবৎ মনেতে করে।

শশুভগ্রাহ কিরে এল, যামদিয়া জুর গেল,

কোন্পাপে পাপএছ, মোরে আদি ধরে ? যে দেখি পাপের কুপ, এ যৌবন আর রূপ, রূপ ভোর মুখে ছাই," এই বলি মাথে ছাই,

যোবন গোপন আদে, যোগি-বেশ করে।
প্রংসারী কখন নই, যোগে কেন নাহি রই १

ইহা ভাবি প্রেম-যোগী, সেথা হণতে যায়।
কৈ জাভি বিশ্বাস নাই, চপলা সেই বালাই,
বদি ফিরি আসে পুনঃ, হাড়েতে লাগাবে খুন,
এই জন্য স্থানান্তরে, কুটির নির্মায়।।

বোগীরে ধার্মিক জ্ঞানে, বাঙ্গালিরা বড় মানে, ভ্রমিয়া এনেছে যোগী, আসি কড় চিররোগী, স্তুত্তি নতি করিতে, লাগিল অবিরাম। আমোদ পাইরা ভারু যোগী যাহা মনে চায়, ভাহা বলি, রোগিগণে, ঝেডে দেয় অন্য-মনে, ক্রমে দ্রদেশে রটে, যোগীবর-নাম।।" রোগী ভিন্ন অন্য জনে, গণনার প্রয়োজনে,

প্রশ্ন করে যে বাহার, আশার বুঝিরা তার, উত্তর প্রকাশে বোগী, এমত প্রকার। বার্থ হয় কদাচিত, মান বাড়ে যথোচিত, কড লোকে যত্ন ক'রে, ভোগ দেয় যোগাবদে

যোগির বাহ্যিক হখ, ঘটিল অপার।।

পঞ্চম সর্গ ৷

--

এক দিন যোগীবর, বদি বাজিচর্মোপর, शंत्रिमिर्श (योजन इ. कछ नत नाती। ेरंपन (एनएएवेंडिशर्ल, भक्त छन्न निवादर्ग, পূজा करें बिलांहत्न, मध्य जिश्वांति । উপস্থিত সেই ফাণে, বিধবা রদ্ধার সনে, थक युवा ऋषे-यत्म, वाशि-मन्निशातः क्षा र एवं यांछ-कंब, निर्वानिन, "यांनीयक ! मा अ त्यादा अक वत्र स्थी ह'हे लाल ॥" োগী বলেঁ 'বর-দাতা, এক মাত্র আছে ধাতা ভিনি সকলের পাতা, চাহ তাঁরে বর ।" ব্ৰদা কছে পুনৰ্বার, "যে বর চাহি আমার, দে বর দিভে স্কোমার, শক্তি স্বভরে ॥ আমায় প্রসম্ব হও, খ্যানেতে জানিয়া কও, তুমিত সামান্য নও, কি অজ্ঞাত তব ? শুন মম অভিনাষ, কহিতেছি উপন্যাস, উভর কর, প্রকাশ, শুনি সেই সব।। যোর এক-পুঁজ ছিল, বিপাকেতে বিনাশিল ' पर्व अनि ना महिल, योहिशास्ट्र (महे। गडा कि मा अधिवान, केरि स्थारत अ मरवान, े

পুরাও মনের সাধ, এক প্রশ্ন এই ।। ্ অন্য প্রশ্ন এই আছে, চাহিয়া দেখৰ কাছে, দাঁড়োয়ে আমায় পাছে, এই বে মুবক। একি মোর সে সম্ভান, প্রস্তে যুড়াতে প্রাণ-কিয়া কারে। কুসন্তান, প্রধান বঞ্চ ।" े क्षेत्रां कहिशा खेदन, इत्या चानत्म मनन, यांगी ভारत, "७ छक्तन, द्वि विनिशाह । ভিনিলাম যে প্রকার, এই র্দ্ধার কুমার, আমিই বা হব ডার. বিচিত্ত কি আছে ?৷ ভাল দেখি गिनाहेश, यम उन्हु প্রকাশিয়া, शह उद्घ क्रिकातिशा, अतिह शिमन । कत्न (यन मान लहा, अनुमान विष्या नहा, প্রশ্ন শুনি সুখোদয়, হয় কি কারণ !। किंदु এই यूरा जन, अंत्र मुद्रक कि कांत्र। ू, . धरे कि धर नमन ? छाद्यां यनि दत--।' देश जावि तारे खात. प्रिचिं वहेंन मर्तन. 'शाघाटि देशांत्र मत्न चाट्ट श्रिक्षः॥' महमा উদিল शंजिः कहिला उद्ध शंकाणि. "এই জন অবিশাসী, এই কিভিডলে। মাধৰ ইছার নাম, নিবাস গোখাট আম, लाखिड मार्यद्र थांच. करह क की महल ॥" ্ৰোগি-মুখে পরিচয়, কলি ধুর্ত পেরে জয়-

शलांट डेमाड रहा, धात याशीका। कहिला, नर्भकार्ण, 'वस कहि ध कुछ्छ (न. বিচারক-নিকেডনে, পাঠাও সভর ।। অবিঞ্ক নরাধ্যে, বিনাশান্তি কোন ক্রমে, **इ.स. माहाधारम, अशकाह हरत**." मकरल आकर्षा भारत. (यागीरत मर्सक क्लारत. তাঁর আজ্ঞা অভিযানে রক্ষা করে সবে। বাঁধিয়া লইয়া ভারে, চ'লেছে বিচারাগারে, যোগীবর দে সবারে, করি নিবারণ। किला "काशक तर, लिशि पिर माझ लए, আছে বিচারকদহ মম আলাপন॥" পত্তে লেখে যোগীবর, 'তাজি আপনার ধর, এডাইয়া মৃত্যুকর, সুষ্মা হারাই I সেই ছুঃখে নানা দেশে, ভ্রমিয়া আসিয়া শেষে. अ (मर्ल नजानि-(वर्ण,नग्रय कांडी रे ॥ शाशारिक विश्वितांनी, माध्य वक्षक व्यानि, বঞ্চ- শার অভিবী আমার সাক্ষাতে। ংই জন্য ধরি ভারে, পাঠাই বিচারা গারে, 🧦 নও পায় স্থবিচারে, নাপায় পলাতে ! यना (युगरवान बाह्ह, निविज्ञा जानाव शाह्ह, पथन अरमिक कार्ट, भाकार इहेरव ।" रेश लिथि याजियान, लिलि कति नयादान,

কহিদিলা দেই স্থান, যথায় যাইবে॥
দেই ধুর্ত্ত সুরাচারে, পাঠারে বিচারাগারে.
নিকটে ডাকি রদ্ধারে, অতি সমাদরে।
কহে, "করিগো প্রচার, কোন জন-সমাচার
দেই কি তব কুম্বি, দেখ মনে ক'রে॥"

ं म् अनिशाबि जनवात, जिन्नियम वर्ष राय, श्रीकश-श्रिधान, एतमार्गाउ भा। প্রভুরাম নামে কেহ, গিয়াছিলা ছাডি গেহ কলত পুরেরে লয়ে, সনেতে গো।। क्रशंबाध (म मय(श्. नवक्त्वत इ'र्स. (मां जिद्द, मिश्चित, क्षेत्र कांत्रत्व त्या । অভিনমারোহ হয়, এই জন্য রোগ-ভয়, প্রবল হইল, সেই ভবনে গো।। 👑 মহামারী বটে ভায়, বছ লোক নাশ পায়, প্রভুর ভনয়ে ধরে, রোগেতে গো ৷৷ 🏄 राहिवाद नाहे खामा, छाहे जूनि जानवाम। ভাজিনা আঅজে, মৃত্যুকরেতে গো।। ্ সঙ্গিণে ছাড়ি যায়, এই ভয়ে বাপ যায়, পরাণ লইয়া করে, গমন গো! • জাপনি বাঁচিলে পরে, কড পুত্র হবে ঘরে, ভাঁদের বিচার এই, ডখন গো!

হেন মাতা পিতা আছে: শুনিনাই কারো কাছে, বডই কঠিশ প্রাণ, তাঁদেব গো। যা বাপ কঠিন যার, প্রাণও কঠিন তার, डाइ कि भानमा थीन, फ़्रालंड भा !! ঘত ভাবি সেই ছেলে মেভরে শাশানে ফেলে. শ্গাল কুকুরে, নাহি ছুঁইল গো! ্দই ভাবে দেখি ভারে, কোন সাধু-ছালাগারে, কাৰণ্যরসের জ্রোভঃ, বহিল গো।। प्रथमि जुलिहा मिला, यज्ञ कति दीहाइला, ক্রেতে বৌধন তার, হইল গো। দরৎ ভাষার নাম, কোথা পিতা প্রভারতে, কোপাণ জননী বলি, ভ্রমিল গো ৷ अभि जभि कछ जागी, भारत इहेशा हाती, সেই সে শরৎ এই, বদিয়া গো। ায়ারে দিয়াছ ফেলে, এই কি না দেই ছেলে, गत्न कि विलारी (तैथ, ठाविश्वा शा॥" ेरिट मार्य कथा, महाम लागिल राथा, A. M. নয়নে জুংখের বারি, বহিল গো।। হি বক্ত,-মুখ পানে, পুত্ৰ-ভত্ত্ব শুনি কানে, ভেডনা ছারায়ে বৃদ্ধা, পড়িল গো য ^{াপ} শ্বিত স**র্বজন, করিল** বহু যতন, ं मद्भावता र'दत्त हका, शाहेशा द्या।

শরতের মুখপানে, চাহিয়া আকুল-প্রাণে, কাঁদিতে লাগিল, গলে ধরিয়া গো॥

তুমি কি সেই আগার, শরৎ টাদ-কুমার ? এতই দুঃখের ভার, কপালে ছিল তোমার !: आधि कि कानमः शिनी, इहेश गर्छशातिना । ভনয়ে ভ্যাজি আপনি, আর কে হেন পাপিনী धरम क्रांपंड (ছाल. मणा वील मिरे क्रांता। সোণা ফেলিদিয়া জলে, দিয়াছি গ্রিডা সাচলে প্রাণাধিক বলি যারে, প্রাণ রাখি ছাড়ি ভাবে ধিকু ধিকু এ আফারে, ধিকু ধিকু এ সংসাংঃ मिथि निवासीय (जाति, क्षेत्रासाध नया कातः। या द'रत जामि कि क'रत, रक्ति जाहि रेपर्धाप যদি সাধু না দেখিত, বাছা তবে কি হইত -সাধু করিয়াছে হিভ, আুমা হ'তে মথোচিত স্থু ভোরি পুণ্য-বলে, আজি ভাগি স্থ-জে গর্ডে ধরৈছিলু ব'লে, কভু এ ফল কি ফলে কুপুত্র অনেক হয়, কুমান্তা কাহার রয় ৷? ভূমি মোর স্কুলয়, স্থাতা ভোমার নয় ।। শেষে সুখ ছিল তাই, পুনঃ তোত্ত দেখা পাই আজি ভোর পিডা নাই, কারে এ সুখ জান[ে] হেন পুত্র আছে যার, তার দশা অবীরার গ

তুঃখ নহে কহিবার, ছি ছি অভাগ্য আমার॥ পুত্রবভীর কি শুখ, দেখিনাই ভার মুখ ৷ অ:জি গোল দে অস্থ্য মনে ধরেনা কৌতুক ।। টাগমুখে যা যা বল্য প্রাণ হোক রে শীতল ! ्किल जुर्थ व्यक्कल, धुरे वाञ्च मकल । আহা ম'রে বাই হার, হ'রে কাতর কুরায় : একা পহিয়া ধরায়, কভ ডেকেছ আমায়॥ বড় ছুংখের জীবন, ডুফি করেছ ধারণ ৷ নাভূ-ত্ৰেছ যে কেমন, ভূমি জাননা কথন।। সাংজ্যে এ মার উদ্দেশে, কভ যুরেছ বিদেশে । ানে। ছংখে বুঝি শেষে, ধরিয়াছ যোগি-বেশে। াছা আয় করি কোলে, যুছে দেই আঁখি-জলে। ্মডে দেই রে অঞ্চল, ভন্ম মাধান কমলো। ংসে ব'ল গৃহ-মামো, লিপ্ত হও গৃহ-কাছে। পার এখানে না সাজে,ছেড়ে দাও যোগি-সাজে।

নানা ক্লপ ছাদে, বিনাইয়া কাঁদে, রদ্ধা অধীরার প্রায় গো: । সে ভাব দেখিয়া, ক্রন্দন শুনিয়া, অনেকে কাঁদে তথায় গো।। ককণা যে রস, শুনি মনোবশ, কদাচিৎ কারো হয় গো।

ভাছে যার ভরে, কাঁদে অন্য নরে, সে কেমনে ক্রির রয় গো! ।। मद्रमद्र मृद्राः (माज वाहि यहिः মর্ম হয় বিলোডন গো। ভবু ধৈষ্ট্য থ'রে, শরৎ সত্তরে, সে ভার করে গোপন গো **७** निष्ठ टामना, "कि कर्त्र स्थार्गः. উপস্থিত যত জন গো।" वांमना शृहिल, मकाल धानिल, "खान्डरी अहे शहेन भी।। এত গুণযুত্ত, প্রভুরাম-স্কৃত, বিধি আজি মিলাইল গো। ধন্য ওর মায়, ঈশ্ব-কূপায়, তারান ছেলে পাইল গো ॥" ত কথা শুনিয়া, পুলকে পুরিয়া, শরৎ কছে, "জননি গো গভারুশোচনা, এখন ক'রনা, গেছে ছুখের রজনী গো ॥" শাস্তাইয়া মায়, প্রণমিতে পায়, প্রেমাক্র ভায়, পডিল গো! ভক্তি-রস যেন, গলি পডে ছেন. ভাবুকের মনে নিল গো।

कहिला. "जननि! (य सूथ এখনি, লভিলাম দুইজনে গো। रहे उ विश्वन, शिका यमि शूनः, থাকিভেন এইক্লে গো ন হুর্জাগ্য এমন, শিতার চরণ. मर्भन ना इहेल (भा।" ध कथा अभिद्या, खावाह काँ मिशा. জননী তাঁর বলিল গো। "वागि भूजहोन, अ दृश्य मलिन, হইয়া, প্রাণ ভাজেছে গো। पाकिश महीएज, शिलना जानिएज কেমন ছেলে পেয়েছে গো " একথা বলিয়া, নিশ্বাস ভ্যাজয়া, সে ছুঃখ নিবারি মনে গো কহিলা, "এখন, গুছেতে গমন, করি এস মোর সনে গোঃ" অভিনয়-মন, চলে ছই জন, प्तर्थ ठाहि खना खरन ला। আশ্চর্যা মানিয়া, পশ্চাতে থাকিয়া, কেছ কেছ ভাবে মনে গো ॥ "मिर्डा चाहिन मानूव रहेन, (इन अञ्चान इत्र भी।"

(कह दा लादिन, "दुखि दा हिलल, এ कड़ यात्रुव नम्न तो।।" কেছ মনে করে, বাঁচে পুনঃ ম'রে, चना हिल एशिलांग (गा। পুৰ্কে দেব মূলি, বাঁচাইত শুলি, এ (य नि(क खनशीय रश) ॥ আছিল সন্নাসী, হলো প্রতিবাসী. পাব কত উপকার গো।" ७ दिर्दाहनाश, ७३ घडेनांश. স্থ বাড়ে কার কার গো !। किस कान कान, जाद कान जान "পুজিলাম এত যার গোঁ। (म. (क. मा अथम, रहला श्रकामन, প্রভুরাম পিতা ভার গো 🖐 কিছু গুণ রয়, চেনা যেই মুয়-কত লোকে মানে ভায় গো। শত গুণ যার, চেনা হ'লে ভার. - মান পাওয়া হয় দায় গো ॥

জন্মভূমি জনসীর, পেয়ে দরখন গো।
পেয়ে দরশন।
পরমস্থেতে সুখী। শর্থ এখন গো।

अंतर अथम !

ভাঁষার জননী দেখি, পুত্রের বদন গোঁ

भूट्यत वनन ।

কি মুখ পাইল ভাহা হয়না লিখন গো,

रयुमा लिथम !।

যদিও ও সুখ কভু, নয় সাধারণ গো'.

नय नाशांत्रण।

তথু যেন মনে হয়. কেমন কেমন গেং

(क्यन (क्यन !!

কেন্না এখন এই জননী তনয় গো

क्रमनी जनहा।

পারের মাত্র বলা, অসক্ত নয় গো:

खभन ह नह ॥

रहि अ बाडीत है। म, शहना कथन ला,

যায়না কংন ৷

এবে সেই ছেঁড়া নাডী, গ্রন্থিত যেমন গো,

গ্রস্থিত গেমন।।

माजात वार्मला यक, नालन भानात भा,

लानन शांलान।

ख्रशानिए एक हें दूर स्टेश्व क्यान् भा।

क्षेद्रव (क्यान ?!

মাভাপ্ৰতি শুন্ত প্ৰীতি, করে বে প্ৰকার গো,

করে যে প্রকার।

छ्टर शाहे वारमनाहे. जामर्ग छाहांत्र शा,

খাদৰ্শ ভাৰার য

ইহারা সে ভাব এবে, গিয়াছে ভূলিয়া গো গিয়াছে ভূলিয়া।

যে কিছু করিবে হন্ধ, সম্বন্ধ ভাবিলা গে।

সম্বন্ধ ভাবিরা।।

বনি এই মাজা পুত্রে, বিচ্ছেদ ঘটন গো,

विष्ठ्रम घर्षेन !

খন্য প্রকারেডে হ'তে। না হ'তে। এমন গো

ना'रखा अमन ॥

लोका क'रल विरक्षां एक इनेरल मिलम एए .

क्हेल दिलन।

বিশেষ বুঝিত এরা, সে হুথ কেমন গো.

(म सूथ (क्यम ॥

পালিত পেটের ছেলে, মরিয়া বাহিলে গো মবিয়া বাঁচিলে।

মাত্রীন সস্তানের, যা ম'রে ফিরিলে গো:

मा मत्त्र कितिला।

किटा द्रारामञ्जात, मानह वारनना त्रा,

मत्ने आदमना।

त्त ऋरषेत्र (वर्श कारत, शांशम करत ना भी।

शांगल कर्त्रमा श

শংশলা কেমন, ভাষা জানেনা শ্রং,
আহা জানিবে কেমনে!
মাতৃসঙ্গে পরিচয়, সজ্ঞানেতে এই হয়
কোন রস জানা যায়, বিনাঝাসাদনে ?
এত অতুল ভূমনে।।

থার ছেলে কার ক্রোড পেয়েছে এখন,
শাধ মিটিতে পারিবে।
কিন্তু বজনের গনে, যত ক্ষেত্র করে মনে,
পাঁড়ে পাওয়া ধনে,ক্ষেত্রত কি ইটবে?।
সাধ মিটাতে নারিবে।।

জোড হ তে শ্যাতিলে রাখিতে সম্ভাবে,
ভয় উপজে অস্তরে :
ভই ভাব যত দিন, অস্তরে না হয় লীন,
ততদিন স্থেহ থাকে, যে সভাব ধ'রে ।
ভাহা পাইবে কি করে ?।

ংৰে শিশু স্তম টানে, হাসি হাত নাড়ে, জোড়ে করিয়া শয়ন। ভার প্রতি দৃষ্টি করে, স্থেতে যে ক্ষেত্র ক্ষরে, সে ভাবের ক্ষেত্র, ধরে যে সব লক্ষণ ॥ কোশো পাইবে এখন । দ

মা, মা, ব'লে কামা দেয়, এনিগো ওদিলে, যেন লাড়্য়া-পোপাল ! আপেনি দাঁড়াতে চায়, থপ্ক রে ব'দে যায়, ভাষা দেখি বেই অেহে, ফালি ফোলে গাল গ নাহি সে কেহের কাল দ

ননীর পুতুল যেন, ক্রভ-গতি ধায়,
হ'রে ধূলার ধুদর।
আব আধ কথা কয়, যেন মধু বরিষয়,
সে সেহেতে সে সকলে, ভাবে মনোহর।
ভাহা দেখান ছক্র!।

ভয়ে কিষা কুৰায়, কি, আঘাত পাইয়ং, ছেলে কাঁদে উচ্চ-রবে। দেখে ফেটেযায় বুক, যে স্বেহে আনে এ ছুখ, ছেলে ৰড় হ'লে ভাহা, হয় কার ক্বে।? ডা কি আবার সম্ভবে। থেতে থেতে যদি শোনে, ছেলে কাঁদে দুরে,
ধায় কেলিয়া আহার !
অন্তিরে সহা হয় হেলে কাঁদা নাতি সয়,
কি সেতের কায় ? আহা, দরতে ওবার ৷৷
ভাচা কে জানাবে আর !৷

শিশুর স্থলৈ রোগ, রোগিধীর ন্যায়ঃ
করে নিয়ম পালন |
গান্ধে নিলে লাফি ঘটে, শিশু কাঁনি কানি ওঠে,
ক্ষেত্রমন্ত্রী বিজ্ঞা, না হয় কলাছন !!
কাথা যে ভাব এখন !!

যান ও এরপ হাত, মেহের র্যাপার,
আর হবেনা প্রকাশ।
কিন্তু মেহের স্কুলবে, চিরলিন সমভাবে,
যে গুণ নিব্যে ভার নাহিক বিনাশ।
ভার সদাই উল্লাস।

अन्। छात्न कथन्हे, शास्त्रना (७मन)

হেন যতন করিবে।
 বাহে মনে ভৃপ্তি পায়, অসজোয দুরে যায়।
 দেখে ভবে, ভায়ি আমোজন, ক'য়ে দিবে॥

কত হুখে খাওয়াইবে ॥

খেতে খেতে যাতে পাবে, নিউ আসানন, ভাষা না খেয়ে খাওয়ানে। ' অসুখী দৈখিলে পারে, হয় লবে ক্রোডে ক'রে কিয়া কাছে বসি, কর অঙ্গতে বুলাবে। প্রীতি-সলিল ছিটাবে।।

কলাণের জন্য, নিজ কটে উপেন্ধিবে

কড উপায় করিবে।

যথেতে ভাবিবে হং হঃখেতে ভূগিবে হুখ,

যশঃ শুনি আহ্লাদেডে, আপন ভ্লিবে।।

সদা উন্নতি চাহিবে।।

নয়নে হেরিয়া, স্থের মুখ।

শরৎ-জননী, পায় যে সুখ।

পাবে যে এ সুখ, ছিলনা মনে।

আপনি উদিল, আপন কণে।।

পাবার হইলে এমনি হয়।

বিধির চাড়ুরী, ক্বার নয়।।

অবশ্যস্তাবী, পুত্র-শোক পাবে।
ভাই পুত্রে ভাজে, সেরপ ভাবে।।



काल लोर्ड कंद्रत, शामित शृंखा। जारभा नारे, वांधा मर्रे ७ सूर्व ॥ এ সাব বুঝিল, শারং-মাজা 1 च्य कारम श्यांत, इःस्थित शाया ।: "সন্ত্রান থাকিতে, একি বিহাদ। चित्रपाकाका, माभिरानक वीन।। भक्षान शालात. आस्मान यह ! বংসারে কিছুতে হয়না ওত।। ्म सूर्य आंग्रात, क्लीटन नाहे ! পোড়া কপালের, মুখেতে ছাই 🔢 কড়ই আমোদ, যথন ছেনে: क्षक्रामा गांक, समाहे व्याल ह মৃত্ হানি কিবি কিরিণা চায়। হাৰাগুড়ি দিয়া, শাইয়া যায় 🛚 । या विना कारन्या आत ज्यन। মা ব'লে ভাই সে, ভাকে সঘন !। এ मधुत्रचीय, ह'त्लाना (५था। এই খেদ মোর, গালাণে লেখা [তথন শিশুর, মনেতে হয় ৷ क्षबनी जयान, किहू हे नय !। ना (म'रथ, क्रशं ए (मर्थ वाँधांत्र) দে'খে ভাবে, অর্গ হাভেতে ভার !!

যদি ভয় পায়, ডাকে মা ব'লে। নিরাপদ ভাবে, যায়ের কোলে 🗓 মায়ের ভাঙনে, পাইয়া ভরা লেই মার জোডে, নির্ভয় হয় '। লালন পালন, এমন কালে ! ক্রিডে না দিয়া, বিধি কাঁদালে ' ব্যাদ শিশুর, কোমল মন ; বিষয়বিশেষে, হয় মগন। এটি কি এটি কি. জানার আলে। ख्यिकारम मारहरत, मध्य जारम **॥** উত্তর পাইলে, কড়ই স্থাধে ৷ কেজিক প্রকাশে, সহাস্থা মুখে ॥ (एरन नगरा छन्नी इ'रश यथ ना कहिनु, खनरह ल'रह !। रेममात्वत ভाব, मिथ् सङ्ग्राम । পরে কি ছইবে, হয়না মনে ॥ ক্রমে বয়ো জ্ঞান, বাড়য়ে যভ। আখানে বিশ্বাস, জনমে তত ! পরেতে বখন, যুবক হয়। (महे एडल थहे. यान ना नम्र !!° জমেতে দশার, পরিবর্তন। দেখি হয় কভ, সুখিত মৰ।

145

यिन अथन, यूदक एक्त ।

परकवाद स्थ, निश्चिष्ठ एएता ।।

प्राय स्थ शेला, क्यन श्र ।

प्रीय किलाना, विश्व निर्मेश ।।

माज - याकात, स्वश-याद्य ।

यमन व्यस्थ कुछ विज्ञाद्य ॥

किलु (यहे स्थ, बहेल छात ।

रम स्थ श्रेयन, बह कि ब्यात ।।

श्रेष्ठाकत यह , श्रेकाल श्राह्य ।

श्रेष्ठाकत यह , श्रेकाल श्राह्य ।

श्रेष्ठाकत यह , श्रेकाल श्राह्य ।

श्रेष्ठाकत यह , श्रेकाल श्राह्य ।।

শরৎ এখন, পাইরা ভবন,

যিলিয়া স্বজন-সঙ্গে।

সন্ধ্যেবসহিত, গৃহি-জনোচিত,

ব্যাপারে ব্যাপৃত, তকে।।

এই বিবরণ, লিখিয়া লেখন,

কটকে প্রেরণ, করে।

সাধুর সদনে, সংবাদ প্রেরণে,

এতদিনে মনে, স্মুরে।।
কাসীম্বাজারে, বিচারকাগারে,
লিপি প্রেরিবারে, চায়।

কেহ সেই কণে, আসিয়া সদনে,

ক্ৰে ছাফ্ৰনে, উয়ে 11 "ভোমার গ্রেরিভ, সেই দ্রুক্রিভ, মাধ্যে বিহিত, দও। চির-নির্মাসন, উদিত শাসন, সে কি সাধারণ, ভণ্ড !! িবিচারের পতি<u>- তব বন্ধ</u> ছাতি. ভাবে অবগ্যতি, হ'লো । তে) যার কারণ, সচিন্তিভ মন. नियं नवसन हला। ফহিলা আমায়, আসিয়া হেথায়, প্রেরিব ভোনায়, সেখা। ना গেলে আপনি, अनित्य यथनि. আলিবে ভখনি, হেখা॥" এ কথা প্রবংগ, পরিকা প্রেরণে, काख क'रा मत्न, फ़ार्ट । "युक्तामत कथा. कतिल खनाथा, মনে বড় ব্যথা, পাবে ৷৷ অবশ্য সে জন, করেছে শ্রেণ, विश्वन-घडेन, या । আমার জীবিত, রয়েছে স্কিত, শুনি সে স্থাতিত, কত !! বিশেষ আমার, নব সমাচার.

ভনি জারো তাঁর, সুধ। বাড়িয়া উ**ঠিবে, যাইভে হ**ইবে,

দেখিয়া কমিবে, হুখ।। তিনি সুখমার, পিডা যে প্রকার, দেখিলে তাঁহার, মুখ।

প্ৰমা যেথানে, ছিল সেই স্থানে.

দেখি পাব প্রাণে, সুখ ॥ চ'লে যাই আজ. করিয়া সুসাজ,

বি**লম্বের কা**য়, নয় ৷^ত ইফা বিভারিয়া, মায়ে প্রণৈনিয়া,

বিদায় চাহিনা, লয় ।। বাহক ডাকিয়া, শিবিকা আদিয়া,

ভখনি চলিয়া, যায়। বিবা নাথি ছিল, তাই নিবর্তিল, অসুখী হইল, তায়।

यक्षे मर्ग।

were an

এখন বসস্ত নাই, ঐাত্যের পর্যায় ।

বিধা বড় জাগণ রাহিয়ান, এক মুনে বাজি অবসান,
দেখিতে দেখিতে, উষা উদিল ধরায় ।

শততের নিজা ভাঙ্গেল প্রভাতের বায় ।

শব্যা তাজি অভ-যাজা করে, ক্রমে নিবা নাবিভাব বা
ত গতুতে ও সম্তা, নাবে নাব না নাব

নিবাব বাবের প্রায়ে, কজুর সম'ছে।
ভাকুর প্রভাব দেমন, কাগাঁগুলি ভাহারি মানুন,
এমন মুরস্ত গুণ, কজুতে কি সাজে এ
দেখা দেখি এ মুদ্দান্ত, আইল কি কানে।
সকল জগৎ-অভিরাম অতুল মুখের প্রিমধ্য
ভারধার করিল তেমন ঋতুরাজে।

কে বা ওরে সেধেছিল এস এস ব'লে। এসেছে আত্মক নমু-ভাবে, ভাহে আরো সমাদর পারে ভা কোথায়, উগ্রমূর্ত্তি, দেখে অস জ্বলে।। যন্যপি ও জোরজার, চিরকাল চলে। त्वहे मार्थक सहेत्न भिष्ट, उ मूथ लूकाट इत्त लिए, इत शर्व धर्क, वर्ता ममाशाह के'ला ।।

সংগ্ৰহ ছুবিছে হেন, উপারে বিদিয়া।
কান দিনের শমন, পাবনের মুপুরে মাজন,
জগান জীবন তবু, লারে ঝলিসিয়া।।
জীবন কেবল বাঁচে, জীবন চাহিয়া।
বানের কালে যে জাবন, শীতেল খাকেন। সর্বাজন,
শীকল হা খাকে, ভাও পারে লুকাইয়া।

বাহেরে কি নাচি, রুই প্রের ভিজার।
পি অন্তর দায় জলে, অহি ডাই করি স্বেদ-জলে,
রাথে প্রাণ পাখা, বিনা পাকে কি অস্থারে ।
অন্তরে এমন, আহা, বাহিরে যে করে।
রোগনে ভীত হয় মুন, দেখা হ'লে মুদ্রে নয়ন,
বাধি কেমনে গ তবু বুণি বৈগা ধারে!

শিরে ভারু, পদতলে তগু-খোলা ধরা।
ন বালদে উষ্ণ বাতে, গাছকা, ভারুত্র, পদে মাথে,
ভথাপুিচ ঘর্মবেগ, নাহি যায় ধরা।।
জুভা, হাডা, কোথা পাবে, হঃখী ছঃখে জুরা।
দড়ি কিরে উভরায়, বিটপির ছায়া ভরসায়,

শরিষার ফুল দেখে, চারিদিগে ভরা!

মৃগকুল আকুল, কান্তারে ক্লান্ত-কায়।
ভক্ষ সরঃ নাহি পায় জল, নরীচিকা দেখিয়া চক্তল,
জলাশয়ে ধায়, কিন্তু জল নাহি পায়!।
চাতক জলদে বলি, জলদেরে চায়।
ভক্ষ কঠে ডাকে গাভীগণ, সকতের সবারি জীবন,

যন্ত্ৰণায় কত জীব, জীবন হাবায় 🎠

কিন্তু কিবা, বিধিন বিধান চমংকার।
 কালেও হেন ত্থ পাই, খন্য কালে তেমনটা নাই.

ফলভঃ প্রান্তেরি প্রথ, স্মারামে অপার ।। কুপোনক, বট-জানা, শীতল-আগার.

জলকণাদহিত স্মীর, দিবা-নিক্রা, দতুদার নীর,

निर्माप कि प्रशे करत, नर्ट रनिराह !!

নিদাখের দিবাভাগ, ভীষণ রেমন।
রক্ষনী তেমন যদি নয়, রোজ বিনা কিছু শিল্প রয়তথাপি পরাণ করে, কেমন কেমন।।
বর্ষে ভিজা শযাা, ছট্ ফট্ করে মন।
মশা ছারপোকার দংশন, সর্ব্ধ অঙ্কে করে, জালাভন
হানিজা না হয়, লারারাজে এক কণ।।

3:

কেবল বিহান, সন্ধ্যা, জীতে মনোহর !

সংগতে বাচুর সঞ্চার, কায়া প্রাণে আমার অপার,
নান মনেও প্রথা লভবে বিহুর ।।
এ স্মরে বেই জ্বনা লায়ে অবসার ।

াকুল, সরোবর-ঘারে,উপারন, ফানন, কা থারে,
বেহার, সে পায়, প্রফ্ন বস্তেগ্র-সারের!!

মানব-স্ভাব, করে গভাসুদেশচন।

াই মনে পড়েও সময় অনিল, সলিল, শীভ, জয়
শিশিরেতে বিষ, এাজে মধুর মতন।।

অনা সময়েতে হবে, অবশ্য আরণ।

নাঘের দুই সন্ধিকাল, কিন্তু স্বেদ আর রোজিলাল,
ভূলেও পড়িলে মনে, কাঁপিবেক মন।।

ববে, প্রথর ভাস্করে, পশ্চিম ভ্রবে,

ক্লিতে ভূচরে, দৃষ্টি করে।
হেন সময়ে পুজর, উদিয়া সত্তর,
ছাদিল ভাস্বর, দিবাকরে।।
বেন, ভূবনে কাতর, দেখি জলধর,
ঢাকে ভানু-কর, দয়া কারে।
রুঝি, ভানুরে এমন, হলোনা সহন,
আরম্ভিল রণ, ক্রোধভরে!।

. ...

ভাই, ছাড়ি ভুত্কার, খড়ের আকার, मंक्ति जाशनात्र, श्रकामिल। ঋড়, করি আরহর, নাশিতে অম্বর, অতি ঘোরতর, গরজিল !! (रात উथाल माध्य कें। शिल ख्राय ধরণী কাতর, অভিশয়। কত তক উপাড়িল, মন্দির ভান্দিল, ভরণী ডুবিল, জলময় !! **फीर, यानक महिल, या १७३० वॅं**† हिल. কাঁদিয়া ফেলিল, পেয়ে ভগ্ন। धुला, धरन डेजिन, श्रामाक छारित. ধরা ওঁড়াইল, নাহিরয় !! হলো এমন জীপার, লব একাকার, চিনেলওয়া ভার, ধরাকাল! এযে, মহৎ উভয়, ন্যুন কেছু নয়, মধ্যে থাকি হয়, ধরা নাপ !। ঝড়ে, এত যে যুঝিল, উড়াতে নারিল, আকাশ ঘিরিল, জলধরে! শেষে, মানি পরাজয়, লুককায়িত হয়, মেঘ বরষয়, ঝর ঝরে।। আর ক্ষুরিডে নারিল, লজ্জিত হইল, चात्र थादिनिन, अखाहता।

ভারু, লুকাইল যেই, বেঁচে গেল সেই, কি করিভ এই, রণ-ছলে।। মেগ্ন গৰ্জন করিছে, বিছাৎ ছুরিছে, श्रमः। काशिष्ट्, एएए ७एन ! ভারু, এখন থাকিত, হইত চ্র্নিড, ভাই পলায়িত ভয় গুণে !৷ মেন, ভাখান ধরায়, ফাণেকে ভিজায়, युवा नद थोर, जन-शाद । ্নি ভারার পাইভ, তেজ, কি রাখিত ? নিভায়ে কেলিভ, একেবারে ।। ल्लाक, याल विवयर, वज्हे भहर, চিন্যার সৎ, কায দেখে। একি মহতের গুণ থেমন আগুণ, রাগে করে খুন, থেকে থেকে! দেখ, গুণ জলপ্রে, ধরা দম্ব করে, (पिथ ভारू-करत, आक्रानिन। बाड़, कछ विवातिल, छोड्। अ गहिल, वहिं मिलल, गूड़िल !।

श्ला, क्र्रिशिश अमन, भार अथन, निविका चारताशी, हला। धना, क्रःथी विश्वातात्र, श्रांग ताथा नात्र,

শিবিকা রাখিছে, বলে !। কিন্তু, আর কভকণ, রাখিবে ভেমন, मिनां ए नांशिन, बाए। (भरम, विशंप (तथिया, निविका का जिल्ली, শারং লাফায়ে, পড়ে।। হলো, ভার দুলে ভায়, ঝড়েতে ঘুরায়, নিবিকা চড়কা, প্রায়! কাঁপে রাখিতে না পারে, ত্যাজিয়া ভাষাতে, বেহারা প্লায়ে, যায়॥ -যিলি সকলে সভরে, সাঁকোর ভিতরে, পশিয়া বাঁচায়, প্রাণ। (इथा, मुहिया पुडिया, त्राक्ट वानिया, শিবিকাও পায়, জাণ ॥ व्यार्ग, ऋष्ड्र मगरत्र, मार्कात वार्धारा, मित्रांभित मत्त्र हिला। পরে, বরবিয়া জল, কাড়ি নিল স্থল, त्याएक त्यमारेशा, मिल ।। নাতি আশ্রায়ের স্থল, শরৎ চঞ্ল, শিবিকা ভিতরে, যায়। ভগ্য-শিবিকা-ভিতরে, জল বর্ষরেঃ পড়িতে লাগিল গায়। আহা, যডেক বেছারা, ডিজি হয় সারা,

শেষে সৰে, বিচারয়। रकन, में प्डार्य जिलिय, गञ्जना महियः 5'লে যাই. লোকালয় II लहा, भिविका काँ(बराउ. इलिश् (बर्शराउ. নিকটে পাইল, গ্ৰাম ৷ ्मथा एक (कह नाहे, हेएत नराहे, शर्मत कृष्टित, भाग ॥ थारक, विशासाक कात्र, क्षां किह विष्ठांत. পরিপাটী হছে: আশা ? ्प्रदे, में 5-मिद्कुडम, स्वयंत्र ख्यम. ভাবিয়া লইল, বাসা ॥ নাবে, পাইন আন্তার, মের হ'লো কয়, আকাশ বিকাশ, পায়। (দ্ধে, দিবা নাহি অরি, চক্র অবভার, কৌমুদী ক্ষু রিছে, তায়। ভাছে, যাহার আশ্রায়ে, দেজন বিনয়ে, ' কহিল, "অস্তাজ, আমি। णागि (कमान विनय, क्यांजिया कतिव. হব কি নিরয়-গামী।? ভবে. বাসনা আমারি, আজ্ঞা হ'লে পারি, कन, मृन, व्यानिवादत् ।

ভাষ্কা করিভে:তাহণ, থাকিলে দুবং

রহ তবে, দেবাগারে 🛭 অই. কর নিরীকণ, দেব-আয়তন অংলোক ভুলিছে, যেগা थाताः नाम्याके नाम श्रमकाताः ভাণতিখ্য হইবে, সেখা।" দেখি, অন্তাজে ভাইতো, গুলির দত্ত শরং সম্প্রীক্তি, পাছ ! वाहि, पहर-वाखीश, जीविश जनश, সাদরে কহিলা, ভাঃ।।। 'বাধ: ফেন্ন হটুকে আভিথা ক্রিপে যাবনা অনোর পাশে। ভূমি, প্রকৃত সজ্জন, ভাবিনা দুষ্ণ धमन माधुत दारम ॥" গুহী, কুভার্থ মানিয়া, যভন করিয়া, খাওয়াইয়া ফল, মূলু ৷ হলো, এমন স্থিত, মনের সহিত, না হয় ভাহার, তুল।

বোর-রজনী, স্তব্ধ-ধরণী।
গৈছে অস্তাচলে, চ'লে নিশামণি।।
নিটো নাহি শরতে, দেখিতেছে জগতে,
স্তনে সহসা যেন, বীণা হেন ধানি!

ंडाल कांद्र श्वमिल, तीना मटक जूकिल, पृष्ट पृष्ट श्वयद्दर, काँदिन क्योंन श्री ।!

্সালি জীবনে, বিব জীবনে।
নারি দ্বার্টিছে, আশা দিয়া মনে।
আশা ওছু গোচেনা, মন ভা যে বোরোনা,
বিনা আতারে ভারে, রাগিব বেন্দ্রনাও
ভাবনার আকাশো, যদি পাই সাধানে,

साह कल क्षिटि, विस्ति। विद्रार ।

ধরি জীবনে, জণ্ডি যতনে। ভাবে ভালবাসি, নহে বে কারণে।

ভালবাসি মাহারে, যদি পাই ভাহারে,

প্রাণমত সম্প্রীতি, এই আকিঞ্চনে। পূরিলনা বাসনা, কেন সব যান্তনা, যান্তনাও নানিব, কায়া-প্রাণসনে॥

বিনা প্রাণান্ত, সে প্রাণ-কান্ত।
নহে পাইবার, বুমেছি একান্ত।।
প্রাণান্ত যে মিলিবে, সে আশাও নাশিবে,
হেন ভাবে যদ্যপি, থাকিব জীবন্ত।
কত দিন হইল, এবিছেদ ঘটিল,

প্রাণাত্তেও নিরাশা, ঘটেনা নিভাস্ত ।।

ক'রে সঞ্চিত, হই বঞ্চিত।
পুনঃ পাব আশা, ছুরাশা নিশ্চিত।
ছুরাশাও পূরিত, ভাগ্যে যদি থাকিক
এ জীবন থাকিতে, হইবেনা হিত।
মক্ষ ভাগা জীবনে, ভাল, হবে মরণে,
ধেপা মনে ও আশা, হভেছে উদিত।

ভারে পাবনা, মিছে ভাবনা।
হ'লে পাইবার, এমন হ'ভোনা।।
বিধি ভারে দিবেনা, চাহিলেও পাবেনা,
ভাই নিল করিয়া, করিয়া ছলনা!
যদি ল'য়ে পলালি, ভবে কেন দেখালি,
বিধি হ'য়ে করিলি, একি বৈবেচনা।

কোথা রহিল, কার হইল।

সে ধন অমূল্য, কার ভার্ন্যে ছিল।

আমাহ'তে ছিনায়ে, কেবা দিল বিলায়ে,
আমি কার ল'রেছি? তবে কেন নিল?

কার ভাগ্যে কে খেলে, কার ধন কে পেলে,

কেহ মুখে ভারিল, কেহবা কাঁমিল।।

শক্তে যে ছিল, বাদ সাধিল।

শক্ত যোর, তারে: কেন ছখ দিল।

বটে সেত আমারি, আমিও যে তাহারি,

তার ধনে তাহারে, বঞ্চিস্ত করিল!

কেটে মরি তাবিয়া, অভাগীর লাগিরা:
ভাহার কি কপালে, এড লেখা ছিল।

ওরে আশারে আরে আমারে !
বালোনারে পাবে, আবার ডাহারে।'
ভার এই কগানে, পাইবার ত্বাতে,
ফাটিরাও হৃদর, বাঁদে আপানারে।
সহা-ভাবে আশারে, ধুরাইছ আঘারে,
বারিবিশ কথাতে, ত্রা বেতে পারে গা

तक्षती काल यमि. काँगा तक हाल ।
लाश जहना जिने, वाटक शिम रुटन ॥
हरेशा भाकाजूता. कान मात्री काँगा ।
छित कठिन मान, माहि देश्या वाद्य ।।
छित काँगा माने हर्षा हर्षे ।
छित कारिमा हर्षा, (हन कांत्र कुर्क ।)
विश्व वित्र हर्षा, भारत् मन वात्र ।
यांना कि काँगा कछ, पूर्व हत्र छोत्र ।।

काँ पिट्ट वित्रहिनी, त्रक्रमी भगरत। কৃতি বেদনা যাহা, বিধিছে হৃদয়ে 🖂 ভানয়া শরতের, কেঁদে ওঠে মন। राम काँ निन् पुष्टे म्हान एक जम।। मधान, यानांदाथा, दिवह मधान । যেন খেদেতে, এক আত্ম চুইখান রবিলে শরতের, ব্যথিত হ্রয় ! 'লাহি বিরহী মম, সম তাও নঃ 🖟 পেয়েছি, আজি আমি দ্য সুখে এখী, त्नादक मृकुरत कें नि. केंट्रा हुट्याम्या ॥" छलिल भौति भौति भक **शतू**भारत । नां चि दाशिल चामि. (महे प्रतांगां (त ।) দেখিল খো**লা আছে, মন্দিরে**র ছ'র ৷ দীপ জুলিছে, কিন্তু জ্যোতিঃ নাহি তা?। কি ৰূপ দেব-মূৰ্ত্তি, প্ৰকাশ না পায় ৷ कुल श्रकारण, इति रेजंबरी ज्यात ॥ লুটিছে ধরাসনে, একের মূরতি। বসি দ্বিতীয়া পালে, শোকাকুলা অতি। হ'য়েছে নিবর্ত্তিত, বীণাদম সর। এবে ক্রিছে, অন্য স্বর স্বভন্তর। দ্বিতীয় স্বরে সেই, দ্বিতীয়া রমণী। भौति কৰিছে, মোর কথা রাশ ধনি।।

"দোণার অক্ষেতে গুলা, মে'ধনা গো মে'ধনা। অধীর হইয়া, এমন করিয়া, গুলায় পডিয়া,

(श'कना (शा रथ'कना ।!

ক নিলে কিছবে আর, কেননা গো কেনা। যভই কাদিবে, শোক উথলিবে, ভড়ই বাভিবে

বাজনা গো হাতনা।।

কাদিলে বিচ্ছেদ ছেড়ে, মাবেনা গো সাবেনা । কাদেতে যে চয়ে, শুনিলে করোয়া দ্যা কভ ভার

क्रानः तो क्राना ॥

ে আছে সংগ্ৰন হৈছে, ক্ৰেন্য গোরাবনী ৷ অভিনেত্র যে গেখি আকার, জীবনেরে ভারে,

नद्यमा (गा मद्यमा॥

হবেনা উপায় স্থাপু, কাঁদিলে গোকাঁদিলে : ০০ দে কোঁদে হায়, পেলেয়ে দশায়, নাহি চেনায়ায়,

(निश्ल भा निश्ल।

এ প্রাণে আবর্তি কল, ভাজিবে গো ভাজিবে।
 অপের্বনই থেন বেভে চায় হেন, আত্মহত্যা কেন,

कतिदव (भा कतिदव ?।

বাঁচিতে বাসনা জাগে, ক'রনা গো ক'রনা। বরং দৈর্ঘ্য হ'য়ে মতুপর, প্রিয় প্রাণে কর,

भातना भा भातना ।।

ভাবিছ, বাহারে পাওয়া, যাবেনা গো যাবেনা।

3.4

महिवादत हा ७, यति छादत भा ७, य'तन भारत छ। ६ भारतना शांभारत ना ॥

কেন ভাব ভারে আর, পাবনা গো পাবন:)
হয় মোর মনে, পাবে সেই জনে, পাইবে কেমনে,
ভাবনা গো ভাবনী ।

कांभना (गा कांभना ॥

অথবা ছজনে চল, এমিয়া গো অফিয়া। কোথায় সেজন, করি অস্বেশ, সকল ভূবন,

চাহিয়া গো চাহিয়া।

কৰিছু যে যুক্তি দেখ, ভাবিয়া গো ভাবিয়া। এই সুযুক্তি, শুন গুণবৃতি ! যাবেনা দুৰ্গতি, কাদিয়া গো কাদিয়া গ

এই সব কথা ৰ'লে, বাসনা প্রিয়া ভোলে,

গায়ে হাত দিয়া দেখে, নিচিতের প্রারা।

মুমায়েছে সহচরী, ইহা তাবি ক্রোড়ে করি,

শ্যার উপরে ভার, শোরাইতে চায় ।।
ক্রোডে করি দেখে বেন, কাঠের পুডুল হেন,
ভাহা দেখি ভারে "একি, হ'লো আচ্ফিড।

মুমাইলে হ'জো কার, এল থেল লভা প্রার,

এগে দেখি শ্বসম, হ'য়েছে স্তন্তিত।" ধীরে ধারে শোয়াইয়া, নাশিকায় হ।ত নিয়া, (न(च "करे वर्डमाज, नियान शवन ?" ভৈরবি ! ভৈরবি ! ব'লে, ভাকিলেক ধরি গলে, উত্তর না পেয়ে হলো, ব্যাকুলিভ মন !। কি করিবে সমুপায়, ভাবি কিছু নাহি পায়, একে একাকিনী ভায়, নিশীথসময় : विजीता रिखारी बाहा, बंदर भागानिकी शाह. "छ। रा कि अहेल" र'ट्ल किएन भारा क्या। 5(क (मिथ धदा)शांत, करुंग इह्ना कांत्र ? শরভের হানয়েতে, দরা উপজেল। "कि इंता कि इंता क्ल," धरे क्ल महक्रल, रिशदा रेखबरी-शारम, जामि प्रथा मिल ।। বৈভরবী পাইল বল কাছে দেখি অনুবল, পরিচয় না লইয়া পরিচিত গ্রায়। কিছিল বিনয় করি," যাতে বাঁচে সহচরী, উপায় করহ ভার, হইয়া সহায় !! कान द्वारा नाहि हिल, गहमा थ, कि रहेल, যদি কিছু জান এর, কর প্রতীকার।" শর্থ সাহস দিয়া, ভৈর্বীরে বুঝাইয়া, यालाक निकार यानि, (मधिन पाकात ।। शतिशाम त्रकाचुत्र, कि लावण मदमारत,

আহা যেন কাঁচা সোণা, অনল ভিতরে। অভিনয় দীর্ণকায় যৌবনের প্রতিভারে र्थात्रानत इति एम. बन्धन करत ॥ ইহা কি পরাণে সগ্র? হেন মূর্তি পড়ি রয়. इक्तार खडाकला, धकि विख्यन ! ইহ' ভাবি বড় ছুখে, জন দিয়া ভার মুখে. क हिला १९ ५५ वि कहा का छन की छन।।" এই মত প্রজামাণ, নিশ্বাদ বভিল ক্লাণে, ভর্মা জবিল ভবে, র'য়েছে জীবিন্ত। मीतरराज प्रदेशमा जात्र करत मित्रीयान. শ্বতের দৃটি কিন্তু, চাঞ্চল্য রহিত 🛭 ৰে অঙ্গেতে দৃষ্টি ধায়, ি হরিয়া উঠে কার. व्यान्हरी; नामश्री (मथि, इग्न (म श्रीकांत्र !। " गांभाना जाम्हर्ग नग्न, शास्त्रक अवह ३ थ, স্বনার তলনার, অভিন্ন আজার।। हिटल जाँका क्रमात, मट्टू এই ललनात, বেশ আর শীর্ণ কায়, ভিন্ন তুলা সব! কেবল সুষমা ভার, জীবিত নাহিক আর. এই জ্ঞানে এই সেই, ভাবা অসম্ভব ।। ञ्चमा এই आमात् এ नियान इ'ल छात्: কি আনন্দ হ'তো ভাহা, ভাবিয়া না পাই। इः थं ना इ'त्ल विशूच, कित्राल जानित्व सूच?

নদৃশ দেখি যে সুখ হলো কই ভাই।। বরঞ্চ দেখিয়া ভার, চিন্তা করি স্থানায়, বিষম বিরহ-ছঃখ, বাজিয়া উঠিল ! कालियात काल मन्न, करके रेपरी एडि इस. কিন্তু মর্ঘা মুচদিয়া, ভাঙ্গিতে লাগিল।। নেখে কৰে মনে ভাবে, "বু বিলাগ অনু ভাবে, লসমা-বির্ভে মোরে বাখিত দেখিয়া। বিধি হয়ে দরাময়, ভূষিতে মোর হৃত্ত, প্রমার অনু: শ রেখেছে গঠিয়া।। व्यक्तित स्वभाक गार्टिक (य श्रेनताय, ইছারে সুখ্যা ক'রে, দিকেও যে পারে। হনি বিধি ভাই করে, রেখে দিই বক্ষোপরে, ` প্রাণসভে স্থানান্তর, করি কি এবারে গ अथवा निर्द्धात्म आर्थः, मच एथं विषया थाकि. भिगानिणि द्वथमणी, दिति जुल इहै। ·श्रदात्म नामना नाहे, महि खानाखरत यहि, ছায়ার সমান ক'রে, সঙ্গে সঙ্গে লই ।। রখা করি আকিঞ্চন, বিধাতা নহে তেমন, म'त्त পরে ফিরাইয়া, দেয়না কখন ! त्म श्रुतीरत प्रशा नांचे, नजूबा कि छः थ शांचे, পর-ছঃখে ছঃখী नয়, বিধিও এমন।। कड इःथ পाइ यामि, जात्म म अखरीयी,

मानूष अपन चुल्ल इश कि निर्मा ? দহাতেও ধন হ'রে, ফিরে দেয় দ্য়া ক'রে, কাতরে ভাহার পাশে, করিলে বিনয়।। এমন বিধিও আজি, প্রারণনি দয়ার কান, च्यमात जूना मूर्छि, स्मारत (मथाहेन । षाजि ७ उक्त भारत तकती कराह । रेप्टरदीत प्रतभारमः । প্রाণ মুড় हेश ।। छालिलाय निअदारम, याञ्च ४ ८५ वर वारम, हेबाइडे अफियांगी, इहेगा इटिय । ই্ষমার অসুরূপ, এই ভৈরবীর রূপ रनिशां अंशियान, स्थित कहित ॥ " এই মত চিস্তাসনে, এক ধ্যানে এক মনে, भंदर ठाविद्या (गई. रे.एउबीड श्राप्त । धर्वे द्या**रक ज्ञान (**श्टह, मिन्नीत पूर्व (हरह, নিশাসের সহ মুক্তা, ভালে **রূপ**ৰভী ॥ देश (नियं तक्षीनीत्र, नप्तरन वहिल मीत्र, "-र्वे ि भारत किंदम वाला, 'कि क' स्त्राह्य केंन (ता:) विष्याः के अर्थाः कथाः कान्यं वास्या वार्थ भारत मन्त्रा (मृद्ध (शृद्ध, खान बुद्ध वन (श्रा !!" र्वगादा मध्याधम, छनि अवराउत मह, व्यक्ति अद्यक्ति । अधिक स्वाध श्री।

জনসম ক'লোকায়, গ'লে ড'লে পড়া প্রায়ু-

यरम थाकि लूजिस्या, शिक्त धताम ॥

ভিত্তি অকস্মাৎ, একি গতিল।
প্রতিবাদী কেন ড'লে পড়িল।
প্রগো ড়ুমি কেন, এমন হ'লে ?
মুমের গোরে কি পড়িলে ড'লে।
ভারে যে বাঁচিনা, ভনাত ব'লে,
এই বদেখাকি কিবা হইল ''
ম্বমা-সন্ধিনী, যভ ম্থায়,
না পেয়ে উত্তর, ভাবিষা, দার,
কিংলো বিশেষ, বুঝি আনায়,
আলো ধরি, মুখ পানে চাহিল।।

সঙ্গিনীর লাগি ব্যাকুল ছিল।
ভাই আঁগেঁ দেখি, নাহি চিনিল।।
•আলোকে আকার, দেখি এবারে,
সে জন শরৎ, চিনিতে পারে,
আশ্রেণ্য ভাবিয়া, ব্যস্ত-আকারে,
''এই যে শরৎ'' এই ভাবিল।
গুহা হ'তে বাযু হ'লে কোচন,
বেগেতে ধানিত হয় বেমন,

खानामा अनि क'त्र उठिन।

महाजन करत कति यंजन।
नग्नान नग्नन ह'टला शिलतः।।
सूथ कथा नाहे क्विल ठांग्न,
ट्रिन ख्वाम हम, दिश्व दिश्वा याम्न,
त्म खारम, इथ वहिम्ना याम्न,
तम व्यान कथा ना ह'टला क्वून ।
भाउभाजा ठांतिनम्नान व्यह,
ट्रिन यामान नटह,
शिलन मिलटल थूट्य विक्राह,

जीथि-नथ निया करत करत ।।

মনঃ দ্বির করি, বছ যতনে !

শরৎ কহিল, 'হে বরাননে !।

তুমি কি স্থমা সেই আমার,

নারে পাব আশা, ছিলনা আয়,

আমি কি শরৎ, সেই আকার,

কৈয়া আহি, আর কোন ভুবনে ?

অথবা এও কি, সেই অপন,

প্রতিরজনীতে দেখি যেমন,

কিয়া বিধি মুঝি, পুনঃ সৃজন,

করিলেন ভোমা, আমা, ছজনে ॥

শরতের রূপ, দেখি নয়নে!
শরতের রূপী শুনি প্রাবণে!!
ভূথাপি স্বমা, বুঝিডে নারে,
শরৎ এসেছে, সাক্ষাৎকারে,
মনে ভাবে বুঝি, এই প্রকারে,
দেখে, শোনে, লোকে মোহ-মোচনে!
বুখ হইয়া, ক্থকাল পারে,
বাস্ভভাবেতে, প্রিয়-হাতে ধরে,
হার্মান রুডে, পুনঃ দৃক্তি ক'রে,

যেমন ভাষারে, ধরে যতনে।।

লাশানুতবে, শারং বুনিল।

"দাৰণ বিরহ আজি ঘুচিল।।
প্রিয়সী আমার জীবিত ছিল,
ভাত্তি মিহামিছী, বাদ সাধিল,
বিধি এত ছুখ, ভালে লিখিল,
এই কথা বলি কেনেউচিল।
অহমাও সেই ছুখে ছুখিনী,
শানিল হইয়া, অনুতাপিনী,
ভাব দেখে শুনে, কাঁদে সঙ্গিনী,
কাঁদি যেন ছুখ দূর হইল।।

শার্থ জুস্থির ইইয়া, রোদনে ধারণ করিয়া, নিজ বস্ত্রে প্রেয়সীর, অঞ্চ-বিন্তু মুছিয়া। জুবান্ডে লাগিলা চিবুক্থানী, বামহত্তে ধরিয়া।

[ি]ভ্যন বিশাদে কৈমনে, ফিরিয়া পাইলে জীবনে, বেটিছে ভূমিই কি**য়া, পিভৃ কন্যা ছুজনে।** কি ভেতু ভৈরবি-বেশে**তে হেথা;ভ্যাজ নিজ** ভবনে।

[ু]পুলং কি আমারে চা**হিয়া, খুজেহিলে দেথা** জমিয়া,

কি মনে করিলে যোর, দেখা নাছি পাইয়া। বল বল প্রিয়ে ! সে সব কথা, শুস্থ হই শুনিয়া গাঁ

বাম্পুসনগদ বচনে, কহে রামা প্রিয়-সদনে, "পাইব এমন দিন, শুনার সে কথনে। প্রাণনাথ। ইহা: হ'ডোনা মনে,জাগি কিছা স্থানে।

এইনো দে কথা করিয়া, ভয়ে উঠে প্রাণ করিয়া, দর্গর সমরে ভোগ: ভূমিশাগী দেখিয়া। লুকাইনা পিতা, শিবিকা-মধ্যে,গুপ্তভাবে স্কাসিয়া।

বাংকেরা ভয়ে ভাগিল, দক্ষারা স্থাবধা পাইল, শিবিকা লইয়া নাধে, ক্রডগতি বাইল ৷ কাতর হইয়া কাঁদিলু কড়, দয়া নাহি করিল !৷

দেখিয়া সে ভাবে তেমিনে, তুঃধ জুলে হুদি যাঝারে, দেখিতে দেখিতে আসি, মূর্জ্ব ধরে আমারে। ্ঠাগতে দেখি, এসেছি যেধা দেগী বন আকারে॥

েভাষার সে দশা ঘটনে ভন্ন না হইল মরণে, বৈধবা হইতে ভন্ন, নারীর কি যরণে ? সংরিবে বলিয়া, ভোষার শক্রে, মিত্র ভাবি কেণে ্রাঃ রাহরু চাহিয়ে মরণে, কিন্তু দেই সব জন্জনে, না মারিয়া সমর্পিল, নিজ প্রাভু-সদনে : প্রেছ ভাষাদের, মাধন ধূর্তি, বাসোছিল নিজন্মে '

মাধ্যে পার্ক চিনিছে গবেখেছ প্রয়োটে বসিংক ছুরাচার ইন্ধা করি, মোর পত্তি কইছে : লাটিয়ালগণে, পাঠায়েছিল, ভব প্রাণ নাশিটে ব

অংকিয়া শিক্তাৰ সদলে, কহিল সংগ্ৰহণনে ত্ৰৰ জাতি ধৰ্ম হৈছে; হ'লো আজি বভনে যে সুৰু ঘটনা দেখিলে সুৰু ভব ছিভ-কাৰণে ।

মাধন একথা কহিলে, পিতা ভালি ছুখ-দলিলে কহিলা, "মাধন তুমি একি কণ্য করিলে ? নিষ্ঠ্য কইয়া, তেমন ধীয় জনে, প্রাণে নাশিলে !!

निनाकन कथा छनिया, व्यक्ति दहेनू कॅमिया.

মাধবে দিতেছি গালি, অতি ক্রোদ করিয়া। এমন সময়ে, আসিল সেখা। বহু লোক গাইয়া।।

> "যখন ভোমারে, সেরপ প্রকারে, করে ধরাশায়ী, শক্তর দলে।

Žį.

পবিত্র প্রেণ্য।

मिहे खरमात, वाह्कनिकात,

का गोमवाकः (त. कि निया**ग्रतः**।

মাইলা **ভথা**য়, ক**ভে সম্**দায়,

व्यागामा स्मर्के, निश्म-कथा।

শুনি বিচারক, ল'য়ে বছ লোক.

আপ্নি দত্র, সাইলা তথা ৷

কাদিতে।ছ আমি- শস-অনুগামী,

क्रेशः, भाषन क्राम्यक श्वः।

प्रियोश रम भन, रालाश पांचर

স**ন্ধি**গণ ভার, প**শ্চাতে** ধাণা।

করি মার মার, বিচারক ভারে

পাছে পাছে, ক্ষত গমনক'রে :

(शहलना गांधदव, आंत्र मिन्नदव,

दऋन कतिशा, व्यानिल धंदत ॥

मिर्म भारत, शिल कामा खात.

মাধব, ধরা না পড়িল আর। পরে ভূমি যেখা, প'ড়েছিলে দেখা,

अरहरा क'त्ना, खातक वाहा।

ना পেয়ে ভোষারে, সকলে বিচারে,

कश्राभारत भव, ভाষায়ে দিল। এ कथा खंदरन, आमात्र जन्मरन,

नकल अस्ति, ब्हेग्राष्ट्रिता।

ভ্যাজি নিজ শোক, মোরে বিচারক, যতন করিয়া, পিডার সনে। शाश्रीहा शाषाहरे, शाला निक शाहि. সক্তে লইয়া, ডাকাতগণে!! शिया शिकाल्ट्य, शांशिलको इत्य. मिवा निमिकांति, जाशन मन । আহার নিজায়, ত্যজিলাম প্রায়, বাঁচিতে বাসনা, ছিলনা ক্ষণে 🛭 এই বিরম্ভার, লাগি পুনর্মার, व्यामात्र की दिल, (मिश्ल कांट्र কহিত সবাই, তব প্রাণ নাই বিরজা কহিত, "অবশ্য আছে"।। বিরজা কহিত, "বদ্যুপি মরিত, भव-धानमीन सहेदद किन। नश्र भामिन, भार नुवहिल, भारेल कथम, मगरा (हर्न १। लहा शांत्र महम, (शहल मञ्जाभीत. ० नद्र (इंडना, शारेहाहिल। वाँहाट कीवन, कृति शंनायन, গোপন স্থানেতে, আপ্রয় নিল।। कोविक त्राह, गुरश्क अतिह, (शत्म नयांडांत्र. चानित्व रह्या ।

প্রেরি দূতগণ, পোলে ক্ষরেষণ,
করিব গমন, থাকিবে যেথা।।"
বিরজার কথা, না করি অন্যথা,
হ'লে হ'তে পারে, ভাবনা করি ।
করি আজ কাল, গোল কত কাল,
স্থাই আশায়, জীবন ধরি।।
বক্ত অবেষণ, করিয়া যখন,

ক লোমা সন্ধান, আছ কি নাই। য'রেছ ভাবিয়া, মোরে বুঝাইয়া,

বিবাহ দেওয়াতে, চাহে স্থাই।! ভোমারে ভুলিব, অন্যেরে বরিব,

ইহা কি কথন করিতে পারি ? সবে একমত, বিষম বিপৎ,

গৃঙ্ থাকা দায়, ছইল ভারি।। গোপন করিয়া, ভবন ভ্যাজিয়া,

বিরজার সহ ভৈরবী হ'য়ে। ভুমি নানা দেশ, বিরজাই শেষ.

হেথা আনে, সংযুক্তি কলে দি দেবভার সেবা, সদা করে যেবা,

ভূমি এই ভাষ সকলো হয় । ভূমি এই ভাষ সকলের পান্ধ

चाजि द्विलाय, विकल नग्न ।:"

ও সব বাজী কহিলে সভী করিং ভনে গ্লুংখিত অভি, কহিলা, 'এও পেয়েছ ছখ, পেয়েছ ছখ প্রেছি ছখ প্রেছ ছখ প্রেছিল মোরে কি পাপে ক্রে, এত যে ছখ মোর কারণে,

ক্তানিয়া দুখ, ফাটিছে বুক, ফাটিছে বুক।। বিপদ এত ঘাহার জন্য, ভাচারি বিনা জাননা অন্য,

ৰতও গুণ, ভোমার আছে। বিশেষ আমি হ'য়েছি হ'ত, জেনেও মোর প্রণয়ে রক্ত.

এমন সভী, আর কে আছে, আর কে আছে ।৷ ভেমন দায়ে পেয়েছি প্রাণ, ভোমারি পুন্যে হেতু কি অণ্ন ?

স্থানিও ধন্য ভোমারি ভরে, ভোমারি ভরে। যাহার সৃষ্টি এমন রত্ন,

দেই দে করে এড অবত্ন,

ছুঝিতে নারি, কেন যে করে, কেন যে করে।। পেরেছি প্রাণ পেরেছ খাণ,

वित्रदर छेट्र निर्णाक स्थानः । देशे अलिया क्लारिन हिल, क्लारल हिल ?

ভূগিবে দণ্ড, আপন পাপে, আপন পাপে।। এখন বল সে বিবরণ, মাধব-চক্তে হ'য়ে মোচন

কেমন করে, কোথায় ছিলে, কোথায় ছিলে ।
আমার দশা কি হলো পরে,
বৈচেছি কিয়া গিয়াছি ম'রে,

কিরিয়া ভূত্ব, কেন না নিলে,কেন না নিলে ?।"

একথা শুনি শরৎ কয়,

বধন যেই ঘটনা হয়,

নকল কথা বিশেষ ক'রে, বিশেষ ক'রে । শে সৰ বার্তা শুনিহ্বা ধুনী,

অবাক হয় আশ্চর্য্য গণি, শিহরে উঠে ষ্টুনা স্মু'রে, ষ্টুনা স্ম'রে।।

সপ্তম সর্গ।

হলো কথার কথার, রজনী প্রভাতপ্রায় কহিলা শরৎ, যদি হয় মভ, লয়ে আদি শিবিকায়। কাদীমবাজার, বিচারকাগার, সত্তর যাব তথায়।

ভথার ছদিন রব, ইতিহাস সব কব, গোলাটে যাইয়া, বিবাহ করিয়া পরে স্থী হবে হব। আমার ভবনে, বাব শুভক্ষণে, সাজিয়া মুশল মবঁ।

ন্ত্ৰমা সন্মতি দিলা, বাহক ডাকি আনিলা, স্বমা দোলায়, পাছে বিরজায়, স্থিনী করি, চলিলা। দিবা প্রকাশিল, প্রহর বাজিল, প গ্রামান্তরে উত্তরিলা। বিশ্রাম আশে তথার, চাহিরা কিরি বাসার, দেখিলা মন্দির, সেই বিদেশির, বিদেশী চিনিয়া তাঁর। চমকি উঠিয়া, নিকটে আসিয়া, আদর বহু জানায়।

সন্তোষে কথার ছলে, ব'দ পাক নাহি-বলে,
শরতের আশা, ভারি গৃহে বাদা,
লইয়া রব সকলে।
সেত না বলিল, আপনি কহিল,
বাদনায় স্থকেশিলে।।

বিদেশী লক্ষিত হ'য়ে, বাসা দিল গৃহে ল'য়ে,
কিন্তু অনুচিত, হইল কুঠিত,
বেন. ঞ্ড়সড় ভয়ে ৷
হাত-ধন ধরে, সাধু দেখি ডরে,
বেমন চোর হাদয়ে !!

বিদেশির প্রণারিণী, অন্তঃপুরে ছিল। শুনিশীসন্ত্রীক কোন, অভিথি আইল।। দেখিতে কোতুক-পরা, বহিংকোঠে আসি মুন্না, একেবারে শরতের, সমুধ্রে পড়িল। ×

শরৎ ভাষারে দেখি, কহিলা "চপলে! একি বি ভোষার এখানে আসা, 'কৈমনে হইল ?।"

অপ্রতিত হ'রে রামা, কাটিয়া জিহ্বার !
আমতা আমতা করি, ফেলফেল চায় ॥
বিদেশী নিকটে ছিল,তাহারেও জিজ্ঞানিল,
দেও নিকওর হ'রে, মাথা চুলকায়!
শরং বুঝিল মনে, "সেই প্রেমে দুই জনে,
মজিয়া, দম্পতীভাবে, রমেছে হেখায়!!

বিদেশির প্রতি করি, বছ তিরক্ষার ৷
কহিলা "তোমার নহে, ভজ ব্যবহার ৷৷
পাঠালাম কুলজারে, পতি-গৃহে পাকিবারে,
তুমি কি না ধর্ম নাশ, করিলা ইহার ?"
বিদেশী ভয়েতে ত্রস্ত, ধরি শুরুতের হস্ত,
বলে "অপরাধ কমা, করহ আমার !!"

শরৎ কহিলা, "দোষ, ক্ষমিবার নয়। ক্ষমি যদি বেশি দোষ, চপলার হয়॥" জিজ্ঞাদিলা চপলায়, "বথার্থ বল আমায়, ভূমি কি স্বেক্টায় কুল, ভ্যজেছ নিশ্চর? অথবা বিদেশিদ্যে, মঞ্জিয়াছ প্রলোভ্যে, कुलै, १र्फा, याम, ७३ क'रत्रष्ट् दिनग्र ११"

নথে মাটি খোঁটে রামা, লজ্জার পড়িয়া।
ইহার উত্তর দিবে, কেম্ন করিয়া।?
আপোনননেতে রয়, শর্থ আবার কয়

'বল বল না বলিলে, দিবনা ছাডিয়া।' দেখি পীড়াপাড়া বড. শরং না ছাড দাছ. উত্তর করিল রামা, সরম খাইবা।।

'প্রায় কি হয় কভু, একের বতনে ? প্রথমেতে অনুরাগী, দেঁছে মনে মনে ॥ অনুরাগ হ'লে পারে, যতন ফিলন ভারে, সাধ অনুসারে যত, করে জুই জনে। ভূমিত আবর লও, বিবেচনা ক'রে লও, হ'তে পারে এবীন দোব, কাহার কেমনে ॥"

চপলার কথা গুনি, শরৎ বুঝিল।
"এখানে মুরব্বিপনা আর না সাজিল।
জ্ঞানিত চপলা সেই, আমারেও জানে এই,
আমারে নাপেয়ে শেষে, এ প্রেমে মজিল।
থিছা গওগোল আর, জেনে লই সমাচার,
কি প্রকারে ছুই জনে এখানে মিলিল।।"

হাসিয়া কহিলা, "ভাল. কহ বিনোদিনি! কাৰ্পায় কেমনে ভোমা, পাইলেন ইনি গা" নেথি শ্রভের হাস্য. প্রকাশ করিয়া আসে, "কহিল, জানত আমি পতি-বিরহিণী। কপালে জাছিল যাহা, কালেতে ঘটেছে ভাহা, সুধু আমি নহি এতে হাধা কলক্ষিনী!!

ভানিতে চাহিলেঁ কহি, তান সে বাপার।
তুমিত পাঠায়ে দিলে, খতর-আগার।
পাডেছি বিদেশি-প্রেমে তুমি বুরোছিলে জ্যেন পথে আসি মিলিলাম, ছুজনে আহার।
সেই হ'তে এই স্থলে, আছি যেন ছুগে জ্লে,
বন্ধুভাবে এই দোষ, ক্ষম্ম আমার'।।

সুষ্মা বসিয়া ছিলা, ষরের ভিতর।

এ সব রতান্ত করি, প্রবণ-গোচর ।
দেখিতে হ'লো বাসনা, কে বা বটে এ ললনা,
মুখ বাড়াইয়া দেখি, কহিলা সত্তর।
"একি বিচারকারাজে! তুমিই এ কায়ে ম'জে,
কলব্লিনী হ'লে? ছিছি একি ঘূণাকর।"

সুষমার কথা, শুনিরা প্রবিশে,
কৰিলা শরৎ, "ভুমি, চিনিলা কেমনে ।"
স্বমা উত্তর করে, "বিচারক স্বেহভরে,
কাসীমবাজারে মোরে, রাখিলা ভবনে!
দেখিয়াছি চপলায়, তথন ছিল ভ্রণার,
স্থীভাবে, হাসিত ধেনিত মোর সনে ।

তথন শুনেছি, এর বিবরণ।
বিবাহান্তে পতি-সঙ্গ, না পায় কখন।
ইচার শ্বভর-ধান, দেবীপুর নাম প্রাম,
চতুর পতির নাম, করেছি প্রবণ।
তুনি গোলে যে সময়ে, চপদা ছিল আলয়ে,
কাসীযবাজারে বাসা, নহে সে ভবন।

চিনেছিলে তুৰি, শুনি যার শ্বর ।
শ্বরে পিতৃতুলা হবে, ইহার সোদর ॥
ভিনি যুবজানি হ'য়ে, থাকেন আপনালয়ে,
চপলাও ভধায়, থাকিভ নিরস্তর ।"
এই বার্ত্তা শুনি কাণে, শ্বং আশ্চর্য্য মানে,
বিদেশির প্রতি ক্রোধ, বাড়ে অভঃপর ।

কহিলা, "বিদেশি। ভোষারি দোষেতে।

শ্বলা সরলা মগ্ন, এ পাথ-পক্ষেতে । তব পাপ-চেষ্টা ক্রমে, চপলা প'ড়েছে ক্রমে, নতুবা অবশা বেত, বামি-ভবনেতে। অভিশয় পাপী তুমি, লোকে অবিশাদ-ভূমি, আমিওত পর, রেখেছিরু সধ্যেতে।

ভাদের আকারে, অভাদে বাঢ়ার।
কুলজা, কুলনা, ভিন্ন করনা বিচার।।
হোকনা চপলা মন্দ, ত্যক্তিত কি লজ্জা-বন্ধ,
প্রানোভনে মুর্মনন, না হ'লে উহার ?।
জেনে শুনে পাপ কর, লোকধর্মে নাহি ডর,
হেন ব্যভিচার দোষ, নহে ক্ষ্মিব্রে"।।

বিদেশির প্রতি, এরপ প্রকারে।
তিরক্ষার করি, নিরখিলা চপ্পানারে।
ভাহারেও তিরক্ষার, করিতে বাসনা তাঁর,
মুধরা ভাবিয়া কিন্তু, তরিলা ভাহারে।
বধার নাহি মাদনা, তথার মুরবিবপনা,
খাটিবেনা জেনে গুনে, কে করিতে পারে গু

যদিও চপলা, মুখরা বিষয়। ভাজেছে দানীর বোগা, সরম সম্ভব।। পরিচয় বল্জ হ'লে হেঁটমাথা নাহি ডে'লে,
চেনা লোকে নোষী হ'লে, বড়ই সরম।
মুখে কথা নাহি ফোটে, পদ নথে মাটী খোঁটে,
বুকে সরমের ঢেঁকি, পড়ে দম্দম্।।

বিদেশির নিটো খেন, ভাকিল এখন :
ক'রে হ্রমার বচন প্রবণ ।।
না বুঝি করিয়া পাপ, পরিণামে পেয়ে ভাপ.
থেমন মনের উচাটন ।
ভেমনি হইয়া মন, অন্তরেভে চিন্তে ঘন,
ফেল ফেল নয়নে ঈক্ষণ ।।

তথবা যে পর্বর, ভাবি নিজ্যরে।

ত্রমে অনল লাগারে দক্ষ করে।
শেষে অম মুচে গোলে, নিজগৃহ টের পেলে,
থেলেভে যেমন ফেটে মরে।
বিদেশী ভেমনি ধারা, হ'লো ঠিক বোকা পারা,
চমংকার ভাবিয়া অস্তরে।

জ্ঞানাঞ্জনে হ'লে পরে নির্মূল নয়ন। বেন দেখায় নবীন পুরাতন।। মুব্যার সে কথন, নিহেশিয় জ্ঞানাঞ্জন । চপলায় দেখায় সুতন।
চপলারে দেখে কণে, কণে চিস্তে মনে মনে,
এই ভাবে গোল বহু কণ।!

বিদেশির হেন ভাব কেন বে হইল !
দেখি শরৎ বুঝিতে নাপারিল।।
'বিলয়ে নাহিক ফল, কাসী্মবাজানে চল."
বিদেশির প্রতি আজা দিল।
'বদি না যাইতে চাও, জোর করি লব' ভাক,
মুখে মুখে ভাকিয়া কহিল।।

"এদেশের শান্ধিরকা, যেই জন করে।
তৃমি লয়েছ তাঁহার কন্যা হ'রে।।
তিনিই করি বিচার, যে শান্তি হয় ইহার,
আপনি দিবেন ভবোপারে।"
ইহা বলি সন্ধিগণে, বলে, "উঠ সর্বজ্ঞানে,
নাহি রব চলহ সভ্রে!!"

সরমেতে বিদেশির, বাক্য নাহি সরে।
কিন্তু না কহিলে নয় কিবা করে।
ছেটমাথা করি কয়, "শুন শুন মহাশয়।
শাব্দি হিছে হুইবেনা শাক্ষা

বাহার যেমন কর্মা, ভাষারে ভেমনি ধর্মা, শান্তি দেন মরম-ভিতরে।।

থাকিবেনা ছাপা, ভাই কহি প্রকাশিয়া।
তম স্থানতাবেতে মন দিয়া।
ঘটিয়াছে এ সকল, বছবিবাহের কল,
নিজ-মৃত্যু স্থাদে ডুবিয়া।
তব সন্থিনীর বাক্যে, চেতন পেলাম লক্ষ্যে,
ছিছি লাজে মরি গুমরিয়া।

ভনিলেন যে চতুর, চপলার স্থামী।
সেই পামর চতুর এই আমি।।
বিবাহ করিয়া পরে, না যাই শৃত্র-মরে.
বহু ভার্যা এতে নহি কামী।
যটনা ক্রেটেইগার, পতি থাকি হই জার,
শ্যাতি হ'লো দশ্দিক্-গামী।।"

শুনি বিদেশির বাণী।
শবং কহিলা, "তুমি চতুর তা জানি॥
চাতুরী করিয়া, চতুর হইরা,
কাকি দিবে অনুমানি ?
লম্পাটেরা অভি, উপাক্তিমতি,

ভাল হে ভাল বাখানি !!'

পে নিদেশা পুনঃ কছে !

"শুনিলে যে কথা, ভাহা সভা, নিপা।

মিখা ভাব কেন, কে বা আছে হেন
গ্রানি কহি, প্লানি সহে ?

মা কহিলে নয়, ভাই সমুদয়,

হুখা, ওপ্র নাহি বহে !!"

সংশ্ আকর্ম মানিল।
শবং, স্থকমা বিরজা, আর যে ছিল।।
আকাশ হইতে, পড়িল এমতে,
চপলাও চমকিল।
অধিক লক্ষায়, উপরে না চায়,
মাটিতে মাটি হইল।।

"সভা হ'লে হ'তে পারে।"
ইহা ভাবি শরং, প্রমাণ লইবারে॥
নানা প্রশ্ন করে, বিদেশী উত্তরে,
রুঝাইয়া দেয় ভারে।
কহিল বিদেশী, "বুঝিবে বিশেষি,
গোলে বিচারকাগারে॥

ভিনি চিনেন আমারে। ইহা হ'তে আর কি, প্রমাণ হ'তে পারে ৷?" ভনি এ কথায়, হ'য়ে সৃষ্টপ্রায়, শরৎ মনে বিচারে ৷ "कथा यन्त नश्च, विठात[ी] निक्ठश्चन হ'য়ে যাবে একেবারে ॥"

विष्मि कर्ह आवंद्र। ত্তন এক অনুরোধ আছমে আমার ॥ কর্হ স্থাকার, দ্ব স্থাচার-হবেনা কভু প্রচার। হরলে প্রচার, বহি লব্জা-ভার-দেশে থাকা হবে ভার।[।]

শরৎ করে স্থীকার। 'বদ্যুপি চতুর হও, হবেনা প্রচার 📭 मखुँके बहेशा, विद्वानी शहेशा, করেতে ধরিল, ভাঁর। পরে সবাকার, অভিথিমৎকার, 😬 করে করি সদাচার ॥

পরদিন প্রভাবেতে।

₹98 ...

কাসীমবাজারে সবে, চলে একজেতে।
আসি উত্তরিল, ভৃত্যে বার্তা দিল,
বিচারক সম্রমেতে।
আসি আতিবাড়ি, লামে বাড়ী,
সুখ লভি হানয়েতে।

পরৎ সহিত, দেখি আচম্বিত, च्यमा, इलला, विषणी। বিচারের পতি, চমকিত অতি, জিজাদে সহাদ বিশেষি !! "শর্ৎ ভোমার, বিপদ ব্যাপার, শুনিয়া ভোমার জীবনে। नर्म्ह कतिशा, पूर्धिक हरेशा, ভেবেচি জাতাতে হপনে॥ পরে সমাচার, পাইয়া ডোমার, দেখিতে বাসনা করিয়া। , ভাবিতেছি মনে, তব বিবরণে, আশ্ৰহ্য মানিব শুনিয়া । आभ्वर्ग (यमन, करब्रक्टि विखन. ভভোধিক দেখি ঘটনা। চপালা চতুর, হ্রমা বধুর, শাক্ষাৎ আকর্ষ্য যোটনা।

চপলা কেমনে, চতুরের লনে, মিলিল নাপাই ভাবিয়া। वल दल वल, (स कथा सकल, 📑 খুখিত হইব শুনিয়া॥ একথা ভাৰিয়া, ছাৰয়ে ভাৰিয়া, भातर विष्णात कतिल । "तिरमनी, छङ्त. भक्का र'ला मृत, शिव्छा भागिए इरेल ॥" শারি এই কথা, করিয়া অন্যথা, ধারতা চপলা ঘটিত ! বত ব্যাভিচার, নাক্রি প্রচার, অন্য ভাবে করে রচিত দ मत्र कि वाल, ভावि हिसामाल, চপলা চতুর ছুজনে। विश्विन नाशिन, नश्चन भूमिल. ভরে काँशि डेट स्पत्।।

বিচারকে সম্বোধন করিয়া। চপলা চতুরে চাহিয়া॥ কহিলা শ্রৎ, য**টে** য**থা**বৎ, প্রথম স্বাপ্ৎ, স্মরিয়া। ^{প্}দস্থাতে দেরিল. সমর বাধিল, মুক্তিভি হইল, মুনিয়া ॥"

বিচারক এই কথা শুনিরা।

নশনে অথর চাপিরা।।
কোধভারে কয়, "অরে ছুরাশায়, মাধ্য নিজয়,

इहेर्।।

্ মিলি দশজনে, পীড়িলি কেমনে, এমন স্ক্রজনে ধরিলা।"

্ত শরং কছিল, গোয়ে চেডনে।
দেখি কেছ নাছি সে ক্ষ্যে।
বিপদ দেখিয়া, ব্যকুল হটয়া। বেড়াই স্থাজিয়া।

সঘনে ;

मस्तान शंलोगा, शंला विविध्नः, शंहरह ललरा बुर्म्स्टर्माः

কণপরে পাইলাম দেখিতে।
পড়িয়া রয়েছে ভূমিতে।।
স্থমার প্রায়, চিহ্ন সমুদার, বুক ফেটে যায়,
ভাবিতে।

নিশ্য হইল, ডাকাতে মারিল, এ প্রাণ বাচিল, কাঁদিতে ॥ কাঁদি আর ছায় হায় করিয়া।
ভাষিছি বাতৃল হইলা।
বেখিয়া নয়নে, মেখলা বসনে, তুলিয়া যভনে,
লইয়া।

কাদে রাখি ভাই, জীবন যুড়াই, সোজাপথে ফাই, চলিয়া ুঃ

বিচারক কছে, "রুধা অমিলে :
রুধা এত ছখ গছিলে :
অমেতে ভুলিয়া, আমারে শুরিয়া, কেননা ফিরিয়া,'
আসিলে গ হারায়ে স্থানাম, ঘটিল তুর্বোগে, কপালের ভোগ,
ভুগিলে !'

শর্থ কছিল "কাল নাহ'লে।

অস্থ ভ্যজিবে কি ব'লে।

সেল'য়ে চলিল, বেগ না ফিরিল, আনিয়া ফেলিল,

যে স্থলে।

যে স্থলে ।

দে ফুল-কানন, দেখি ছফীমন, পাতিতু আসন, থিবলে !! অভি ছঃখি-বেশে মোরে দেখিয়া।
চপলা নিকটে অংসিয়া।
আভিধ্য কাবে, কাবল বতন, ভাতে নাবি মং
বুকিয়া।
চপলা চলিল, সন্ধ্যাও চইল, বিশ্ব আইবং

वादेश !!

জনকত অনুহর আমিল!

ছলে যোৱে তাকি লইল যা

কিছু বা বলিয়া, একগুহে গিয়া, আবদ্ধ করিয়া

রাখিল ।

দর্শ-মূর্তিমতা, এই গুণবানী, দেইলে মুক্তি,

হুইল ।

সনে সেসময়ে, মধ্য রজনী। বেগে পলাইরু অমনি।। চপলাও ধায়, পাছু নাহি চায়, জিল্ডাসিরু ভাঁয়,

ভখনি

ভূমি কোধা যাওঁ ৷ কেনবা পালাও, গৃহে ফিরি যাও,

এখনি

তাহে এই প্রত্যুত্তর, করিল :
"চপলা মরিতে চলিল ৷

কালি ভবর্গনে, সাকাৎ কারণে, ভ্রম্ভা সর্বজনে,ভাবিল ৷
ফহি পরিবাদ, বাঁচি নাহি সাধ, বাঁচিবার সাধ,
বিটিল ৷৷

মরিভাম কালি, জলে ডুবিয়া। ছিনু তব মুক্তি লাগিয়া।। ভাষার মোচন, হইল এখন, চলেছি মরণ, চাহিয়া।' ভাষা এই মড, বুৱাইলু কতা, নারুষে বিরভ্ত,

२डेश् ॥

কহিলাম মৃত্যু-ইচ্ছা ছাড়িয়া।
থানীর ভবনে বাইয়া।
থাক মনস্থে, এদোনা ও মুখে, মরিবে কি ছুখে,
ভাবিয়া।
এ কথা শুনিয়া, নিসাস ভাজিয়া, কহিল কাঁদিয়া।
কাঁদিয়া।

"আছে কি, না আছে, খামী কে জানে গ'; বেড়ায় যেখানে সেখানে ।। বিবাহ করিয়া, গেছে যে চলিয়া, না এল কিরিয়া,

७थाता

কোপা পাব ভারে, যাব কোপাকারে, ভাজিব এবাটে পরাধে ।।

এই শেষকথা, শুনি এবিংব।

ক্ষান্ত করি আশু মরণে।

অমি নানা দেশ, চতুরের শেষ, পাইবা উদ্দেশ।

ব্জনে।

69लाइ नियः, मिल्फिस श्हेश्वा, गाँह शालाँग्रिया.

जगाप !!

চপালার বিবরণ, আবণে।

যনের সন্দেহ ক্রেদনে।।

চপালার প্রতি, বিচারের পাতি, হয় ডুফ অভি.

এক্ষণে।

ভার গোল দূরে, হথ আনি স্কুরে, চপলা ুচভুতে. ভুজনে ।।

"কছিলাম মিথ্যা বিবরণ।

চপলা-চতুর-ভজু, করিয়া গোপন।।
জানিয়া ভঙ্কিয়া সব, করিলাম অপহৃত্ব,
পরিগামে ভাপ সব, বুঝি এ কারণ।

অথবা পরোপকারে, মিথ্যা বলা হ'তে পারে *
চিন্তে ইহা বারে বারে, শহতের মন ।৷

পূনরায় কথা আরেন্ডিল।

'অবিরভ উমণের, ইচ্ছা নির্মিল।।

এক স্থানে বসি শেষ, ধরিলাম যোগি-বেশ,

নিজ্ঞাভত্ম সমুদ্দেশ, সে বেশে করিল।

মাধব ধরিয়া হার আদে হ'রে গার পুত্রভিনি মাভা আসি পুত্র, প্রকাশ হইল।

বিচারক হান্ট হ'য়ে কয়।

"কি স্থী হ'লাম ভাহা বলিবার নয়।।
বিধি হ'য়ে অনুকুল, এত দিনে দিলে কুল,
ভোমার ছংথের মূল, এইবারে ক্ষয়।
ফিরিয়াছে ভভাদ্নী, হঠাৎ পাইলে ইফ,
আর না হইবে কন্ট, জানিবে নিশ্চয়।

শরং কহিল, "তার পর।
তব আবাহনে আদি, হইয়া সহর।। ই
সমা জীবিত নাই, বিশ্বাস আছে ইহাই,
পথেতে হঠাৎ পাই, এ জাগ-সোসঃ।,
সামীসহ চপলালে, সঙ্গে ক্রি একেবারে,

জাসিলাম ভোটবারে, তুদীয় গোচর।।"

স্ব্যার প্রতি দৃষ্টি করি। कहित्न विषातक, वलश् दिवित ॥ क्रिम क्रिम कि छेस्म्राम, धडिया रेकड्यी-तर्म ছিলে কটে সে বিদেশে, গৃহ পরিহরি श्रमा मोहरव हरः, भहर तम कथा कहः. यमन भ পরিচয়, ব'লেছে মুন্দরী।

বিচারক হ'রে আনন্দিত। নানাকখা বার্ত্তা কছে শরৎসহিত ।। जनूरताथ कति छात्र. इतिनं ताथि छथात्र, গোঘাটে করে বিদায়, ভূষি যথোচিত। स्वमा विद्रका महन, श्रीषाटि श्रीदिन द्राप्त. इ'ला मंत्राख्य थाक, श्रुलक श्रीत्रख्या

ञ्चमात्र माछा, शिखा, द्वसमा विराम । श्वविद्याम कार्त (मार्ट, विन नित्रामरन ।। া দার্মদাসী যন্ত্র, নয় বটেভত, শোকেতে নিয়ত, ভাপিত মনে ৷ ख्थालि जानग्न, एषि यत रम्न, भौक्त निलग्न,

वह वक्ताना

গিয়াছে হ্ৰমা ভার, স্থনগার দানে।
আকালে কি শোভা পাকে, চন্দ্রনাবিছনে।
ধনী এল ঘরে, গর আলো কারে পুন্গশোভাগরে,
সেই ভবনে।

মেণে থাকি ঢাকা, পুনঃ দিল নেখা, গগণের রাকা;
যেন গগণে॥

বহণা স্যম। আসি, করে সংখাধন।

মৃত-কাবে হ'লো বেন, স্থা-বরিষণ।
ভাবে সে প্রকার, মাতা পিতা তার, চমকি দোহার,
মন নয়ন।

নেখে দাড়াইয়া, স্যমা আসিয়া, শরতে লইয়া,
ভাকে স্থন।

• "আজি শ্রকি সুষ্যা, আমার এল ঘরে!

একা নয় হারান শরতে, সঙ্গে ক'রে!।

হিলনা অন্তরে, এত হবে পরে, সুখের উপরে,

পুখ নিগরে "।

এ কথা বলিধা উভয়ে মিলিয়া, কন্যাবে টানিয়া,
হুদয়ে ধরে॥

श्रीविनानी (यह श्राम, वह सम्बद्धाः

সেই জানে থেয়ে, রমাপজির জাগার।।
সকলের মন, আনন্দে নগন, ভাহাতে হথন.
ভানে আবার।
উভয়ের শাশ, সব ইভিহাল, অনিক উল্লাস,
হয় সধায়।

রমাণতি পেলে, শহতের প্রিচ্ছ।
কহিল জায়াভা হেন, ভাগো কালে হল।
লহার হইলা, স্থানি দেখিলা, কন্যা সম্প্রি,
সক্ষোধে রয়।
লবি**ভিন তু**খ, প্রবিভিন সুঞ্চ, হ'লো কি কেভিুক,

কবার নয় 🖟

কিছু দিন বাস করি, পশুর-সদ্নে ।

শরৎ ইছিলা যাই নিজ নিকেডনে ॥
শুণ্ডরে তুষিয়া, বিদায় লইয়া, সন্ত্রীক হইয়া,
আসি ভবনে ।
বধুর সহিত, হ'য়ে উপনীত, করে হরবিত,
মায়ের মনে ।

नमारा ।

শুদ্দিপত্র

गुर्क।	প॰ক্তি	यगु	36
ર	3.0	नद्र कट्लनत	नरक(लग्र
54	50	उद्मारम	डेबारम
34	Œ	शाह्य	भारत .
; ;	4	স্পার্টিক	শ্চাটি ক
50	\$2	শ্বস্ত	425
50	হ্ণ	(मांन'	<u>কোণা</u>
2,4	59	रझ	शका
5 5	3	अस्ति वर्ष छ ो ।	॰ मिक्टनीय
૭ 8	45	माग	यांच
9	ও	स्राध	বান-
85	55	কেপাপেনা	কেপ্ৰাপনা
& 8	>>	गिष्णी	সন্দিনী
8 F	্ভ	वार्यना	लावनः
Alr	૭	<u>সোনা</u>	সোণা :
26.	\$ 0	मिन्।	गिष्मी
SD	J 38	গিলি 😗	िंगनो
45	२ र	গিলি	গিন্ধী
98	> c	গাখারে	शाक्षां हत
5 2	36	আশা	আসা"
20	.>9	ं डोलन।	ट्यारममा '१
స్టేప		事事と	जगर
74	h	FIG	
46.		Tim	The fact

		60 Ma	
50 ¢ :-	. 29	পাছুরী	*গাছুড়ী
>00	, 50	ভাগুতে	ভান্ত
50 %	\$0	কুঠির	কুটির
>>9	50	कारन	कारन
<u> </u>	57	क्श रंतर	চণ্ডালের
2.84,	b -	कारम	क्र ट्रब
300	٠ .	শ্রুতি পণ্ডিরয	ঞাতি পাতি বয়
743	38	₹ 3	छे? €
>>>	2 %	বিরশ	বিবশ
₹0\$.	5 ·	পুর: ৪	श्रु ह
૨૦૦	8	म (१(स्ट्	*11 િ ષ્ટ
1577	36139	শ্ৰন্থিত	- ক্ৰিছ
258	>*	धूर्णत	ৰূ স র
૨ ૨ફ્રે	Þ	আমাৰ্	জারে!ম
228	v	कात्रवत	অ ক্তিমন
K	9	डॉमिल	ভাহিন
₹•>	•	इस्त	क्रम्
203	: >@	X4 1/4	• মূখ
૨ 80	. '8	W G	সাৰ '
280	19	খুঁতি	পুঁতি
280	८५१८८।	~ C111	**********
380	₹ 5 ₽	नांथा	ৰ্যথা
્ર રે 8 ∗ 🦓	२५	র ভিত্ব	সমিত
3.80	2.5	(मार्व म	ं ट्राक्टन
***	*	नादक-जाट	इ कार्ड-कार
260	34 %	******	भू रना